Please note 1: while transliterating into Devanagari:

short form of "e" (sounds like .. g ***e*** t) "ऎ" is used to reproduce Telugu. ex: ग् + ऎ = गॆ ..

g ***e*** t (गॆट्)

short form of "o" (sounds like .. d ***o*** nate) "ऒ" is used to reproduce Telugu. ex: ड् + ऒ = डॊ . .

d***o*** nate (डॊनेट्)

Of course usual long form of "E" "ए" (like g ***a*** te .. गेट्) and long form of "O" "ओ" (like v ***o*** te .. वोट्)

are already part of the Devanagari script.

Please note 2: The transliterated Telugu lyrics in Devanagari script should be read as Sanskrit lyrics to get the correct diction and words.

> **i.e., Unless the halaMtaM or virAm is specifically used in the transliterated Telugu lyrics into Devanagari script, one should not apply the halaMtaM or virAm while pronouncing the words in the lyrics unlike in Hindi.**

ॐ श्री गुरु चरणारविंदाभ्यां नमः
ॐ श्री महा गणपतये नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
हरिः ॐ

1)नाट - आदि ताळम्
विघ्न विनायकं वरदं वंदे गजाननं श्रीदम् ॥विघ्न॥
अघोरसुतं घोराघ परिहारं वरदं पालकम् ॥विघ्न॥
सिद्धिगण नायकं प्रभुं वरसिद्धि प्रदायकं वंदेहम्
क्लेश नाशकरं गं गणाधिपं शरणागत रक्षकं श्रीशम् ॥विघ्न॥
हरिदासजन हृद्सदनं असुरजन दमनं अमरेशम्
महेश्वर प्रसादं दिव्यं महित गुणधामं सततम् ॥विघ्न॥

2)नायकि - चापु ताळम्
सेतुबंधन बंधविमुक्त मुक्तिप्रदायक प्रणमाम्यहम् ॥सेतु॥
पोतमुनीवु भवजलधिकि, जलधिजनिलय सुलक्षणनिधिवे ॥सेतु॥
चेतुलार निन्नर्चिंतुरा हरिदासनुत सन्नुतांग
अतुलितराम नाममुनीवॆ नामिविनीवॊ स्वामिविनीवॆ ॥सेतु॥

3)बेगड - चापु ताळम्
ॐकार नादमे नादमु सुनादमनेरु श्रीहरिदासुलु ॥ॐकार॥
वल्लिसक्त दळाकृति वाग्जालमु व्याप्तमैनदि ॐकार नादम्
अनंतं अभिन्न जातीयं अव्ययं आ परब्रह्ममे ॥ॐकार॥
त्र्यक्षरमैन ब्रह्मं आद्यं अंदे सुप्रतिष्ठितमै वॆलुगु
निगमागम सारमे निरुपम नादं एकाक्षर प्रणव नादम् ॥ॐकार॥

4)आभेरि - आदि ताळम्
ॐकारनाद! नाद ब्रह्मयनि गानमु चेसेरु श्रीहरिदासुलु ॥ॐकार॥
नादोपासकुलु नाद तनुमनिशं शंकरं नमामि यनेरु ॥ॐकार॥
वाच्यमैन चिदानंद ब्रह्मकु वाचकमैन ॐकार परब्रह्मकु
अत्यंतिकमैन भेदमु पूज्यमंदुरु, पूजिंपरो पूतात्मने ॥ॐकार॥
अंताजगन्नाथमु हरियंदे पुट्टि हरिलो लीनमै
हरिचे वॆलुगु विकार जनितमैन विश्वमु विष्णुवैन ॥ॐकार॥

5)शुद्धसावेरि - आदि ताळम्
सर्वांतर्यामि सर्वेश्वर प्रणवाकार पाहिमाम् ॥सर्वांत॥
सर्वमु एकात्म नीवेरा शांताकार! यनि निरागुडनै
भाविंचिन जालुने! ओ ॐकार नादब्रह्म परब्रह्म ॥सर्वांत॥
पलिकॆ श्रुतुलु ॐ तत् ब्रह्म यनि, ब्रह्मांडमे ॐकारम्
अदिये ब्रह्म वायुवु आत्म सत्यमु, हे अनंत तेजोराशे ॥सर्वांत॥
ब्रह्म प्रतिपादितमैन ॐकारमु तत्परमार्थमु नीवेरा
अक्षोभ्य अक्षर हरिदास हृदयांतरंग रंग श्रीरंग ॥सर्वांत॥

6)हरिकांभोजि - चापु ताळम्
सद्गुरु वंद्य तव दासोहं तव पद दासोहम् ॥सद्गुरु॥
निर्मल स्फटिकाकार नित्यानंद श्रीसत्य नारायण ॥सद्गुरु॥

ए रसावेशमुतो सेविंचिन नेमि श्रीहरिदासुलु, आ रसमुनके
एकैक विषयमुतो विलसिल्लु सकल रसामृत मूर्तिवि नीवंदुरे ॥सद्गुरु॥

7)तिलक् मोधक् - रूपक ताळम्

सुज्ञान ज्योतिर्मय राजिल्लु राजीव नयन नयनाभिराम ॥सुज्ञान॥
अज्ञानांधकार विमूढुडनु ननु हरिदासुनि कडतेर्चु ॥सुज्ञान॥
समस्त लोक संचारुल सर्वेंद्रियाल रंजिंप जेयुनटने
नी प्राभव विभवमुलु, नित्य मंगळ दायकमु निखिलमुनकु ॥सुज्ञान॥

8)कांभोजि - आदि ताळम्

साकेत राम सीता मनोभिराम राजकुल सोम मां पाहि ॥साकेत॥
ऒक लॆक्कया नीदय कलिगिन कालजालमनु भयोत्पादमु दाट ॥साकेत॥
निरवधिकमुगा नी भक्ति रसामृत सिंधुवुलो सुनायासमुगा
जलचरमु वोलॆ जलकमुलाडु श्रीहरिचरण दासुडनु गदरा ॥साकेत॥

9)दर्बार् - रूपक ताळम्

राम जगदभिराम मंगळधाम त्रिगुणातीत तव शरणम् ॥राम॥
ई देहक्षेत्रान विलसिल्लु क्षेत्राभिराम कारुण्यधाम ॥राम॥
तॊरुवबडिन मुक्ति द्वारमु धर्म क्षेत्रमु ई नर जन्म
अनेरु हरिदासुलु, हरिनि अर्चिंचरे अंगमुललर ॥राम॥

10)देशि - आदि ताळम्

श्रीहरिदासुडनु नन्नु विडचि नडवकुरा नतजन परिपाल ॥श्री॥
कामादुल संचलनमु मिंचॆ, मोक्ष साधन यत्नमुचेयु ॥श्री॥
कामादुलु ईषणत्रय संबंधालु, काममुल अतकरिंच वलसिन
देहेंद्रिय मनोबुद्धुलु निर्वीर्यमुलगु नटने, नीदंड दंडलु लेनिदे ॥श्री॥

11)श्रीरागमु - चापु ताळम्

मनमारग अर्चिंचरे मा रामुनि महित गुणधामुनि ॥मन॥
श्रीराम जयराम शृंगार राम अनरारे हरिदासुलारा ॥मन॥
अहेतुक अन्याभिलाषान्वित अज्ञान कर्मलचे आवृतमुकानि
सद्भक्तिये साधन, पुरुषोत्तम प्राप्ति साधन, अत्यंतिकमनेरु ॥मन॥

12)साम - रूपक ताळम्

निश्चल भक्ति पथमे, हरिपद भक्ति ऒकटे सत्पथ मनेरु ॥निश्चल॥
भागवतुल परमागति हरि नरयरो हरिदासुलै ॥निश्चल॥
गति सद्गति परमार्थ सिद्धि निच्चु सिद्धगति श्रीहरि सेवये,
गति येमि अन्यथा, अन्य भावान्वित कर्मलंदु चित्तमेल ॥निश्चल॥

13)शिवरंजनि - आदि ताळम्

परिताप हरे हरे यदुनंदन श्रितचंदन सेतुबंधन ॥परिताप॥
कामादि तामस गुणालणगु नीदयचे, देहेंद्रिय
मनोबुद्धुलु ज्ञानेंद्रिय कर्मेंद्रियालु प्रकाशिंचु ॥परिताप॥
जन्म जन्माल बरगु वित्तेषणादि काममुलु आत्मकन्न इतरमैन
भोगेषणादि काममुल खंडिंचु शक्तिनिच्चु श्रीहरिदास परिपालक ॥परिताप॥

14)हिंदोळ - चापु ताळम्

पशुपति रंजन निरंजन निशाचर भंजन ॥पशु॥
नॆरवेदि काममुनकु, नीवलरुचुंड सर्वेंद्रिय स्थानमुललो,

परम पवित्रमुलु नीपद पंकजमुलु, ओ पुण्य श्रवण प्रख्यात ॥पशु॥
मोक्ष साधन आत्मानु संधानमगु हरिदास हृदयवास
ननु मोहाशाबद्धुनि चेयक मोक्ष मार्गमु चूपर परेश ॥पशु॥

15)कळयाणि - चापु ताळम्

अनेकत्वमुग अलरु अमेयात्म हरिदासार्चित ॥अनेक॥
अंत नीदनंत स्वरूपमु ऎव्वारिकि अंतुपट्टनि ॥अनेक॥
हृषीकमुलकु ईश्वरुडवु निनु सेविंचुटे सद्भक्ति,
लेवितर स्थूलसूक्ष्म साधनलु, नी चिंतने चालुरा ॥अनेक॥
शुद्धभक्ति यन उपाधुलनुंडि ऊडिपडुटे, सदा संलग्नमै
उंटिरा नीचरण सेवापथान, ओ सत्यस्वरूप, शुभलक्षण ॥अनेक॥

16)सिंहेंद्रमध्यमं - आदि ताळम्

पाप विमोचन परम पावन दासोहं तव पद दासोहम् ॥पाप॥
जीवुनि इंद्रियततिनि, आदिनुंडि अंतुलेनि अनिवार्य
पापमुलुकॊन्नि बंधिंचु कर्मवशान, हे कृपाळो ॥पाप॥
भवभंधालु भस्ममगुने भक्ति युन्न, बडबाग्नि पगिदि
फलोदय कालान, श्रीहरिदासुल सरियैन सद्गतिवि नीवेरा ॥पाप॥

17)हंसनादं - आदि ताळम्

हंसलकु अनुभवैक वेद्यमैन वेदवेद्य नमो नमः ॥हंस॥
अंत्यजुलु अनघुलगुट तथ्यमु, तरिंचेरु अनिशमु
स्मरण श्रवण संकीर्तनादि भक्तियोग साधन बलमुचे ॥हंस॥
नीवलन हरिंचुने फलोन्मुखमै जीवुल अप्रारब्ध पापालु
परम पावन भावन नादहरे हरिदास हृद्सदने ॥हंस॥

18)हरिकांभोजि - त्रिपुट ताळम्

चालुना वेयिकनुलु वेदोत्तम नी परतत्त्वमु परिकिंप ॥चालुना॥
नीयंदु उदयिंचिन अव्याज भक्ति प्रेमलु
संपत्करमु लटने, संपदीश ईश महेश ॥चालुना॥
क्षयमगुनट कूटमु बीजमु फलोन्मुखमु अप्रारब्धमुलनु
चतुर्विधमुलैन पापमुलु, ओ भवबंधहर हरिदास विनुत ॥चालुना॥

19)कल्याणवसंतं - आदि ताळम्

नी पदमुलने परिपरि अर्चिंचेरु हरिदासुलु ॥नी पद॥
अनन्यमगु ध्यान योगमुतो भक्ति प्रपत्तुलतो ॥नी पद॥
विषयभोग चिंतान्वितमैन विषयभोग प्रवृत्तिनि प्रतिघटिंचु
शक्तिकै कर्मवासना मयमगु हृदय ग्रंथिनि ग्रसिंचु शक्तिकै ॥नी पद॥

20)बिलहरि - आदि ताळम्

अणुवणुवुन अलरुननघ अनंतानंद अमेयात्म ॥अणुव॥
नी तत्त्वमे ई जगत्तुकंता अतीतमैन परतत्त्वमनेरु ॥अणुव॥
दीनुडनु धर्माधर्म विवेक शून्युडनु, निनु वेमारु वेडुकॊंटि
नीवेरा शरण्यमु श्रीहरिदासुडनुरा दासजनवरद ननु कावराद ॥अणुव॥

21)मोहनकल्याणि - चापु ताळम्

ऎन्नग नी चरण कमलसेव कन्नमिन्न एदिरा कमलेश ॥ऎन्नग॥
ऎन्निकैन हरिदास वरद नीपै निश्चल भक्ति भावमु कन्न ॥ऎन्नग॥

बहुमुखालगु लोकेषणादि भावालु तज्जनित कामादुलु
अनुभविंचुटे उत्तममनेरु, निन्नरयनि अज्ञान जनुलु ॥ऎन्नग॥

22)धन्यासि - रूपक ताळम्

सन्निधानमु प्रशांति निधानमैन श्रीहरिदास पॆन्निधि ॥सन्निधान॥
बाधिंचु भवबंधाल बापु भवहर परिताप हर ॥सन्निधान॥
दुःखिंप तगनिवारि गुरिंचि दुःखिंप तगनि विषयाल
खेदमु तुंडि कडतेर्चु ज्ञानिवि नीवटरा ओ प्रज्ञान प्रदीप ॥सन्निधान॥

23)शहन - चापु ताळम्

चिक्कुलपडु चंचल चित्तुनकु, चित्तोपरति दॊरकुना ॥चिक्कुल॥
ऎक्कडरा मनश्शांति ओ जगदीश, जितेंद्रियुडु काक ॥चिक्कुल॥
ऎन्नियुन्न नेमि मिन्नंटु कासुल मूटलु
उन्नताधिपत्यमु, इहान शत्रु शून्यमैन नेमि ॥चिक्कुल॥

24)सौराष्ट्र - आदि ताळम्

सरगुन कावरारा सर्व मंगळ स्वरूप सर्वेश ॥सरगु॥
सांद्रानंद विशेषात्म स्वरूप सुलभ भक्त सुलभ ॥सरगु॥
हरिदास हृन्निवास श्रीनिवास समकूडु सर्वमु नीकड
आर्युलकु, आश्चर्याद्भुत अणिमाद्यष्ट सिद्धुलु सिद्धमगुने ॥सरगु॥

25)बलहंस - त्रिपुट ताळम्

कूडुनु नीकड नित्य परमानंदमैन भगवद्सुखमु ॥कूडुनु॥
भक्तिरूप विषय सुखमे, नित्य मुक्तिरूप ब्रह्म सुखमु ॥कूडुनु॥
लभिंचु नटरा श्रीहरिदासुलकु चतुर्विध पुरुषार्थालु
मुक्त्यादि सिद्धुलु, चालदा नीयंदु निरंतर भक्ति कलिगिन ॥कूडुनु॥

26)बिंदुमालिनि - रूपक ताळम्

ऎंतनेर्चिन ऎंच ने नॆंतटि वाडनुरा ॥ऎंत॥
ऎंच नीदासुड श्रीहरिदासुडनु गदरा ॥ऎंत॥
अहम् त्वमसि तत्त्वमसि यनु ज्ञान बोध सेयु तत्त्ववेत्त,
तत्त्वमे देहादि विश्वमुनकु विलक्षणमने हे विधात ॥ऎंत॥
जनन मरणालु लेनि आत्मवु, अविनाशमैन अमेयात्मवु
नीयंदु चित्तमु निलिपि निनु सेविंचिनने नडचु ना ब्रतुकु ॥ऎंत॥

27)छायातरंगिणि - आदि ताळम्

प्रस्तुतिंचु निन्ने, देहादि प्रवृत्तिनि प्रतिघटिंचि ॥प्रस्तु॥
जीव भावमुनु निर्जिंचुटकै ई श्रीहरिदासुडु ॥प्रस्तु॥
मोक्ष साधनकै निर्देशिंपबडिन देहेंद्रिया लन्नियुनु
परमार्थान्नि पोनाडि काम भोगालकै चापल्य मंदिननु ॥प्रस्तु॥
सुखदुःखालु शीतोष्णादि द्वंद्वालु तीव्रमैन नेमि
मुक्तिनॊसगु मुकुंद नी तत्त्वमे परमावधि यनि ॥प्रस्तु॥

28)रीतिगौळ - आदि ताळम्

मंगळ धामुडवु नीवेरा मधुरानाथ श्रीहरिदास नाथ ॥मंगळ॥
सन्निधानमु नीवेरा सत्यं शिवं सुंदरमनु सद्गुणालकु
पुण्यतीर्थमुल कन्न परम पवित्रमैन परंधाम परमागति ॥मंगळ॥
सृष्टि स्थिति लय कारक आध्यात्मिक आधिभौतिक

आधिदैविक तापालनणचु अप्रमेय अतींद्रिय ॥मंगळ॥
साधनभक्ति भावभक्ति सांद्रानंद विशेषात्म श्रीहर्याकर्षण
गुणमुल चॆलगु, निनु चेरु मार्गमे, सन्मार्गमु महिनि ॥मंगळ॥

29)तोडि - त्रिपुट ताळम्

मरि वेरे दिक्कॆवरुरा राम मनोभिराम ॥मरि॥
माया बद्धुड नी दासुड श्रीहरिदासुड ॥मरि॥
साधितंबगु साधनभक्तिचे उपासिंतु नीतत्त्वमुनु उचितरीति
प्रस्तुतिंचॆदनिक पंचेंद्रियमुलु मनोबुद्धुल द्वारा ॥मरि॥
चित्कणुंडैन जीवुनंदु चॆलगु चिदानंद स्वरूप, जीवुडु
माया बद्धुडैनचो लुप्तप्रायमुग तुंदुवे, नीशरणु जॊच्चितिरा ॥मरि॥

30)आहिरिभैरवि - त्रिपुट ताळम्

परमपुरुष परंधाम परतत्त्व प्रकाशुडवे ॥परम॥
सडलुने भक्ति, सत् असत् आलोचनलु सडलिनंतने ॥परम॥
उनिकि लेदु उर्विकि अदिये असत् अनु ऒकालोचन
आत्मये सत्यमनु सदालोचन ना यंदुंचरा ॥परम॥
अविनाश अखिल व्याप्तंबैन आत्म तत्त्वंबे नीवंदुरे
शरीरादि जगत्तुकु विलक्षणंबगु विभो हरिदासविभो ॥परम॥

31)अठाण - आदि ताळम्

कुंद मुकुंद नी मुखारविंद चंदमु कंदुना ॥कुंद॥
श्रीद श्रीहरिदास प्रियंवद प्रशांति सदन सदानंद ॥कुंद॥
पंच भूतात्मक देहादि पदार्थातीत अतींद्रिय सर्वातीत
वंशीधर प्रभुवर परब्रह्म तत्त्वप्रकाश ब्रह्मानंद ॥कुंद॥
नित्यमु सत्यमु प्रमाणातीतमु, बाह्य पदार्थमुलचे
अंतमु गानि आत्म नरयुदु सद्भक्तितो, भक्ति रसानंद ॥कुंद॥

32)पंतुवराळि - चापु ताळम्

इंदिरा रमण वेंकट रमण रमा वल्लभ नमो नमः ॥इंदिरा॥
अगम्य गोचरमु आत्म, नाम रूपात्मक चराचर जगत्तुचेत,
अनूह्यमु इंद्रिय मनमुलकु, भक्ति विना तॆलिय बडनिदि ॥इंदिरा॥
तप्पवु जनन मरणालु जन्म मॆत्तिनंदुकु दुःखिंप पनिलेदिक
नीदया दाक्षिण्यालचे तॆलिसॆ सत्यमु श्रीहरिदासहृदयानंद ॥इंदिरा॥

33)खरहरप्रिय - चापु ताळम्

ऎंदु कंदुनुरा नीयंद चंदालु ओ चंदनांगद ॥ऎंदु॥
मिन्न यंदुरे तपस्समाधि योगमुल कन्न नीनाम रूप गुण
संकीर्तनमुलु, निन्नुद्देशिंचि निर्वहिंचु क्रियले भक्ति यंदुरु ॥ऎंदु॥
मोक्षसाधन ज्ञान वैराग्यालु चॆल्लॆ कृत त्रेता द्वापर युगाल,
दॊरकुनु नी सायुज्यमु हरिदासुलकु निलनिनु नुतिंचिनने ॥ऎंदु॥

34)वाचस्पति - आदि ताळम्

चालदा नीचॆलिमि गलिगिन, निरयमु लेनि प्रशांतिनिलय ॥चालदा॥
संभवमु नीदिव्य साक्षात्कारमु निर्मल भक्ति वलन ॥चालदा॥
दरि चेरनीयरु श्रीहरिदासुलु, इतरुल गुणदोष विचारण
स्वस्तभोग लालसत्वालनु, उत्तम धर्ममु नीपद भजने अनेरु ॥चालदा॥

35)नादनामक्रिय - चापु ताळम्

ननु ओदार्चरा म्रॊक्केद नीके, सद्गुणसांद्र रामचंद्र ॥ननु॥
निस्सार संसारमु, विषयवासना विह्वलुडु नी दासुनि ॥ननु॥
प्रापंचिक लौकिकधर्ममु त्यजिंचु शक्तिनि, मोहानुबद्ध
शरीरमु नश्वरमनि नरुनिकि अरयजेसिन हरिदासनुत ॥ननु॥

36)कांभोजि - चापु ताळम्

म्रॊक्केदरा मोक्ष दायक दयानिधिवि नीवे गदरा श्रीहरि ॥म्रॊक्केद॥
नीकै परितपिंचु नी दासुड श्रीहरि दासुड हे अक्षर श्रीकर ॥म्रॊक्केद॥
चेयु जनुल धन व्यामोहुलुग ई संसारमु, असारमु
दुःखभाजमु, अहर्निशलु बाधिंचु तापालणचु चक्कनय्य ॥म्रॊक्केद॥

37)फलरंजनि - चापु ताळम्

नीनाम रूपगुण प्रस्तुते ब्रह्मानंदमु श्रीहरिदासुनिकि ॥नीनाम॥
व्रज यंदुरे निनु ओ सत्त्व रजस्तमो गुणातीत परब्रह्म ॥नीनाम॥
सर्वव्यापक श्रीहरि, सदानंद स्वरूप परंज्योतिवै
जीवन्मुक्तुलकु सदा सुस्थिरमुग परगु परमागते सद्गते ॥नीनाम॥

38)रंजनि - चापु ताळम्

चालु चालु नी यनुग्रहमु चालुरा श्रीहरिदासार्चित ॥चालु॥
सच्चिदानंद परमानंद परम पावनचरित सुचरित ॥चालु॥
आदिनि, मुनुमुंदु अगपडवु भूतालु भूत भावालु,
नडुम कानवच्चु नेमो, इंतिये भूतालगति, वगचनेल ॥चालु॥

39)मणिरंगु - आदि ताळम्

कॊंडल कोनेटि पतिने कॊलिचेरु ऒद्दिकगा ॥कॊंडल॥
आत्मतत्त्वमु ग्राह्यमुकानि अद्भुत आश्चर्यमंद्रुकॊंदरु
मोहावेश बद्धुलै तिकमकयनेरु नीतत्त्वमु मरि कॊंदरु ॥कॊंडल॥
विंदुरु यथातथमुगा तारकमैन तत्त्वमनि,
तॆलियरुनिनु नीदय लेनिदे, श्रीहरिदासनुत ॥कॊंडल॥

40)भैरवि - आदि ताळम्

मारुति सेवित मनोभिराम श्रीराम मां पाहि ॥मारुति॥
गुण कर्मलंद्रु बुधुलु कामादुलंद्रु गुणप्रवृत्तिचे
ऒनर्चु कर्मलनु, कलुगुनट भवबंधालु गुणकर्मल वल्ल ॥मारुति॥
उपकरणालट देहेंद्रिय मनोबुद्धुलु मानवुलु चेयु
कर्मलकु, येमिसेतुर मुक्तिप्रदायक श्रीहरिदास वरप्रदायक ॥मारुति॥

41)सावेरि - चापु ताळम्

सरियैन मनोबुद्धुल प्रसादिंचरा श्रीहरिदासाश्रय ॥सरि॥
आत्म तत्त्वमे परमात्म तत्त्वमुगा तलचि निनुकोरि
कामादुल कादु कादनु साधन चेयु शक्तिकै ॥सरि॥
भवबंध मोहाल बापु साधन कर्म लाचरिंचु शक्तिकै,
निरंतर तपोध्यान निरतुड नगुटकै नाकु नी दासुनकु ॥सरि॥

42)वराळि - रूपक ताळम्

कॊलिचॆद निनु, आत्म तत्त्वोद्विग्न कैवल्य दृष्टितो ॥कॊलिचॆद॥
साधन कर्मनु तत्त्व दृष्टितो आचरिंच गल सद्बुद्धिचालु ॥कॊलिचॆद॥

जन्म फलमगु कर्मलनु कर्म फलमगु जन्मलनु कलिगिंचु
स्वर्गादि भोगैश्वर्याले तत्प्रेरित गुण कर्मलंद्रु श्रीहरिदासुलु ॥कॊलिचॆद॥
गुण कर्मलचे लग्नमै बुद्धिप्रवृत्तुलु सदा वर्तिंचुने,
परम तत्त्वमुनु बोधिंच रादा नी दासुनिकि ओ परमात्म ॥कॊलिचॆद॥

43)सिंधुभैरवि - रूपक ताळम्

गात्रमुन्न नीगुण गानमे चेयवलॆ राग रंजितमुग ॥गात्रमुन्न॥
वेदविहित कर्मलन्नियु त्रैगुण्य विषयालु, त्रिगुण रहितमु
द्वंद्व रहितमु अनंतमु अव्ययमैन आत्मे प्रत्यगात्म ॥गात्रमुन्न॥
लौकिक योग क्षेमालकु अतीतंबगु नीपद भजने
शरण्यं तरणोपायं अंदुरे हरिदास बुधतति ॥गात्रमुन्न॥

44)यदुकुलकांभोजि - चापु ताळम्

जय जय कृष्ण मुरारे नमामि परिताप हरे ॥जय॥
निंडा निंडिन नदी नदालु ऎन्नग ऎन्नि युन्न नेमि
अनंत आनंद रसांबुधि आत्म तत्त्वमु नीवेरा
कैवल्य रूप तत्त्व दृष्टिनि गुर्तिंचिन चालुननि चाटुने श्रुतुलु
ब्रह्म निष्ठतो मोक्ष साधनकै यत्निंचु हरिदासुल दासुडनु ॥जय॥

45)पूर्णचंद्रिक - रूपक ताळम्

चेरि कॊलुतुरु निन्ने परम पावन ॥चेरि॥
हरिये शरणमु श्रीहरिये शरणमनि ॥चेरि॥
हरिदास वरद अनादि निधन, उद्भविंचिन वंदुरे अंदरु
वर्णाश्रमालु नालुगु, नीमुख बाहूरु पादाल नुंडि ॥चेरि॥

46)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

ऎरुगरो एको नारायणुनि, निर्लक्ष्यान चरिम्चुटेल ॥ऎरुग॥
श्रीहरि पदांकितमगु क्रियले साधनभक्ति पराभक्ति ॥ऎरुग॥
भवहरुनि भजिंपक वर्णाश्रमाल जाड्यमुतो भ्रष्टुलय्येरु
परमेशुनि परतत्त्व प्रकाशमु अरयनिदे हरिदासुलवरु ॥ऎरुग॥

47)तिल्लांग् - आदि ताळम्

मनसु निलिपि निरतमु निन्ने कॊलुचुवाड ॥मनसु॥
कालादि दोषमुल दूरीकरिंचु दुरारिह ॥मनसु॥
परिभ्रमिंचु पतितुडनु जनन मरण रूपमनु
संसार चक्रमुन, ओ श्रीहरि नीवेरा निर्वाणमु ॥मनसु॥
शुद्धांतःकरणुलु सुजनुलगम्यमगु शुद्धतत्त्वमूर्ति,
त्रिविधालगु परितापाल नणचु हे हरिदास वरेण्युल शरण्य ॥मनसु॥

48)देवामृतवर्षिणि - आदि ताळम्

कालातीत अनंत, केवल ज्ञान स्वरूपमैन कैवल्यमु नीवे ॥काला॥
निर्हेतुकमु आदि मध्यांत रहितमगु श्रीहरिदासार्चित ॥काला॥
ब्रह्मानंद मंदुटयेगदा, नीयंदचंचल भक्तिचे निनु
पॊंदुटये गदा, नेकोरुनदि ईजन्मकु नित्यानंद स्वरूप ॥काला॥

49)वागधीश्वरि - रूपक ताळम्

स्वानुभवमुतो तॆलिसिकॊनरो सुप्रसन्न ज्योतिस्स्वरूपुनि ॥स्वानु॥
ब्रह्मानंद मंदुट परम तथ्यमु, कर्मल वलन कलुगु

जन्म संसार फलमुल विडनाडि भवबंध विमुक्ति नोंदरो ॥स्वानु॥
आत्म ज्ञानमु तत्त्वदृष्टि यगु अध्यात्म बुद्धियंदे
लग्नमै साधन कर्मलाचरिंचरो साधु जनुलै ॥स्वानु॥
मद मोह कलुषाल वीडरो, विनदगिन अर्थमंदु, ईवरकु
विनिन अर्थमंदु, अन्निटनरति चेंदिन हरिदासुल कनरो ॥स्वानु॥

50)कामवर्धिनि - चापु ताळम्

चिदानंदुनि चिंतिंचि तरिंच रादटे ओ मनसा ॥चिदा॥
साकारुडु श्रीकरुनि जगद्विलक्षणुडैन निराकारुनि ॥चिदा॥
विनिन चालु विशुद्धात्मुनि गुण संकीर्तन, तेलियदाये
स्थिरत्वमोंदु नेपुडो, श्रीहरिदासुनि चित्तमु चलनमुडिगि ॥चिदा॥

51)हिंदोळ - चापु ताळम्

मरि मरि विनवले श्रीहरिनाम सुनादमु ॥मरि॥
अव्ययमगु योगसिद्धि संप्राप्तिकै सर्वत्र ॥मरि॥
ओ विस्वात्म, विराट्स्वरुप विभवालंदु परितुष्टि चेंदुटकै
हरिदासुलु अंतर्गत काममुल कादनेरु, खंडितमुग ॥मरि॥

52)जगन्मोहिनि - चापु ताळम्

संभवमट निष्काम ज्ञान वैराग्यालु नीवलन ॥संभव॥
शुभाशुभालु कलिगि नंतने प्रीति द्वेषालु लेनि वानिकि,
स्वानुभवमगु सुनिस्चल चित्तमु, सुस्थित प्रज्ञलु ॥संभव॥
सर्वत्र व्याप्तमै युन्न, श्रोत्रादि इंद्रिय विषयचयमु
शब्दादि विषयाल निर्जिंचु, सुस्थित प्रज्ञानि, श्रीहरिदासुनकु ॥संभव॥

53)शुभपंतुवराळि - चापु ताळम्

नीयंदु चित्तमु संलग्नमाये ई हरिदासुनिकि ॥नीयंदु॥
आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक जनित कोप ताप भय
रोग दुःखादुल दुरपिल्लनि चित्तमुन्न, संभवमगु सुस्थितप्रज्ञ ॥नीयंदु॥
स्रक्चंदन वनितादि सुख व्यामोहालकु उद्विग्न
चेतस्कुडनु कानट्टि सुस्थित प्रज्ञ संभवमगुने ॥नीयंदु॥

54)आंदोळिक - आदि ताळम्

हरिनाम स्मरण मंत्रं जन्मतारक मंत्रम् ॥हरि॥
कैवल्य मंत्रमनिशं भज श्रीहरि नाम मंत्रम् ॥हरि॥
आत्म ज्ञानमु परमात्म ज्ञानमुल तेलिय
विनुतिंचेरु विश्रुतान नीदासुलु निरतमु ॥हरि॥
विषयमुले आहारालु मनसेंद्रियालकु, विषयवासनल वीडिन
पराङ्मुखमैन इंद्रियतति, हरिदासुल अपेक्षलनणचु ॥हरि॥

55)सारंग - आदि ताळम्

इदे तपमु इदे तारक सेव ॥इदे॥
इदे भाग्यमु इदे वैभोगमु ॥इदे॥
अणिमादि सिद्धुलकै इंद्रियाल अणचि नंतने
चावदी विषय तृष्ण अनितेलिसि ईशुने अर्चिंचरे ॥इदे॥
साधन कर्माचरण पूर्वक इंद्रिय निग्रहमुन्न
काम संकल्पमु क्षणमुलो क्षतमगुननि कनरे ॥इदे॥

आत्म तत्त्वमुनु कोररे कैवल्य दृष्टितो
हरिदासार्चितुनि अनिशमु आराधिंचरे ॥इदे॥

56)आभोगि - रूपक ताळम्

ऎंतटि सुखमैन दॊरकु ईनर जन्मकु ॥ऎंतटि॥
वॆन्नुनि सन्निधि कोररे श्रीहरिदासुलै ॥ऎंतटि॥
पंडितुल आराध्युडैन नेमि सद्बुद्धि कलगालि
सारसाक्षुनि सन्निधि चेर साधन चेयरे गट्टिगा ॥ऎंतटि॥
प्रबल बलवंत इंद्रिय बलगमु बंधिंचु बुद्धिनि,
प्रभविष्णुनंदु बुद्धि संलग्नमैनने सिद्धिंचु स्थितप्रज्ञ ॥ऎंतटि॥

57)नारायणगौळ - चापु ताळम्

परमात्मनु पूजिंचु वाडे पुण्य पुरुषुडु ॥पर॥
इंद्रियाल नॆल्लॆडल निग्रहिंचि, उल्लमलरग ॥पर॥
इंद्रियमुलॆल्ल नातनि वशमु इक सुस्थित मातनि
प्रज्ञ, श्रीहरिदास नुतुनि चिंतिंपरे चित्तचोरुनि चेररे ॥पर॥

58)धर्मवति - आदि ताळम्

वॆन्नुनि वेडरे वेविधाल वॆनु वॆंटबडि ॥वॆन्नुनि॥
काम प्रेरितमुलु इंद्रियततट, वीडुनंदुरु
तेजमुनु गुणकर्मल वलन, विशिदमुग ऎरुगरे ॥वॆन्नुनि॥
स्थूलसूक्ष्मफल रूपाललो सर्वेंद्रियालु काम्य रूपालैय्यू
श्रीहरिदासुनि स्ववशमगु, विनिर्मल विनिश्चल भक्तितो विविधगतुल ॥वॆन्नुनि॥

59)नळिनकांति - जंपॆ ताळम्

वेंकट पतिनि पतित पावनुनि पॊगडरो पॊंदिकगा ॥वेंकट॥
इंद्रियाल प्रवृत्ति कलिगियू स्थूल सूक्ष्म फल रूपाललो,
आत्म तत्त्वमॆरिंगि, आचरिंचरे अनिशमु साधन कर्मल ॥वेंकट॥
आत्म स्वरूपमु परमात्म स्वरूपमु पॊंदुटे परमागति
राग रहितुलै राज ललामुनि कोरि कॊलुवरो श्रीहरिदासुलै ॥वेंकट॥

60)कानड - आदि ताळम्

अज्ञानुड अवगतमु चेयरा अत्युत्तम ज्ञानमुनु ॥अज्ञानुड॥
गति नीवेरा ईजगति सद्गतिवैन सत्यज्ञानानंद सदानंद
बाह्य प्रपंचानिकि बाहिरमुगमनु मनो स्थैर्यमीयरा ॥अज्ञानुड॥
स्थितप्रज्ञनु पॊंद, स्थितप्रशांति रूपमगु सद्ब्रह्मभावमु
निरवधिक सुखमैन नीदरि चेरनीयरा नीदासुड श्रीहरिदासुड ॥अज्ञानुड॥

61)नागगांधारि - जंपॆ ताळम्

कॊलुवै युंडॆने कॊंडल रायडु ॥कॊलुवै॥
कॊलिचे वारिकि कोरिनंत दैवमी जगान ॥कॊलुवै॥
काष्ठमुलु वेरैन, अग्नि यॊकटॆ काष्ठमुलंदु ऒकेतीरु
वॆलुगु नटुल, आत्म यॊकटॆ प्राणुलकु पदिपदि रूपाल
अगुपिंचु अनघुडु अनादि पुरुषुडु हरिदास पोषकुडे ॥कॊलुवै॥

62)देवगांधारि - रूपक ताळम्

वेमुने तिनु ऒंटॆ ओलॆ ऒदिगेरु विमूढुलु ॥वेमुने॥
अति मधुरमैन चूत फलमु वीडि मंद मतिनि ॥वेमुने॥

विष्णुकथा श्रवणमु विना असार संसार विषयासक्तिनि
अनुरक्ति तगुने, अरयरो अलरु हरिदासेशुनि ॥वेमुने॥

63)सूर्यकांतं - चापु ताळम्

फलकाम रहितमैन परम धर्ममे नीपद भजनटने ॥फल॥
त्रिगुणातीतमु, शुद्धांतः करणुलगु सज्जनुलु तॆलियदगिन
सत्य प्रमाणमु प्रणवमैन परब्रह्म निरूपणमे नीयुनिकि ॥फल॥
शुभ प्रदायक श्रीहरि दासजन सेवित नीगुण प्रस्तुति
भागवत श्रुति श्रवणानंद करमु श्रेयस्करमु गादॆ ॥फल॥

64)बहुदारि - आदि ताळम्

घनुडैन वेंकटेशुडे ईशुडु श्रीशुडु ॥घनुडैन॥
अमृतरस परिपूर्णमु सुलक्षण सारमु
मूर्तित्रयमुग मनु मधुसूदनुडु ॥घनुडैन॥
पंडिन पंडुवंटिदि परम भागवतमु वेदमनु वृक्षमुनकु,
आलवालमु संसार रूपमगु तरु मूलमुनकु, निर्गुणुडु ॥घनुडैन॥
बॊंदि पॊरलिन कतन चेयवलॆ जगद्वल्लभुनि
भागवत सुधारस पानमु, श्रीहरिदासुलै ॥घनुडैन॥

65)अठाण - आदि ताळम्

हरि यंतरमु नरय तरमा ॥हरि॥
पाप मतिनि परगु पापात्मुलकु ॥हरि॥
संसारार्णव प्रेरित घोरपाप गुणकर्म लॊनरिंचु
जीवुलकु आत्म तत्त्वमुनु परतत्त्व दृष्टिनि प्रसादिंचु ॥हरि॥
गुणकर्मल नुंडि विमुक्ति चेयु अनवरत सद्बुद्धिनि
साधनकर्म ज्ञानमुनु श्रीहरिदासुलकु प्रसादिंचु ॥हरि॥

66)सौराष्ट्र - आदि ताळम्

इह परमॊसगु ईशुडु श्रीवेंकटेशुडु ॥इह॥
हरिदासुडु कॊलुचु दैवमीतडे देवदेवुडु ॥इह॥
नित्यानित्य वस्तुविवेकमु इहामित्र फलभोग विरागमु
शम दमादि षट्क संपत्ति मुमुक्षुत्वमुले
साधन चतुष्टयालनि सरिग तॆलुपु सद्गुरुडे ॥इह॥

67)कानड - आदि ताळम्

निरतमु नेनॆर नम्मिन नारायणुडु ॥निरत॥
कर्मानुष्ठान साधन ज्ञान साधनलु चेयु कालान, काममुनकु
जगद्भावमुनकु चोटु लेदनु आत्म तत्त्वमुनु चाटु गुरुवे ॥निरत॥
अनवरतमु हरिदासुल निलकडकु नॆलवैन निर्मल तत्त्वज्ञुडे,
सर्वात्म विचारण साधन कर्माचरण बुद्धुल कलिगिंचु गुरुवे ॥निरत॥

68)कन्नडगौळ - आदि ताळम्

अंदरानि अंतरात्म अंदुरे अनंतश्री ॥अंद॥
अंदरिनि आदरिंचे अग्रज अंदरि अंतरात्म ॥अंद॥
हरिचरण दासुलकु, हरिकथा श्रोतलकु सर्वदासर्वत्र
पॊडचूपु परमेश्वर नीलीला विभूति योगमदिये ॥अंद॥

69)श्रीरागं - रूपक ताळम्

जीवुल तरिंप जेयु तारक राम तारण नाम ॥जीवुल॥
जनन मरण रूप संसार चक्रमुन परिभ्रमिंचु ॥जीवुल॥
शांतुलु दांतुलु वेदांतुलु विविध गतुल सततमु
चेंत चेरु सच्चिदानंद श्रीहरिदास हृदयानंद ॥जीवुल॥

70)आभेरि - आदि ताळम्

वेदांतालु पलिकेटि वेदार्थमु नीवेरा हे श्रीहरे ॥वेदां॥
आदिदेव अप्रमेय, नीपरमेरा नालुगु वेदालू
यज्ञ यागादि समस्त क्रियलू योगमुलू नीवे ॥वेदां॥
श्रीहरिदासुल समस्त ज्ञानमू तपस्समाधि
धर्म गतुलन्नी नीपरमेरा परमागते सद्गते ॥वेदां॥

71)बलहंस - आदि ताळम्

श्रीभद्रगिरि वासुने कॊलुवरे वासिग चित्तशुद्धिकै ॥वर॥
तेटतॆल्लमुग तॆलियरे श्रीकरुनि श्रीहरिदास वरदुने ॥वर॥
उंडगलरे ऊरकये क्षणमैन कर्मलु चेयकुंड
प्रकृति गुणालकु परवशमगुट सत्यमु, सुजनुलारा ॥वर॥
कर्म शून्यत कलुगुना जनुलकु कर्मल नाचरिंपनि कतन,
कलुगबोदु कर्मसिद्धि, चित्तशुद्धिलेनि कर्मपरित्यागमु वलन ॥वर॥

72)पूर्णषड्जममु - त्रिपुट ताळम्

अरुदैन बंध मेदिरा राम नीपद सेवानुबंधमु कन्न ॥अरुदैन॥
निनु तलचनि अल्पुलु निन्नरयरु हे हरिदास विभो ॥अरुदैन॥
बुद्बुद प्रायुलु परम भागवत कथनु
पठिंचनि वारु पंडितुलैन नेमि, पामरुलु
पाषंडुलै परगेरु पतितुलै, तॊलियरो ॥अरुदैन॥

73)खरहरप्रिय - त्रिपुट ताळम्

अनंत आनंदरस स्वरूप हरिदासस्वामि दासोहं ॥अनंत॥
अशाश्वतमैन अन्न रसमुचे पुष्टि नॊंदिन शरीरुड नेनु ॥अनंत॥
उदयान पचनमैन अन्नमु सायंकालान दुर्वासन
पॊडचूपु, तरुगवा अट्टि यन्नमु वलन पॆरुगु देहालु ॥अनंत॥

74)देवगांधारि - रूपक ताळम्

वेंकट निवास वेदवेद्य नी पादमुले सदा गति सद्गति ॥वेंकट॥
वॆंटने नी पादमु लंटनि वारलकु भवमुलु वीडवे ॥वेंकट॥
अनन्य सच्चिदानंद दिव्य प्रकाशमु कलुगु, पूर्ण सिद्धुनकु
जन्ममंदु निनु ध्यानमु चेयुकतन, हे श्रीहरिदास देव ॥वेंकट॥

75)नायकि - आदि ताळम्

चित्तमलर हरिदासार्चितुनि मरि मरि मननमु चेयरे ॥चित्त॥
नित्य नैमित्तिक कर्मल ऎंत जेसिन नेमि सेविंचरे सदा श्रीशुनि ॥चित्त॥
मनसु निलिपि ज्ञानेंद्रिया लणचि कर्मेंद्रियाल ग्रसिंचि चेसिन
कर्म योगमु उत्तममनि नरुनकु प्रबोधिंचॆने प्रबुधुडु ॥चित्त॥

76)झंझूटि - आदि ताळम्

सरगुन सेविंपरे जगमेले जगदेक पतिनि ॥सरगुन॥
दूरमगु दुःखालु सदा ब्रह्मार्पणमनि चेयु कर्मल वलन,

फलापेक्षकै चेयु गुणकर्मलु चिक्कुलकु कारणालु, चित्तशुद्धिकै ॥सरगुन॥
ब्रह्मार्पण मनरे काम भोगफलाल, यज्ञानुष्ठान फलभोगाल,
हरि हरी यनरे, हरिदास नाथुनि नामजप यज्ञमु चेयरे ॥सरगुन॥

77)आनंदभैरवि - जंपॆ ताळम्

पूजिंचेनु नी पदमुलने इंद्रियाललर ॥पूजिंचेनु॥
संक्रमिंचु साधन कर्माचरण वलन,
परम तत्त्वमदिये परब्रह्म तत्त्वमनुचु ॥पूजिंचेनु॥
वेदादुलु ध्वनिंचु कामभोग रहित कर्मकांडये
परतत्त्व मनेरु, परिपरि श्रीहरिदासुड नंटिने नेनु ॥पूजिंचेनु॥

78)बिलहरि - चापु ताळम्

नीचरण कमलमुल कॊमरुग कॊलिचेनुरा ॥नी॥
अनंत अद्वितीय, अरय तरमा नी लीललु नी मायलु
अनन्य विक्रमोपेत, विश्वमु विष्णुवु नीवेरा ओ विश्वंभर ॥नी॥
नी अनुग्रहमुकै अर्चिंचेरु हरिदासुलु सदा
नीकन्न वेरुदैवमु ऎवरुन्नारुरा नीरजनाभ ॥नी॥

79)नीलमणि - आदि ताळम्

सर्वजगदाधारुनि श्रीहरिदास संसेवितुनि संस्तुतिंचरो ॥सर्व॥
भाव रसालंकार भाषणान्वित स्वररागयुत सत्संगीतमुचे ॥सर्व॥
सर्वात्मक सनातन, सरिग गणिंच तरमा नी स्वरूप संपदलु
अगम्य गोचरालु अमंदानंद दायकालु आत्म ज्ञानुलकैन ॥सर्व॥

80)मध्यमावति - आदि ताळम्

कावलसिन देमिरा कारुण्यराम नीवंडनुंड ॥काव॥
भद्रगिरिपै भद्रमुगनुन्न भव्यस्वरूप ॥काव॥
आत्मतत्त्वमुनु कोरनि गुण कर्मलवलन
तगुलुनु बंधालु अनुबंधालु, तत्त्वदृष्टितो
साधन कर्म नाचरिंचु नीदासुनिकि श्रीहरिदासुनिकि ॥काव॥
कामातुरतनु वीडि आत्म तत्त्वार्थ साधन कर्मनु
परतत्त्व दृष्टितो निर्वहिंचु सामर्थ्यमॊसगु
शुभकर श्रीकर श्रीवरद राजगोपाल गोपरिपाल ॥काव॥

81)आंदोळिक - चापु ताळम्

संभवमगुनट सद्भक्तियुत सुज्ञानमु नी दासुनिकि ॥संभव॥
औषधं परं अंदुरे निनु श्रीकर सर्व रोग निवारक
समस्त कर्मलु नीकॊरके ब्रह्मार्पणमनि भजिंतुने
श्रीहरिदासुडनु निरतमु नेजेयु सुगुण कीर्तनचे ॥संभव॥

82)मुखारि - आदि ताळम्

माया मर्ममुलु तॆलियनि नीदासुड श्रीहरिदासुड ॥माया॥
ममत बंधनयुत चिंतलु समसिनंतने रम्मनेवुगा ॥माया॥
कुलौन्नत्यमुन्न कलिमिकलिगिन, चदुवुलुन्न अन्नमिन्नु
कानरुजीवुलु नीसहज गुणसंपदल, नीसमान मॆवरुरा ॥माया॥

83)विजयश्री - आदि ताळम्

अद्वितीयरूप, अलरु अनंतश्री अव्यय ॥अद्वितीय॥

प्रकृति भर्त त्रिविक्रम त्रिगुणात्मक मायातीत ॥अद्वितीय॥
दृश्य व्यामोहालु लेनि निर्विकार निरंजन
विबुधुडवनि नीपदमुलु पट्टु हरिदासुडने ॥अद्वितीय॥
84)कांभोजि - चापु ताळम्
चॆडरु चॆडरॆन्नटिकि नी दासुलु हरिदासुलु ॥चॆडरु॥
दयामय महनीय निनुगॊलुचु भक्तुलॆन्नटिकि ॥चॆडरु॥
प्रकृतिव्यापक प्रकृति नियामक श्रीहरि सर्वव्यापक
नादशरीर निरतमु निन्नेभजिंचु परम भागवतुलु ॥चॆडरु॥
85)रीतिगौळ - चापु ताळम्
मुक्तिप्रदायक मुक्तिनियामक मुम्माटिकि दैवम ॥मुक्ति॥
अनंत कल्याण गुणधाम परंधाम श्रीहरिदासात्म ॥मुक्ति॥
परमपवित्र परमनिधान परमात्म नीतत्त्व ज्ञानमंदे
जिज्ञासुलै चरिंचेरु नित्यमु सेविंचु सुरनर वानरुलु ॥मुक्ति॥
86)शहन - आदि ताळम्
राम हरे कृष्ण हरे मुकुंद मुरारे अनरे अनयमु ॥राम॥
आनंदमु महदानंदमु ब्रह्मानंदमु आत्मयंदे
सततमु संलग्नमै संतुष्टि चॆंदुटये एकैक कर्ममनेरु ॥राम॥
आत्मविदुडु आचरिंचेटि फलापेक्ष रहित निष्काम कर्ममे
कैवल्य प्रदमनि तथ्यमुग तॆलियरो श्रीहरिदास जनुलारा ॥राम॥
87)ज्योतिस्स्वरूपिणि - चापु ताळम्
आत्मशांति नॊसगु शांताकार श्रीहरिदासार्चित ॥आत्म॥
ब्रह्मादुलु ब्रह्मानंद मंदेरु नीस्मरण मात्रान ॥आत्म॥
यज्ञ यागादि फलालु पुरुषार्थालु प्राप्तिंचु नीदयचे
ऒनगूडुने ऒद्दिकगा, अनन्य ज्ञात अव्यय अमेयात्म ॥आत्म॥
88)देशि - आदि ताळम्
रम्य चित्तालंकार निनुवर्णिंप ना तरमा ॥रम्य॥
चित्तमंदु निनुजूचु चिदानंदमु ऎंतटिदो ॥रम्य॥
चंचल मनो बुद्ध्यात्मल नीयंदे निलिपि दृढ चित्तमुतो
निरुपमान योगसाधन निरतुलैन भागवतुल भाग्यमॆंतो ॥रम्य॥
ब्रह्म निष्ठुलु सत्त्व गुण संशोभितुलु शांताकारुलु
परमयोगुल धाममे श्रीहरिदासुल सन्निधानमट ॥रम्य॥
89)अठाण - त्रिपुट ताळम्
अंतटिकि आदियु अनादिवि नीवेरा हरि ॥अंत॥
आद्यंतालु लेनि ओ अनंत आदरिंचरा ॥अंत॥
ओ समदर्शि अहंकार रहित अनघ हरिदासुल आदिदेव
देशकाल भेदमुचे कलुगदुगा नीयंदु विषमत्वमु ॥अंत॥
90)शंकराभरणं - आदि ताळम्
समस्त चेतनोद्धारक श्रीहरिवि नीवेरा ॥समस्त॥
अरुणुडॊकडे अनेक नेत्रालकु अनेक रूपालुगा
चॆलुवॊंदु चंदमुन सर्वत्रा वॆलुगु सर्वेश्वर ॥समस्त॥
जीवुलंदु अंतर्गतुडवै अनेक रूपाल अलरु

एको नारायण श्रीहरिदास वंद्य सदावंद्य ॥समस्त॥

91)भैरवि - आदि ताळम्

नी ध्यानमे योगमु सदागति यंदुरे ॥नी॥
नीवे सद्गति अंटिनिरा यदुनंदन श्रितचंदन ॥नी॥
पॊग निप्पुनु कप्पुनटुल गर्भस्थमैन शिशुवुनु
माय कप्पुनटुल काममुकप्पुनु आत्म ज्ञानमुनु,
धूळि धूसरित दर्पणमटुल, इदितॆलिसि नेचेयु ॥नी॥
अन्नि अनर्थाल आदि कारणमे अविद्य कामतृष्णलु,
ज्ञान निधानमु सन्निधानमगु श्रीहरिदास हृद्सदन ॥नी॥

92)रागवर्धिनि - आदि ताळम्

नी नाममे मुम्माटिकि ना जीवाधार मंटिने ॥नी॥
पदेपदे नीवे शरण्यं शरण्यमंटि श्रीहरिदासनुत ॥नी॥
कामतृष्ण तीरिनकलुगदु पूर्णत्वमनुनदि,
परितृप्ति यनुनदि लेदंतकन्न, चित्तोपरतिप्रद
प्रशांति निलयमु निरवधिक सुखधाममु नीवेगदरा ॥नी॥
वैरिवोलॆ विज्ञानमुनु आवरिंचि व्यामोह परिचेनु
मनो बुद्धेंद्रिय ग्राममु, ननु करुणिंचरा राम ॥नी॥

93)सिंधुकन्नड - चापु ताळम्

ज्ञानानंद मय महनीय मां पाहि ॥ज्ञाना॥
क्षराक्षर कार्य कारणमुल कंटॆ गॊप्पवट ।ज्ञाना॥
विविधनाम रूपालचे बद्धुडनय्यू नीदाज्ञनु
परिपालिंचु वाडनुरा श्रीहरि दसुड नंटिने ॥ज्ञाना॥

94)टक्क - आदि ताळम्

लेदिक ई शरीरमुचे साधिंप दगिन स्वार्थमेदियू ॥लेदिक॥
कालमुनकु वशीभूतुडनगु जीवुडनंटिने श्रीहरि ॥लेदिक॥
ममत बंधनयुत संसार भारमु
भरिंचु पामरुडनु श्रीहरिदासुड
नादघमणचु नतजन पालुडवंटिने ॥लेदिक॥

95)वसंतभैरवि - आदि ताळम्

आदिमध्यांत रहित, हरिदासुलकु आधारुडवे ॥आदि॥
अखिल भूतांतराल आत्मवै अलरु आदि देवुडवे ॥आदि॥
सर्ववस्तु स्वरूपुडवु सर्वेश्वरुडवु सर्वुलात्मलंदु
सर्वसाक्षिवै अलरु आकार विकाररहित विश्रुतात्मवंद्रु ॥आदि॥
धृवमगु तत्त्वमु ब्रह्ममु अनुभवैक वेद्यमट
परमयोगुलकु मर्ममॆन्नगरानि मेधाविवट
सर्वदा सच्चिदानंद परब्रह्मवंद्रु अंदरु ॥आदि॥

96)बिलहरि - आदि ताळम्

मनोभीष्टमीय नीकिंत कष्टमा ना यिष्टदैवम ॥मनो॥
नी तत्त्वमुनु ऎपुडॆंत मात्रान तलचिन, अपुडंत मात्रान
चूपर दृष्टिकि चूड सरिकॊत्तग अवतरिंचु अनेक मूर्ते ॥मनो॥
प्रस्फुटमु चेतुवे प्रभविष्णो नीविष्णु तत्त्वमु श्रीहरिदासुलकु

निनु गुर्तिंचुटे जनुल दृष्टियंदु नीविनून्न जन्ममटने ॥मनो॥
97)आभेरि - आदि ताळम्
देहात्म भावनतो पुट्टनि, पुट्टुक लेनि ब्रह्म तत्त्वमु नीवे ॥देहा॥
जीवुलंदरि वोलॆ अज्ञान कारणमुग अज्ञान स्वरूप शरीरमुतो
चॆलुवॊंदु नाजन्ममॊक जन्ममे, हरिहरी नीचिंतने चालुरा ॥देहा॥
भूतांतरात्म भूतभावालकु अतीतुडवैन स्वयंप्रभव श्रीहरि
सुमुख सुप्रसन्नवरद प्रमुखदेव श्रीवासुदेव श्रीहरिदास देव ॥देहा॥
98)शुद्धवसंतं - आदि ताळम्
वासुदेवुडु वनमालिये सर्वमनि तॆलियरो ॥वासु॥
आदि नुंडि हरिदासुल रक्षणकै प्रभविंचु प्रभुवे ॥वासु॥
प्रकृति नधिष्टिंचिन मायचे जीवुल जन्मलनु सततमु
पर्यवेक्षिंचुनु, प्रभविंचुनु पापुल परिमार्चु प्रभुवे ॥वासु॥
99)धन्यासि - आदि ताळम्
इंदुकलडंदु लेडनक सर्वत्र प्रत्यक्षिंचु परब्रह्मे ॥इंदु॥
इलनगुपिंचु आत्मस्वरूपमु मारकपोयिन नेमि ॥इंदु॥
जगत्तंतयू सर्व भूतात्मकुडगु श्रीमहा विष्णुविस्तारमे
जननमरणालु लेनि जगदेकपति श्रीहरिदासुल ईश्वरुडु ॥इंदु॥
100)साळगभैरवि - चापु ताळम्
नी परतत्त्वमु तॆलिसिन संगवर्जितुडु श्रीहरिदासुडॆ ॥नी॥
अनिशमु अनित्यमैन कार्यरूप जगत्तंता गोचरिंचुने नीलो
ओ भूत भव्य भवन्नाथ बृहद्रूपान वॆलुगु विराट्स्वरूप ॥नी॥
विश्यमय विराट्पुरुष मोक्षार्थिनि, नी सुविशाल स्वरूपान
स्थिरमुग मनस्संधानमु चेसिनीसेव चेयु नी दासुडने ॥नी॥
101)ललित - आदि ताळम्
नी तत्त्वाभिलाषतो निरतमु निन्नाराधिंचु वाडनुरा ॥नी॥
कैवल्यार्थिकि सिद्धिंचुनट कैवल्यमु नी रूपगुण प्रस्तुतिचे ॥नी॥
नी जगन्नाटकमे सृष्टि स्थिति लयादि प्रक्रियलु
युगयुगाल, ब्रह्मविष्णु महेश्वरुलनु
त्रिमूर्तुलुग, तेजरिल्लु त्रिविक्रम नामधारि ॥नी॥
सकल जीवांतर्गत ज्योतिवै अजरुद्रादुलकु नंतुपट्टनि
दुर्गममार्गान अलरुचुनू, हरिदास हृन्निवासुडवे ॥नी॥
102)केदारगौळ - आदि ताळम्
पूजिंचेनुरा पंकजाक्ष नीपद पंकजालने ॥पूजिंचेनु॥
अन्निरूपाल रंजिल्लेवु नीवु, परम हंसाश्रमाल
ऒदिगेवु, योगिजन पूजित पुरंदर पुरुसत्तम ॥पूजिंचेनु॥
परमोत्तम निरुपमान निरवधिकमु निरतमु नीवेगसद्गति,
स्वस्वरूपमैन सद्ब्रह्ममंदु अलरेटि हरिदास संसेवित ॥पूजिंचेनु॥
103)फलमंजरि - रूपक ताळम्
हरिदासार्चित ऒद्दिकगा निन्ने अर्चिंतुरा निन्नरय ॥हरि॥
नी चरणारविंद मकरंद माधुर्यमु ऎंत मधुरमो ॥हरि॥
ऎवडु तॆलियुनो नी मर्ममुनु, तॆलियु नॆवडु तेट तॆल्लमुगा

कर्ममुनु, तथ्यमु देहमु वीडि जन्म रहितुडगु नातडु ॥हरि॥

104)रीतिगौळ - चापु ताळम्

ममत बंधाल मरचि श्रीहरिदास नुतुनि विनुतिंचरे ॥ममत॥
ध्यानिंचरे सदा धराधरुनि मनयिंद्रियालु चेरिचि ॥ममत।
श्रीहरि यंदे चित्तमुन्न ज्ञान योगमुचे पूतात्मुलगुट तथ्यमु
सततमु संशुद्धुलै श्रीहरि स्वरूपमे युगयुगाल पोंदुदुरट ॥ममत॥

105)लतांगि - रूपक ताळम्

वेदालु पलिकेटि वेदपुरुष हरिदास पोषक ॥वेदालु॥
योचना राजीव लोचन ननु ब्रोव इंत वेदना ॥वेदालु॥
अनन्य अप्रमेय वरद वरभद्रगिरि धामुडवे
नी परमगु सकल कर्मलोनर्चु दासुड
मनोबुद्धुल नीयंदु नियमिंचुदु ॥वेदालु॥

106)शुद्धबंगाळ - रूपक ताळम्

कर्मबंध विमुक्तिप्रद श्रीहरिदासुल भवहर ॥कर्म॥
मानाभिमानालु वीडि विवेचनतो विरति चेंदि
कोप तापाल वीडि नी शरणु जोच्चिन नी दासुड
राग द्वेषाल मानि, माननि श्रद्धतो स्मरिंतुनु ॥कर्म॥

107)तोडि - आदि ताळम्

निनु तेलियनि मतमे कुमतुल मतमु ॥निनु॥
निनु तेलिसिन मतमे सुमतुल मतमु ॥निनु॥
राग द्वेषालनेडि विषयमुलु रेंडु
अंदुकु वशमै विवशुलैन वारंदरिकि ॥निनु॥
सम्मतमु श्रीहरिदासुलकु योगुलु तेलिपिन मतमु
अन्यथा अलरुचु अज्ञान तिमिरान चरिंचु त्रिम्मरुलकु ॥निनु॥

108)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

तेलियगरारे मोक्ष मार्गानिकि अवरोधालु ॥तेलिय॥
रजो गुणमुचे कलुगु काम क्रोध तृष्णले
कलुषालकु कारणालु दुःख हेतुवुलनि ॥तेलिय॥
सकल प्रवृत्तुलकु मूलमैन राग द्वेषाल सरगुन
मानि निश्चल ब्रह्मानंद मंदरे, हरिदासुलै ॥तेलि॥

109)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्

आश्रयिंचुट तगदु पूर्णत्वमु स्थिति लेनि कामाग्नि ॥आश्र॥
मनो बुद्धेंद्रियाले आश्रयमुलु काममुनकु
निग्रहिंचरे इंद्रिय मनो बुद्धुल, ज्ञान संपादनकै ॥आश्र॥
जयिंप नलविकानि काममे रूपांतरमुगा
उंडे अंतश्शत्रुवुलुगा शरीर धारुलंदु, ॥आश्र॥
सद्बुद्धि कंटे श्रेष्ठमु अंतरात्म, आ परमात्मने
आश्रयिंचि आत्म निग्रह मोंदरे श्रीहरिदासुलै ॥आश्र॥

110)रामप्रिय - त्रिपुट ताळम्

जनन मरणालु लेनि अमरुडवु गदरा ॥जनन॥
जीवुलंदरि ईशुडवु नीवेरा श्रीहरि ॥जनन॥

आत्म स्वरूपमु ऎन्नटिकी मारनिदैन नेमि नीवु सृजिंचिन
प्रकृति ननुसरिंचिन मायचे जनिंचु, जगद्पते जगन्मोहन ॥जनन॥
धर्ममु तरिगि अधर्ममु पॆरिगि नंतने स्वयमुगा
प्रभविंचु स्वयंभव श्रीहरिदासुल प्रभो जगद्प्रभो ॥जनन॥

111)मायामाळवगौळ - आदि ताळम्
अनंतमु अच्युतमैन योगमे योगविदाम् नेतयट ॥अनंत॥
सिरि विरिंचि शिवादुलकु अनिशमु आलवालमैन आदि दैवम ॥अनंत॥
श्रीहरिदास जनुलु सम्मोदिंचिन साधन कर्मानुष्ठात्मक
योगमेग सदाचारमु परब्रह्मानंद संधायकमु ॥अनंत॥

112)शिवशक्ति - चापु ताळम्
हरिदास वरदुनि वर पादपूज विना कलदे सदा गति सद्गति ॥हरि॥
सर्वदा सर्वोत्तममु साधन कर्मानुष्ठात्मक योगमु ॥हरि॥
पलुपलु विधाल वर्तिंचेरु पलुवुरु काम बुद्धितो
कामातुरतो विकृत कथलने विनेरु उत्सुकतो उर्विनि ॥हरि॥

113)सारंगतरंगिणि - आदि ताळम्
कर्म फलसिद्धि कोरुचु कॊलिचेरु कामितार्थुलु जगतिनि ॥कर्म॥
गुणकर्म भेदमुचे चातुर्वर्णाल रचिंचिन अकर्तवटने ॥कर्म॥
कर्मबंधालु वीडुना नीशरणुजॊच्चि निनुसदा सेविंचनिदे
गुण प्रवृत्तिनि जयिंपलेनि जडुडनुरा, सदासरिग चूडरा ॥कर्म॥
चेसिन गुणकर्मलु वर्णाश्रम धर्मकर्मलु निरर्थकमु लटने
साधन कर्माचरणचे श्रीहरिदास वंद्युनि तत्त्वमॆरुगरे ॥कर्म॥

114)शुद्धधन्यासि - त्रिपुट ताळम्
शुद्ध ज्ञानैकमूर्ते तव दासोहं तव पद दासोहम् ॥शुद्ध॥
निनु कॊलुचुटकेगा जन्ममॆत्तिनदि ई हरिदासुडु ॥शुद्ध॥
एदिरा चेयतगु कर्म, एदिरा कर्मशून्य नैष्कर्म्यस्थिति
तॆलुपरा परात्पर भवबंध विमोचकमैन साधन कर्ममेदो ॥शुद्ध॥

115)असावेरि - त्रिपुट ताळम्
निरतमु हरिदास जनानंद कारकुड वनेरुरा ॥निरतमु॥
कर्तृत्व भोक्तृत्वा लंटनि परम तत्त्वमु नीवेरा ॥निरतमु॥
लौकिक कर्मलन्नियु गुणकर्मलु निषिद्धमुलटे, कर्तॆवडु
कर्मेदि क्रियेदि, ई त्रिपुटिकि अन्वयमु लेनि हरि ॥निरतमु॥

116)केदारगौळ - आदि ताळम्
हरियनंतमु हरि गुणमुलनंतमु ॥हरि॥
अन्नि रूपुलु तन रूपामैन परब्रह्म परमात्मे
परम हंसाश्रम वासि योगिहृत्कमल वासिये ॥हरि।
अत्युत्तममू अनुपमानमगु प्रवर्तनचे परगु
ॐकारेशुडे सर्वेशुडे सदा श्रीहरिदासुलु सेविंचु ॥हरि॥

117)जयंतसेन - आदि ताळम्
नी चरण सेवचे गुर्तिंचेरु श्रीहरिदासुलु नी तत्त्वमुने ॥नी॥
परमाणुवुवो नीवु, विश्वमुन विस्तरिंचिन विभुडवो
परिच्छिन्नुडवो अपरिच्छिन्नुडवो अग्राह्युडवे ॥नी॥

साकारुडवो निराकारुडवो, सगुणात्मुडवो निर्गुणात्मुडवो
व्यर्थमैन तत्त्वान्वेषण चेसिनानिनु अरय लेरुरा ओ श्रीहरि ॥नी॥

118)शहन - रूपक ताळम्

अंदरिकी अंतरात्मग अलरु आदि नारायण ॥अंदरिकी॥
अंदरि वाडवे हरि अंदरानि अमरुडवंद्रु ॥अंदरिकी॥
चराचर प्रकृति कॅटे परुडवुरा परात्पर भवहर
सृष्टि स्थिति लयलु नी लीललट, त्रिमूर्तुलुग परगुचु ॥अंदरिकी॥
ऐव्वरिकी अंतुचिक्कनि श्रीहरि, नी तत्त्वमरय कोरु
श्रीहरिदासुड ननु सरिग करुणिंचरा करुणालवल ॥अंदरिकी॥

119)वसंत - चापु ताळम्

वल्लभुडवु नीवु भूत भविष्यद्वर्तमान व्यवहारालकु ॥वल्ल॥
काल कर्म स्वभावालकु लोनुगानि जितेंद्रिय सुरेंद्रवंद्य
तेलिय तरमा षड्गुणैश्वर्य संपन्न नी प्रदीप्त प्रभावालु ॥वल्ल॥
सर्वव्यापि श्रीहरिदास रंजक अजुनिकैना अरयतरमा नीसमग्रत
पूर्णमिदं पूर्णमदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते अनेरु आर्युलु ॥वल्ल॥

120)सारंग - चापु ताळम्

अंतटिकी अंतरात्म अतींद्रियुडे आहरि ॥अंतटिकी॥
कॊलिचिनने मोक्षमु, भवबंधतति विमुक्तमौने ॥अंतटिकी॥
जीवुलंदरि चेतनालनुन्न प्रज्ञानशीलि परमात्मे
बुद्धि व्यापराल नॆल्ल परिशीलिंचु विबुधुडातडे ॥अंतटिकी॥
देनिकि बद्धुडु काडट अन्निटिकी प्रभुवगु प्रभूतुदु
हरिदासुल आनंद निलयमु शुद्धज्ञान मूर्तियट ॥अंतटिकी॥

121)बेहाग् - आदि ताळम्

ओविष्णुदेव प्रशांत प्रसन्नवदन निन्ने भजिंतुरा ॥ओ॥
दर्शनमात्रान ज्ञानप्रबोध चेयु जगदादिजुडवु नीवेरा
श्रवणमात्रान सर्वपापाल परिहरिंचु परोक्ष ज्ञानप्रद ॥ओ॥
मननमात्रान पुण्यप्रवृद्धि चेयु प्रज्ञाननिधि निधिरव्यय
हरिदासार्चित ध्यानमात्रान सिद्धुलनिच्चु वरसिद्धिस्वरूप ॥ओ॥

122)साम - आदि ताळम्

अनंत वेदसंवेद्य अतींद्रिय त्वमेव शरणम् ॥अनंत॥
परापर प्रकृतिनंतयू व्यापिंचियुन्न
अशेषशयन श्रीहरि सर्वुलहृदय कुहराल
निरंकुशमुग विस्तरिंचियुन्न पन्नगशयन ॥अनंत॥
युगांतरमुन ऒंटिगा पलकडलि पन्नुग
पवळिंचु वटपत्रशायि श्रीविभावन श्रीहरिदासुल
मनःप्रवृत्तुल सद्गतिनडपु सद्गुणसांद्र ॥अनंत॥

123)आभेरि - चापु ताळम्

वर्णिंप अलवि कानिदिरा नी चरणकमल सौंदर्यमु ॥वर्णि॥
नी युरमुन नॆलकॊनि युन्ननेमि सॊंपुगा सिरि,
त्रिलोकसुंदरि, नी सॊगसु चूड मुग्धुरालगुने ॥वर्णि॥
अत्युत्तममैन दिव्यमंगळ संकाशमगु तनुद्युतिकनि

कनुलु रॆंडुचालक मूडुरूपाल मूर्तिगॊनॆ श्रीसति ॥वर्णिं॥
वॆलुगॊंदु वाम भागान भाग्य लक्ष्मिग,
दक्षिणान धरणिग, तेजस्विनि दुर्गग,
अलरु अष्टकळल लक्ष्मिकैन, कीर्तिंप तरमा ॥वर्णिं॥

124)बिलहरि - आदि ताळम्

कोरि कॊलुचुनु कमलोद्भवुडुनु नीचरण कमलमुलने ॥कोरि॥
नीरजनाभ नीवंटि दैवमु मरिलेडंटि निंगिनेल चूड ॥कोरि॥
पगलनक रेयनक ऎनिमिदि कनुलतो तनिवितीरग
कांचुनु चतुराननुडु नीरूप संपद्विभवाल ॥कोरि॥
श्रीहरिदास विभो भुवन मोहन नीभुवनैक रूपमरय
पूनुने पद्मजुडु अनेकावतारालु, असंतृप्ति पिपासतो ॥कोरि॥

125)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्

लॆक्किंप ऎक्कसमगु अजुनिकैना नी असमान गुणाल ॥लॆ॥
ज्ञानानंद ऐश्वर्योपेत जगदानंद कारक संपूर्णानंद ॥लॆ॥
अनंत वेदमुलचे अरयदगिन अनंतश्री श्रीश
अखिलांड सृष्टिकि कारणमैन त्रिशक्ति स्वरूप ॥लॆ॥
करुणांतरंग श्रीहरि दासांतरंग सारंग
तारागणमुल, धूळि धूसरमुल ऎन्नवच्चुनेमो ॥लॆ॥

126)वराळि - आदि ताळम्

कलदा मरियॊंडु, मोक्षमे अन्निटमिन्न ॥कल॥
निलुवनीडवट नीदासुलकु श्रीहरिदासुलकु ॥कल॥
संगमु समसि, चित्तमु निरतमु नीयंदे
संलग्नमु चेसिन मुक्तुडगुनु मनुजुडु ॥कल॥
केवलमु नीनाम स्मरण यज्ञमंदे स्थिरमुग
नॆलकॊन्न निष्काम कर्मसंयोगि नीवाडे गद ॥कल॥

127)यमुनाकल्याणि - आदि ताळम्

कारणजन्मु लंदरिकी कारण भूतुडवु नीवेगा ॥कारण॥
घनानघ नीचरण सौंदर्यमु ऎंतटि घनमो ॥कारण॥
जगद्विख्याति गॊन्न ज्ञानानंद, जगमंता
नी कुटुंबमु वसुधैक कुटुंब मंदुरे वरद ॥कारण॥
सत्यमैन नियामकुडवु जगत्तुकु, सत्य संकल्प
सत्य नामधारि श्रीहरिदास भक्तवत्सल भव तारक ॥कारण॥

128)तोडि - रूपक ताळम्

सर्व कार्यालकु प्रेरकुडवैन श्रीहरिदास वरद ॥सर्व॥
भक्ति पारवश्यमे नेकोरु बंधमु नीतोडि अनुबंधमु ॥सर्व॥
नीसन्निधि चेरुटकै सदा शुद्धांतः करणुडनै निरागुडनै
नीपद कमलमुल कॊलुचुवाड, संपूर्ण ज्ञानमु नीवेयनि ॥सर्व॥

129)देशि - त्रिपुट ताळम्

नीवे आत्मवै मुक्त स्वरूपमै अलरुदुवट श्रीहरि ॥नी॥
निर्मल तत्त्वरूप निरंजन निर्विकार निर्गुणब्रह्म ॥नी॥
श्रीहरिदास शरण्य नीगुण गानमे कर्णामृतमु

विबुधुल मुखतः भागवत श्रवणमु वीनुल विंदु ॥नी॥
130)आरभि - आदि ताळम्
हरिदासुड ना रागद्वेष क्लेशमुलु ऐपुडंत मगुनो ॥हरि॥
जननमरण रूपमगु संसार तापत्रय परितप्तमै
कलिमलमैन मनोबुद्धुले अनात्मयनु अविद्य,
प्रतीतमगु नीपद सेवचे ज्ञानमु, समसिपोवु अनात्म ॥हरि॥
131)हंसनादं - चापु ताळम्
निरंजन नीपदनीरज सेव संप्राप्तिंचुने ॥निरंजन॥
विषयचिंतल मानि मनसेंद्रियाल निग्रहिंचि
नीपद भजन सेयु वाडनुरा श्रीहरिदासुड नंटिने
सच्चिदानंद धामुडवनि नीदरि चेरितिनि नीरजनयन ॥निरंजन॥
132)कर्णरंजनि - आदि ताळम्
अल्पुडनुरा अनंत, नीपदसेवा भाग्यमेंतो ने चॆप्पजाल ॥अल्पुड॥
शरीरधारुड जीवुडनु नीस्वरूप मवगतमगुना नाकु ॥अल्पुड॥
स्वरूपतः सत्यमु कादु प्रतीतमगु नट्टिदॆल्ल ई जगतिनि,
कलदे वेरॊंडु नीवु तप्प, अप्रतीतमैन नी परतत्त्व मॆरुग ॥अल्पुड॥
नीलीललु अनूह्यमुलट सर्वदा सर्वरूपाल चॆलगु
नीमायतॆलिय तरमा! मायातीत हरिदासनुत ॥अल्पुड॥
133)शुद्धसीमंति - आदि ताळम्
दुःख मयमगु जगत्तुनुंडि कापाड रारा श्रीहरिदास सख ॥दुःख॥
दुःख दायकमगु नेनु नादि यनु दुर्मतिनि कलुगनीयकुरा ॥दुःख॥
इंद्रिय विषयमुल मरिगि माया बद्धुडनै सत्यमगु आत्म
तत्त्वमुनु तॆलियक पाट्लुपडु पामरुडनुरा, ओ परमात्म ॥दुःख॥
134)रेवति - आदि ताळम्
परमानंदमगु भागवत कथ मननासक्ते सद्गतनेरु ॥पर॥
ऎंत नेर्चिन एमि चेसिन नेमि ऊडुने ईति बाधलु ॥पर॥
सर्वमु मिथ्यैननु कर्मफल भोगालकिरवु क्षेत्रमगुटचे
परिपरि विधालगु भवबंधाल पालगु ई श्रीहरिदासुनिकि ॥पर॥
135)शहन - त्रिपुट ताळम्
नी ध्यानमेरा परमात्म, ना व्रतुकु तोडु ॥नी ध्यान॥
इंद्रिय विषयालंदु श्रद्धा तत्परत लणचु नटने
आत्म ज्ञानमु, सर्व भूतालंदु चॆलगु श्रीहरे ॥नी ध्यान॥
निष्काम कर्म योगमुचे परिज्ञान सिद्धि पॊंदिनने
कलुगुनु सद्गति नंदु अर्हत, प्रशांति निलय श्रीश ॥नी ध्यान॥
लेदी जगतिनि घनमैनदि आत्म ज्ञानमु कन्ननु
लेदंत कन्ना, ई हरिदासुनकिल पवित्रमैनदि ॥नी ध्यान॥
136)आंदोळिक - आदि ताळम्
अल्पायुष्कुलु निनु ध्यानिंचनि नराधमुलु ॥अल्पायु॥
वादुलाड नेल परिपरि ऐहिकामुष्कमुलकै,
दिनमु गडचुना, घनानघ निनु कोलुवनिदे ॥अल्पायु॥
आपन्नुलकु आप्तुडवु जगद्व्यवस्थनु चक्कग जूचु

चक्कनय्य चल्लनय्य नी नॆय्यमु कोरनि वारलु ॥अल्पायु॥
आनंदमदे हरिदास मनोहरुनि गुण संकीर्तन
परमानंद मदे यनि परिपरि विनुतिंचनि वारलु ॥अल्पायु॥

137)नादनामक्रिय - जंपॆ ताळम्

पुट्टुट गिट्टुट लेनि ऒंटि वाडॆट्टि वाडो ॥पुट्टुट॥
गट्टिग नम्मरे पट्टुदल गल गट्टि वानिनि
गुट्टुग नुन्नजगमेले जॆट्टि ऎट्टि वाडो ॥पुट्टुट॥
तट्टि तट्टि इंद्रिय ततिनि गट्टिग पट्टरे
चुट्टि चुट्टि हरिदास नुतुनि गट्टिग पट्टरे ॥पुट्टुट॥

138)अमीर्कल्यणि - चापु ताळम्

मेलु मेलु पलुपलु विधाल निनु विनुतिंचिनने ॥मेलु॥
सुखमुन आवेशपडनि क्लेशान द्वेषिंपनि
कर्म सन्न्यासिगा चॆलगुटकै कोरि कॊलिचिन ॥मेलु॥
राग द्वेष जनित द्वंद्व भावालु लेनि कर्म योगिग चॆलगु
मनो बुद्धुलकै पूजिंचेरु प्रियमारग श्रीहरिदासुलु ॥मेलु॥

139)मानवति - आदि ताळम्

ऊडुनु ममत बंधनयुत क्लेशमुलु ॥ऊडुनु॥
उत्तमुडवैन ऊर्जित नी यूडिगमु चेसिन ॥ऊडुनु॥
नेनु नादि अनु अहंकार मदमुले गद
विवेक शून्यमु, अपारमैन संसारांबुधिकि
चॆलियलि कट्टवगु श्रीहरि, सदागतिवि सद्गतिवे नीवु ॥ऊडुनु॥
संसार सागरमंता विस्तरिंचिन जल चरमुलु बंधुमित्र
दारा सुतुले गद, हरिदासुल तरिंप जेयु तारणुडवे ॥ऊडुनु॥

140)श्रीरागं - आदि ताळम्

भूसुर गोसुरादुल परिरक्षिंचेटि परात्पर ॥भूसुर॥
नी स्वरूपाले गद, ई जगतिनि सकल जीवुल शरीरमुलु,
नीवेगा अंदरि आत्मललो भासिल्लु सकल भुवनाधारुडवे ॥भूसुर॥
अन्नि बुद्धुलकु उपलक्षणमैन महाशय श्रीहरिदासाश्रय
नीमायलचे नीलोनि लोकाल प्रकाशिंप जेयु भूधर ॥भूसुर॥

141)केदार - त्रिपुट ताळम्

नीदैन विज्ञानान्नि अवगतमु चेसिकॊनलेनि अल्पुडने ॥नीदैन॥
कार्य कारण कर्तृत्वात्मकमु भूत ग्रामेंद्रिय
व्याहृतमगु ब्रह्म तत्त्वमु अवगत मगुना नाकु
कालादि गुणान्वितमैन हरिदासविनुत नी परतत्त्वमु ॥नीदैन॥

142)मोहनकल्याणि - रूपक ताळम्

नीतत्त्व प्रकाशमु अरय गोरॆद हरिदासार्चित ॥नीतत्त्व॥
काल चोदितमु अव्यक्तमु प्रकृति यनु त्रिविधमुलैन
नीमाय वलन प्रादुर्भविंचुनु, महत्वमनॊडि ॥नीतत्त्व॥
काल मायांश लिंग स्वरूपुलै महदादुलंदु
अभिमानमु गल देवाधिदेवु लंदरु नीजीव कळले गद ॥नीतत्त्व॥

143)कानड - आदि ताळम्

नी दासुल तापाल पोगोट्टु चल्लनय्य नल्लनय्य ॥नी दासुल॥
संसार चक्रमुन परिभ्रमिंचु आध्यात्मिकमु अधिभौतिकमु
अधिदैविकमुलनु तापत्रय रूपमुलगु दावानलमुन सॊक्कु ॥नी दासुल॥
दिक्कु दिवाणमु तॆलियक तिरुगु त्रिम्मरुल अज्ञान तमस्सुनु
पारद्रोलु भवहर हरिदास जनेश्वर सुज्ञान ज्योतिर्मय ॥नी दासुल॥

144)नळिनकांति - चापु ताळम्

नीपाद पंकेरुह ध्यानानंद सुस्वांतुलु दांतुलु ॥नीपाद॥
वेदांतु लॆंदरो महानुभावुलु अंदरिकी वंदनालु ॥नीपाद॥
दुरंतालैन दुरित पापाल पारद्रोलु, पावनगंगा झरिकिनि
आलवालमु अन्नि सौभाग्यालकु नीपाद पंकजमुले परमगति ॥नीपाद॥
देवदेव श्रीवासुदेव नीमुखान वॆलुवडिन वेदवाक्कुल द्वारा
वॆदिकिवॆदिकि, विबुधुडवगु निनुविनुतिंचु श्रीहरिदास जनुलु ॥नीपाद॥

145)द्विजावंति - चापु ताळम्

अंदरिकी पैवाडवु अंदरानि अव्यक्तुडवुरा नीवु ॥अंदरिकी॥
रागरहितुलै ज्ञान प्रकाशुलै चॆलगु धीमंतुलु
वेदांत शुद्धांत सिद्धांत रूपुलै तनरु देवदेवुलु ॥अंदरिकी॥
नित्य निर्मलमुलु परम पवित्रमुलैन हृदय कुहराल
स्थिरमुगा नुन्न दिव्यज्योति, मोक्षस्वरूप श्रीहरिदास नाथ ॥अंदरिकी॥

146)गौरीमनोहरि - जंपॆ ताळम्

कमलनाभुनि चरण कमल दासुडे श्रीहरिदासुडु ॥कमल॥
कर्मयोगि नित्य सन्न्यासि, आतडे राग द्वेषालु लेनि
कर्मपरुडु द्वंद्वमुलु विडिचिन साधकुडे सदा ॥कमल॥
कर्ममुल वीडि पारमार्थिक सन्न्यासमुचे मोक्षमु पॊंदुट
कष्टतरमनि, ब्रह्मार्पणमनि कर्मलजेयु जिज्ञासुवु ज्ञानिये ॥कमल॥

147)यदुकुल कांभोजि - आदि ताळम्

नी चिन्मयत्वमे ई जगत्तंता चुट्टियुन्नदि गदरा ॥नी चिन्मय॥
हिरण्मयमैन विराट्स्वरूपमु पूनिन विश्वेश्वर ॥नी चिन्मय॥
दैविक कर्मात्मलनबडु शक्तुल व्यापिंचि अनेक रूपाल अलरु
सच्चिदानंद परब्रह्म नी संकल्पमैन चैतन्यमे गद सृष्टि ॥नी चिन्मय॥

148)श्रीरंजनि - आदि ताळम्

अन्नि जीवुललो संचरिंचु चैतन्य सर्वात्मवु नीवेरा ॥अन्नि॥
अजहरादि अमरुलकु जीवाधारमैन जगन्नाथुडवे ॥अन्नि।
आध्यात्ममु अधिभूतमु अधिदैवतमनु त्रिविधाल
वॆलुगु विराट्स्वरूपमे जीवुल आत्म, परमात्मवु नीवे ॥अन्नि॥

149)बिलहरि - चापु ताळम्

आद्युडाहरि अनंतुडु अच्युतुडु ॥आद्युडा॥
सर्व मंगळ स्वरूपुडु सत्यमातडे ॥आद्युडा॥
योगाभ्यासमुचे चित्तशुद्धिनि साधिंचिन घनुडु, निरतमु
देहेंद्रिय मनोबुद्धुल निग्रहिंचिन विबुधुडु विनुतिंचु ॥आद्युडा॥
सर्व भूताल तनयात्मगा यॆरिगिन उत्तमुडु, कर्ममुलु
चेयुचुन्ननु अंदु लिप्तुडु गानट्टि श्रीहरिदासुडु अर्चिंचु ॥आद्युडा॥

150)गौळिपंतु - चापु ताळम्

आत्मज्ञानमुनु अरय अर्चिंचरे अमेयात्मुनि ॥आत्म॥
तत्त्वविदुलु चेयुनदेमैन, चित्तमुनु आयत्तमु
चेसिकॊनि, सकल कर्मलनु ब्रह्मार्पणमनेरु सर्वदा ॥आत्म॥
नीरजदळमुनु नीरमंटनि पगिदि पाप पुण्यमुलंटक
मोक्ष फलमुनु वदलि मनसु निलुपरो हरिदासुलारा ॥आत्म॥

151)गौळ - आदि ताळम्

मुक्ति कलदा मूलाधार मुख्युनि तॆलियनि वानिकि ॥मुक्ति॥
सुज्ञान निष्ठचे सर्व कर्म फलत्यागि कानिवानिकि, इंद्रियाल
आकट्टुकॊननि अज्ञानावृत विमूढुनकु विपरीत बुद्धिकि ॥मुक्ति॥
ईश्वररूपुडु आत्मभावमु गलकर्मसन्यासि, पाप पुण्यालु
अंटनि हरिदासुडु, अंदुकु विभिन्नमुग वर्तिंचु विमूढुनकु ॥मुक्ति॥

152)कुरंजि - आदि ताळम्

नादि नीदि यनु भेदबुद्धिनि परगकुरा ॥नादि॥
अंता यीश्वर मयमनुटे मुक्ति ॥नादि॥
आत्म स्वरूपमु, अन्निट अरतिगल ज्ञानरूपमे
परमेश्वरुडु पाप पुण्यालंटनि पूजनीयुडु ॥नादि॥
अज्ञान मावरिंचिन लौकिक व्यापारालंदु
लंपटमेल सेविंपरे श्रीहरिदासेशुनि ॥नादि॥

153)पूर्वीकल्याणि - आदि ताळम्

अनंतुडाद्युडु अखिलाकारुडु अंतटिकी साक्षि हरिये ॥अनंतु॥
आत्मलंदलरु निवृत्तात्म निर्विकारि निरुपम निरंजनुडे ॥अनंतु॥
आतडे सच्चिदानंद ज्ञानस्वरूपुडु परब्रह्मातडे
आतडे परमात्म सर्वांतरात्म आतडे परेशुडु ॥अनंतु॥
जीवुडुन्न, शरीरमुन, विषयेंद्रिया लन्नितप्पविक
हरिदासनुतुडे, अनेक रूपाल अलरु अनादिपुरुषुडु ॥अनंतु॥

154)चिंतामणि - चापु ताळम्

अंतकू अग्रमंदु अलरु अग्रज हरि ॥अंतकू॥
अचंचल ब्रह्ममु अनुभवैक वेद्यमट ॥अंतकू॥
ब्रह्म मॊकटे ज्ञान स्वरूपमु परब्रह्म मॊकटे
निर्गुणमु निर्द्वंद्वमु नित्यमैन सनातन मंदुरु ॥अंतकू॥
बाह्य प्रवृत्तुलचे नॊप्पु इंद्रिय जनित भ्रांतिचे,
शब्दादि धर्मालचे विविदार्थाल वॆलुगु श्रीहरिदासार्चित ॥अंतकू॥

155)नटभैरवि - रूपक ताळम्

कनरे काममु कलुगु कारणमु, ज्ञानमदे ॥कनरे॥
शुद्ध सिद्धाकृतिनि परगु परब्रह्म स्वरूपान्नि सेविंपरे
ज्ञानमु कलिगिन क्षणमे, अविद्याजनित अज्ञानमणगु ॥कनरे॥
परब्रह्म तत्त्वमु तॆलिसि ज्ञानुलै कल्मषमु लंटक
जन्म रहितमैन मुक्तिकै कॊलुवरे श्रीहरिदास नुतुनि ॥कनरे॥

156)शुद्धसावेरि - जंपॆ ताळम्

उपाधि त्रयान समत्वान्नि जूचुवाडे सुज्ञानुडु ॥उपाधि॥

भूसुरादुलु उत्तमुलु, गवादुलु मध्यमुलु,
सूकरादुलु निकृष्टुलनि जगतिनि नलुगुरु गणिंचु ॥उपाधि॥
समं सर्वेषनु ब्रह्म स्वरूपाले जीवुलनु निश्चल बुद्धितो
गमनिंचुने, हरिदासविभुनि तत्त्वमु पॊंदिन बंध विमुक्तुडु ॥उपाधि॥

157)कीरवाणि - चापु ताळम्

स्थावरजंगमात्मक जगत्तंतकू स्वामिवि नीवेरा ॥स्थावर॥
काम क्रोधादुलु अंतश्शत्रुवुलु, तरतम भेदजनित
बहिश्शत्रुवुल भयभ्रांतुल जेयु भवतापहर ॥स्थावर॥
मोक्ष पुरुषार्थमुल प्रवक्तवु नीवेगा श्रीहरि दास वरद
सर्वज्ञ सर्वदृग्व्यास वाचस्पते नीवेरा श्रीहरिवि ॥स्थावर॥

158)द्विजावंति - रूपक ताळम्

शिवुनकु भवुनकु अंदरानि भासुर पदमदे ॥शिवु॥
सर्व भूतात्मलंदु समत्व दृष्टिगल स्थिरमैन चित्तोपरतिकै,
संसार निवृत्तिये ब्रह्म तत्त्वमनि अर्चिंचेरु हरिपदमुल ॥शिवु॥
ब्रह्मानंद मंदेरु, सर्वमंदे समत्व दृष्टिगल हरिदासुलु
स्थिरमैन ब्रह्मज्ञानुलु भजिंचेरु पद्मनाभुनि पदपद्माल ॥शिवु॥

159)नाटकुरंजि - आदि ताळम्

परेशुनि परब्रह्ममुनु दर्शिंचुटे तन्मयत्वमु ॥परे॥
ममत बंधनयुत मोह वर्जितुडै भूत चयमंदु
समत्व भावमुचे सुनिश्चयमुगावॆलुगॊंदु वानिकि ॥परे॥
प्रापंचिक प्रियाप्रिय पदार्थमुलॆन्नि प्राप्तिंचिन नेमि सुखदुःख
द्वंद्वाल दरि चेरनीयनि ब्रह्मज्ञानुलु श्रीहरिदासुलकु ॥परे॥

160)सुरटि - चापु ताळम्

अखंड बोधस्वरूप अखिललोक नाथहरि सर्वाधार ॥अखं॥
देहेंद्रिय मनो बुद्धुलकु लोनगु माया लंपटुड
पापपुण्य कर्मलकु बद्धुडनु पामरुडनु पतितुडनु ॥अखं॥
देहरहितमु वस्तुतः आत्म, पांच भौतिक
देहमुचे अभिज्ञातमैन ननुतरिंप, संतप्तमैन
नाहृदयान स्फुरिंचरा श्रीहरिदास सखुंडवे ॥अखं॥

161)केदारगौळ - आदि ताळम्

शरीरावरणचे अकुंठितमैन घनतगल घनानघुडवे ॥शरी॥
प्रकृतिपुरुषुल नियंत ननुतरिंप जेयरा तारकराम ॥शरी॥
स्वस्वरूप स्मृति भ्रमसिनदि नीमाया जालमुचे, सत्त्वादि
गुणकर्मल बंधमुचे संसार चक्रमुन चरिंचु चपलुडनुरा ॥शरी॥
इंद्रियगुण शब्दादिविषय चिंतनलनलरु नरुडनु नी दासुडने
श्रीहरिदासुडने स्वस्वरूप ज्ञानमुनु तॆलियजेयरा श्रीहरिदेव ॥शरी॥

162)तोडि - आदि ताळम्

भजिंपरारे भवहरुनि पाप परिहारार्थमै ॥भजिंप॥
जीवन रूपमगु कर्मजनित भवबंधमुल बरगु
पामरुलारा, शरीराभिमानमनु अज्ञान निवृत्तिकै ॥भजिंप॥
जराभर रोगजनित क्लेशमुचे जर्जरीभूत शरीरमु,

अविद्याजनित कर्मबंध तापनिवृत्तिकै श्रीहरिदासुलै ॥भजिंप॥

163)जगन्मोहिनि - त्रिपुट ताळम्

जगद्कारकुडवु कारणुडवु नीवेरा श्रीहरिदासार्चित ॥जग॥
स्वरूपतः ऒकडिवय्यू मूर्ति त्रयमुगा वॆलुगु
नील नीरद श्याम श्रीहरे समस्त जीवमुलु नीवेगा ॥जग॥
त्रिगुणात्मक मायचे सृष्टिस्थिति लयमुल गाविंचु
उपाधिवर्जित ऊर्जित उमापति रंजन निरंजनुडवे ॥जग॥

164)श्रीरागं - चापु ताळम्

निरंजन नीरज नयन नीराजना लिविगो ॥निरंजन॥
अखंडमु अनंतमैन आनंद स्वरूप ॥निरंजन॥
तलचिनने तरिंचु तनुवु तन्मयत्वमु चॆंदेनु
निष्काम भावमुतो सेविंचिनने शुभमुलिच्चु ॥निरंजन॥
गोवु वत्समुल साकुचु व्याघ्रमु तुंडि काचुनटुल
ननुकाचु श्रीहरिदास वत्सल नित्य पूज चेसेनुरा नीकु ॥निरंजन॥

165)शिवरंजनि - चापु ताळम्

परमानंद स्वरूपमैन ब्रह्ममुने पॊंदेरु ॥पर॥
प्राकृत रूपालु वानिकार्य रूपलिंग शरीराल वीडिन ॥पर॥
कर्म यंदुरु निनु दांतुलु वेदांतुलु,
वेदस्वरूप! स्वभावमंदुरु निनु चार्विकुलु,
वैशेषिकुलु कालमंदुरे निनु, कालातीत स्वरूप ॥पर॥
चैतन्युड वंदुरु ज्योतिष्कुलु, काममंदुरु कामुकुलु
नतजन पालकुडवु नारायणुड वंदुरु श्रीहरिदास वरुलु ॥पर॥

166)श्रुतिरंजनि - आदि ताळम्

कोरिकलु जयिंचिनने कदाकलुगु प्रमोदमैन प्रशांति ॥कोरिक॥
जन्मजन्मल जलजाक्षुनंदु संलग्नमैन चित्तमु चालु ॥कोरिक॥
बाह्य विषयमुलगु शब्द स्पर्शादुलंदु अरतिचॆंदि
आत्म स्वरूपमु सरिग अरयरो हरिदासुलारा ॥कोरिक॥

167)श्रीरंजनि - आदि ताळम्

भूतात्मुड्ड भूतेशुड्ड भूतभावनुड्ड श्रीविभावनुडेग ॥भूता॥
तन मायाशक्तिचे चॆलगु, सृष्टि स्थिति लयकारण सर्वेशुडे ॥भूता॥
सुस्थिरमैन सद्बुद्धितो मोह व्यामोहाल मानिगट्टिगा
हरिदास विभुनंदे बुद्धिनिलिपि कर्मसन्न्यासमु पाटिंचरो ॥भूता॥

168)देवगांधारि - आदि ताळम्

ब्रह्म तत्त्वमु तॆलियरो बुध जनुलारा ॥ब्रह्म॥
अज्ञानतिमिर मणचु ज्ञानदीपिकवु नीवु ॥ब्रह्म॥
चेयुदुरुकर्मलु देहेंद्रिय मनोबुद्धुल बद्धुलैनरुलु,
आत्म ज्ञानिकिललो कर्मलतो पनिलेदनेरु, सरिगसद्गति नॊंदुटकै ॥ब्रह्म॥
नाशमु चेयकलदा कर्म मायनु, कर्म यन मायेगद
हरिदास विनुतुनि ऎरिगिन ज्ञानमे मायनरिंचु मार्गमु ॥ब्रह्म॥

169)नीलांबरि - चापु ताळम्

पॊंदु ब्रह्ममुनु, निरवधि सुखमुनु ॥पॊंदु॥

निरागुडै संसार बंधमुलंदु निरासक्तुडे ॥पोंदु॥
शुद्धचैतन्य स्वरूपमु स्वयंप्रकाशमु
आत्मयनि अर्चिंचेरु हरिदास वरुलु ॥पोंदु॥

170)अठाण - आदि ताळम्

सुलक्षण सारमैन सुज्ञान ज्योतिर्मयुडे श्रीहरि दासार्चितुडु ॥सुलक्ष॥
अज्ञानमु वलन कनपडु आत्म मितमैनटुल, सर्व व्याप्तात्म,
मनोवृत्तुलचे मितमैनटुल अलरु, अनेक रूपाललो ॥सुलक्ष॥
बाह्यमुलैन नेमि आत्मकु देहेंद्रियालु,
बह्य प्रापंचिक प्रवृत्तुलतो प्रतिबंधमु लेनि ॥सुलक्ष॥

171)आभोगि - आदि ताळम्

देहेंद्रिय मनोबुद्धुलकु अतीतात्म परमात्मवटने ॥देहें॥
सच्चिदानंद स्वरूपमु योगींद्रुलकु सद्गति
तुरीयमु सत्यमु नित्यमु कलुष रहितमटने ॥देहें॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तुलनु अवस्था त्रयमुनकु अतीत
हरिदासुलु अनवरतमु अर्चिंचु अव्ययुड वंदुरे ॥देहें॥

172)कुंतलवराळि - चापु ताळम्

प्रतिबंध विमुक्तिये श्रीहरिदासुलु कोरु प्रशांति पथमु ॥प्रति॥
सदसद्विवेकमु कर्मफलमु लंदनासक्तिये
आत्मज्ञानमरयु श्रेयोमार्ग मनेरंदरु ॥प्रति।
अज्ञानमे बंधनमु अविद्या नाशनमे नांदि यनेरु
निजस्वरूप मरयुटे ज्ञानमु, अदे आत्म संदर्शनमु ॥प्रति॥

173)धन्यासि - आदि ताळम्

श्रीहरिदासुडे ब्रह्म स्थानमैन मोक्ष सिद्धिनोंदु ॥ श्रीहरि ॥
आत्मयंदे परवशमगुचु आत्मयंदे क्रीडिंचु ॥श्रीहरि॥
कलयनि ऍंचरे व्यवहारिक प्रपंचमंता, पारमार्थिक
तत्त्वमुतो वर्तिंचुचु आत्म ज्ञानमॆरिंगिन ज्ञानिये ॥श्रीहरि॥
काम क्रोध जनित संसार साधक बाधकाल निग्रहिंचु वाडे सुखि
निजप्रवृत्ति बाह्य स्पर्शल राग द्वेषाल निग्रहिंचु साधकुडु ॥ श्रीहरि ॥

174)सिंहेंद्रमध्यमं - त्रिपुट ताळम्

त्वरितमे दॊरकु चिदानंदमु चित्तोपरति ॥त्वरित॥
इंद्रिय संयममु श्रद्धासक्तुलु सुज्ञानसिद्धि कलवानिकि
भूत परिपालकुडैन परमात्म परतत्त्वाल परगिन वानिकि ॥त्वरित॥
सकलयज्ञ तपस्सुलकु ध्येयमुगनॊप्पु श्रीहरिदास नुतुनि
सेविंचि मोक्षमे मुख्यमनि गणिंचिन कर्मसन्न्यासि साधकुनिकि ॥त्वरित॥

175)कल्याणि - आदि ताळम्

ब्रह्मपदार्थमे अंतर्भूतमु चेतनाचेतन जगत्तंता ॥ब्रह्म॥
भ्रमयंद्रु विवर्तमुचॆंदि नाम रूपात्मकमैन जगत्तुनु,
दृग्गोचर मैनदंता सर्वाधिष्ठान भूतमनबडु अद्वैतमु ॥ब्रह्म॥
सच्चिदानंद परब्रह्ममु सृष्टि स्थिति लयात्मक जगत्तुनकु
उपादान कारणमु, हरिदास जनेश्वरुडे सर्व जगदात्म ॥ब्रह्म॥

176)साम - त्रिपुट ताळम्

हरि यंदे नाम रूपात्मकमैन सर्वमु संशोभिल्लु ॥हरि॥
हरिदास नुतुनि अंतरमरयक अलरुदुरु अधमुलु ॥हरि॥
दृष्टि कगपडु विविध रूपालुगा सर्वव्यापि हृषीकेशुडु केशवुडु,
उपाधि दोषमुवलन, उपाधि ऊडिन संदर्शनमगु सुदर्शनुडु ॥हरि॥

177)सरसांगि - आदि ताळम्

सर्वाधिष्ठानमैन सर्व जगद्प्राणमे सर्वेशुडु ॥सर्वा॥
हरिदासात्मे परमात्मग, ऐरुगरे अद्वैतमु ॥सर्वा॥
मूल्यमु गणिंचेरु कनकमय कंठाभरणमुनकु,
मूलमैन कनकमुनु सरिगकनरे आध्यात्मिकमुग ॥सर्वा॥

178)खरहरप्रिय - आदि ताळम्

उंडेदि हरि यॊकडे मनसुनु मुरिपिंचेदि मुरहरि रूपाले ॥उंडेदि॥
उंडेदि अनंताकाशमु ऒकटे, कुड्यमु लनबडु उपाधुलवल्ल
परिमितमैन भवनांतर्देशमु विविध नाम रूपाल वॆलुगु पगिदि ॥उंडेदि॥
उंडेदि अनंतात्म तत्त्वमे शरीरेंद्रिय कल्पित उपाधुलूडिन,
अनवरतमु हरिदासुलु नीराजनमु पट्टु परतत्त्व मॊकटे ॥उंडेदि॥

179)रेवति - रूपक ताळम्

चित्तमुन काम संकल्पमु सन्न्यसिंचिनवाडे श्रीहरिदासुडु ॥चित्तमु॥
गुणकर्म यगु संसारमंदे मग्नमुगाक मोक्षगामै
साधनकर्मनु आचरिंचु वाडे आत्मतत्त्व मॆरिगिन ज्ञानयोगि ॥चित्तमु॥
चिंतलंदु चित्तमुंचक सकल कर्मलंदु आस्थमानरो हरिभक्तुलै
साधनकर्मे सन्न्यासमनि तॆलिसिन ध्यानयोगि ज्ञानि यगुनट ॥चित्तमु॥

180)नागस्वराळि - आदि ताळम्

शरीरमंदुरु अविद्यावासन जनितकर्म फलितमुनु ॥शरीर॥
चूपरासक्ति हरिदासुलु दारा सुतोदरालंदु ॥शरीर॥
शुद्धमु स्वयंप्रकाशमु निर्गुण निवृत्तात्म परमात्मे गद
सर्व व्यापकमु आवरण शून्यमु भूतग्रामाल साक्षियट ॥शरीर॥
गोचरिंचु विकाराकृतिनि पंच कोशालचे परिभृतमैन
परिशुद्धात्म, स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरालकु अतीतमनेरु ॥शरीर॥

181)चारुकेशि - आदि ताळम्

शाश्वतानंद स्वरूपमु आत्मनु अरयरो हरिदासुलै ॥शाश्व॥
विचारण विवेकयुत साधनल वल्लकलुगु सुज्ञानमु, श्रवण मनन
ध्यानमुले मूलमु, पंच कोशाल नुंडि मथिंचरे शुद्धात्मने ॥शाश्व॥
पंच कोशमुल वीडिनने मिगुलुनु सत्यमु नित्यमैन आत्म
निष्कल्मषमैन मनोबुद्धुलु कलिगिनने साक्षात्करिंचुने ॥शाश्व॥

182)सारमति - रूपक ताळम्

आत्म ज्ञान निष्ठापरुडु श्रीहरिदासुडु ॥आत्म॥
आत्म साक्षि चैतन्यमुतो एकमैन वाडे ॥आत्म॥
देहेंद्रिय मनो बुद्धुलकु अतीतमु, विलक्षणमु आत्म
नित्यमुजरुगु परिस्थितुलकु, निष्कामुडै अलरुनट्टि ॥आत्म॥
क्षणिकमु अनात्म, आत्मानात्मल भेदमु तॆलियदु अविवेकमुचे,
अरयरो अद्वितीयमु सत्यमु नित्यमैन अव्ययुनि अच्युतुनि ॥आत्म॥

183)गमनश्रम - आदि ताळम्

आत्मानात्म विवेकयुत बुद्धिये जीवन्मुक्ति मार्गमु ॥आत्मा॥
संसार बंधालनुंडि जीवात्मनु विडिपिंचुटये ॥आत्मा॥
तन बागोगुलकु कारणमु ताने, मनसेंद्रियाल
जयिंचिन आत्मये तन बंधुवनुने हरिदासुडु ॥आत्मा॥
बंधिंचुनु संसार चक्रमुन विवेक रहितमैन बुद्धिये,
साधकुनि नीचरण दासुनि शोक ताप कारण मदियेग ॥आत्मा॥

184)हरिकांभोजि - जंपॆ ताळम्

अरयरो अंतट अलरु हरिदास प्रियुनि ॥अरयरो॥
मलचरो मनमुनु माधवुनिपै मरिमरि ॥अरयरो॥
आत्म अतीतमैनदि नेनु नादि यनु भावनलकु
कर्तृत्व भोक्तृत्वालकु अंटदनु आलोचन ॥अरयरो॥

185)वागधीश्वरि - चापु ताळम्

कर्तृत्वादुले उपाधुलु मनोन्वितमैन आत्मकु ॥कर्तृ॥
इदि तॆलिसिन हरिदासुलु विनुतिंचेरु परमात्मने ॥कर्तृ॥
कदिलेदि नीरु, नीट कनपडे चंद्रबिंबमु नडयाडु नट्टुल
आपादिंचेरु गुण दोषालनु आत्मकु विमूढुलु विकृतमुग ॥कर्तृ॥

186)हंसध्वनि - आदि ताळम्

अवस्था त्रयमुनु अधिगमिंचिन तुरीयातीतुडे ॥अवस्था॥
अव्ययुनि अरसिन आत्मज्ञानि हरिदासुडातडे ॥अवस्था॥
नित्यानंद निर्मल तत्त्वमे आत्मज्ञान मयमु परमात्म तत्त्वमु
तत्त्वमंदु तॆलिसिनदि तॆलिय वलसिनदि यनु विचक्षणमेल ॥अवस्था॥
लेदु मार्पु आत्मकु, मरि लेदु ज्ञानमु बुद्धिकि,
आत्म चैतन्यमुने प्रतिबिंबिंचु, प्रज्ञान मरयरो ॥अवस्था॥

187)गुंडक्रिय - आदि ताळम्

अब्बुनु ध्यानमु परमात्म ध्यानमु निब्बरमुगा ॥अब्बुनु॥
नियममु कलिगि आहार विहारादुल दैहिक कर्मल युक्त
चेष्टल चॆलगुचु नियमित निद्र जागरणलु कल साधकुनकु ॥अब्बुनु॥
सूक्ष्मरूप कर्मलंदु निष्काम फल साधकुडु कर्म निष्ठुनकु
आत्म तत्त्वान इंद्रिय ततिनि निलिपिन योगि हरिदासुनकु ॥अब्बुनु॥

188)देवगांधारि - आदि ताळम्

अंतटा उन्नदि ऒके आत्म पदार्थमु ॥अंतटा॥
अदे परमार्थमु द्वंद्वातीत भावमु ॥अम्तटा॥
गालि लेनिचोट वॆलुगु दीपकळिक निश्चलमुग नुंडु वोलॆ
ब्रह्ममंदु लग्नमगु योगाभ्यास निरतुनि अंदेयात्म ॥अंतटा॥
ऎटचॆलगु चित्तमु निरुद्धमै, उपरतिनॊंदु ऎट शुद्धांतःकरणमु
अट आत्मानंदमंदु इंद्रियातीतमैन श्रीहरिदासुनि आत्म ॥अंतटा॥

189)आभेरि - जंपॆ ताळम्

परमात्म जीवात्म भेदमु समसि पोवुनट ॥पर॥
चलिंपकुंडुनु योगि आत्मतत्त्व मरसि,
दुःख रहितमु दृढमैन योगमंदिन ॥पर॥

कलुगु भय भ्रांतुलु आत्म वेरु जीवमु वेरन्न, त्राटिनि जूचि
पामनि भ्रमिंचि भयमंदुट तगदनि अरसिन हरिदासुलकु ॥पर॥
190)आरभि - चापु ताळम्
अज्ञान नाशनमन, आत्मनु अरयुटनेरु हरिदासुलु ॥अज्ञान॥
आत्म नॆरिगिन अवगतमगु अनंत ज्योतिर्मूर्ति एकात्म ॥अज्ञान॥
चिंतलुमानि, दैवमु तोडुकाग उल्लमुन, बुद्धिनि
आत्मयंदु चेर्चरो, निर्मलनिश्चल शांति संभवमगु ॥अज्ञान॥
चंचल मनसुनु सुस्थिरमुगा स्ववशमुचेयरो,
योगं योगविदां नेतैन हरिनरयरो अनिशमु ॥अज्ञान॥
191)आहिरिभैरवि - चापु ताळम्
शुद्धं सत्त्वं वसुदेव शब्दितं अंदुरे ओ विष्णुदेव ॥शुद्धं॥
शुद्ध चित्तमुन्न सिद्धिंचुने नी संदर्शन भाग्यमु ॥शुद्धं॥
शुद्ध चित्तमुन निवसिंचु इंद्रियातीत, नीकन्न ऎन्नदग
पॆद्देवरुरा शरीरधारुलु जीवुलंदु वसिंचु सर्वांतरात्म ॥शुद्धं॥
शिवशिव यनिनने भवभंजन मगुननि शिवाय विष्णु रूपाय
शिव रूपाय विष्णवे यनि विनुतिंचेरु विबुधुलु श्रीहरिदासुलु ॥शुद्धं॥
192)बौळि - चापु ताळम्
विश्वयोनि प्रकृतिये शक्ति, विश्व बीजमु पुरुषुडे परम शिवुडु ॥विश्व॥
ई यिरुवुरिकि एक रसमैन एको नारायणुड वंदुरे सर्वेश ॥विश्व॥
परिपरि हरि पाद पद्मालने भजिंचु वारंदरू मरिमरि
सरिग चूचु वारटने श्रीहरि दासेश्वरुनि सर्वजीवुलंदु ॥विश्व॥
193)कांभोजि - आदि ताळम्
ॐनमो भगवते वासुदेवाय यनुटे तारक मंत्रमु ॥ॐ॥
अधीनुलु कारु ई जगान, राग द्वेषालकु पशुवुलवलॆ,
निनु सर्वांतरात्म यनि कनुगॊनिन वारॆव्वरु ॥ॐ॥
मूलमु नीवटने सर्वमुनकु, ओ विश्वंभर भवहर
ब्रह्म विष्णु शिवात्मक रूपाल नलरु हरिदास पोषक ॥ॐ॥
194)सौराष्ट्र - रूपक ताळम्
वशिष्ठ वाम देवादि पूजिताय वासुदेवाय नमो नमः ॥वशिष्ठ॥
इंद्रिय संबंध भोग प्रक्रियलु ऊडवलॆ नन्न
मनसावाचा कर्मणा सदा भजिंपरे श्रीहरिनि ॥वशिष्ठ॥
जीवुल अंतः करणाल नलरु इंद्रिय ततिकि चैतन्यमु
कलिगिंचु श्रीहरिदास प्रियुनि परिपरि परिकीर्तन चेयरे ॥वशिष्ठ॥
195)नादचिंतामणि - आदि ताळम्
आत्म निष्ठापरुडे परमात्म निष्ठापरुडे ब्रह्ममगु ॥आत्म॥
क्षणिकमैनदि दृश्यमु ई कनबडुनदंता, सर्व साक्षिये
दृक्, शाश्वतमैन निर्गुण परब्रह्मयनि हरिनि अरयरो ॥आत्म॥
नाम रूपात्मक दृश्य प्रपंचमुनु निर्मिंचिन निस्संगुडे
सच्चिदानंद स्वरूपुडे श्रीहरि दासेशुडनि विश्वसिंचरो ॥आत्म॥
196)कापी - चापु ताळम्
आत्म, चैतन्य स्वरूपमनेरु बुधुलु ॥आत्म॥

आनंद स्वरूपमै स्वयंप्रकाशमै परगु ॥आत्म॥
उंडेदि आत्मयॊकटे, सर्वत्र संदर्शिंपगल वाडे योगि
आत्मब्रह्ममु ऒकटे, समदर्शनमे योगमु, अदिये ॥आत्म॥
निखिलमंता निजात्मलो चूचु ज्ञानचक्षुवे सुज्ञानगु
हरिदासुडे भूतभव्य भवन्नाथुनि अरसिन आत्मज्ञानि ॥आत्म॥

197)साम - आदि ताळम्

गोचरमगुनु सत्यमु जीवात्म परमात्मल एकत्वमु ॥गोचर॥
उपाधुल कतीतमगु आत्म विचारमु चेसिन श्रीहरिदासुलकु ॥गोचर॥
प्रज्ञानमे ब्रह्म यनि चाटुनु सर्वत्रा ऋग्वेदमु आत्म तत्त्वमुनु,
पॊगडॆ नंतटा आत्मनु, यजुर्वेदमु अहं ब्रह्मास्मि यनुचु ॥गोचर॥
तत्त्व मसि यनि गानमु चेसॆने साममु साम रागान
अहं आत्म ब्रह्म यनि पलुकुने पलु दॆसल अधर्वमु ॥गोचर॥

198)मधुमति - जंपॆ ताळम्

वॆलुगुलकु वॆवॆलुगुवे विश्वमंता वॆलुगु निच्चु आत्मवे ॥वॆलुगु॥
क्षणिकमुलु बुद्बुद प्रायमुलु देहादि दृश्यमुलु
अंदुकु विलक्षणमैन निर्मल नित्यानंद परंज्योतिये ॥वॆलुगु॥
लेवंदुरु जनन मरणालु, अंतकन्ना लेवु जराभार कारण बाधलु
शब्दादि इंद्रिय विषय वर्जितुडु हरिदास सन्नुतुडे ज्योतिर्मयुडु ॥वॆलुगु॥

199)तोडि - त्रिपुट ताळम्

अन्यमु गोचरिंचुने आत्म पदार्थमु तप्प ॥अन्यमु॥
मनो विकारालु लेक आत्मतो तादात्म्यमु चॆंदरो
नित्य शुद्धमु बंध रहितात्म तत्त्व मॆरिगिन वानिकि ॥अन्यमु॥
सत्यं ज्ञानं अनंतं अनु ब्रह्म पदर्थमे आत्म
ताने ब्रह्ममनु अद्वैत भावमु गल श्रीहरिदासुनकु ॥अन्यमु॥

200)बृंदावनसारंग - त्रिपुट ताळम्

मनसुनु परमात्म यंदे संलग्नमु चेयरे ॥मनसु॥
सर्वत्रनलरु सर्वात्मनु अन्निटगनुचु मनरे ॥मनसु॥
सर्वभूत स्थितुडैन परमात्मने भजिंचु परमयोगि
एरीतिग वर्तिंचिन नेमि परब्रह्मने पॊंदेनु तथ्यमुग ॥मनसु॥
ऒरुलसुखमे तनसुखमु, ऒरुलदुःखमे तनदुःखमनि
तलचरे श्रीहरिदास वरदुनि निरतमु ध्यानिंचरे भक्तितो ॥मनसु॥

201)नवरसकन्नड - आदि ताळम्

चित्तमु चंचलमैन अरयरु योगस्थितिनि योगीश्वरुनि ॥चित्तमु॥
कानरारु कमलेशुनि सर्वेशुनि श्रीहरिदास हृदयेशुनि ॥चित्तमु॥
वेरुकलदे हेतुवु ऎंच सर्वेंद्रिय विकारालकु
कारणमु, सर्व क्लेशमुलकु वशमगुटे यनेरु ॥चित्तमु॥
गालिनि बंधिंचुट ऎटुलनो मनसु निलकड चेयुट
दुर्लभमु, निलुवदु मनसु अभ्यास वैराग्यालचे गानि ॥चित्तमु॥

202)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

हरिदास वंद्युनि ध्यानिंचरो योगोपासनतो ॥हरि॥
जन्मांतर संस्कारमुचे योग स्थितिनि पॊंद ॥हरि॥

कर्मफलमंदु कांक्षलु वीडरो विबुधुलारा ॥कर्म॥
तापसुललो अधिकुडै चॆलगु कर्म सन्न्यास योगियॆ,
भासुरमुग प्रकीर्तिंपबडु पंडित वरेण्युडट ॥कर्म॥
203)रिषभप्रिय - त्रिपुट ताळम्
सत्यमु शिवमु सुंदरमगु श्रीहरि पलुकुताडट ॥सत्यमु॥
मोक्षमु निच्चु महाक्षुडट अक्षरस्वरूपुडु ॥सत्यमु॥
अक्षरावनिलो जॊरबडि पुटलॆन्नि त्रिप्पिन नेमि
चित्तमु संधिंचि हरिहरि अनि उच्चरिंचिनने ॥सत्यमु॥
ब्रह्मरूप तरुशाखलु आकुल चाटुन
अजांडालुन्नवनि अरसि हरिहरि अनरो
अज्ञानुलकु अग्राह्युडु हरिदास वंद्युडु ॥सत्यमु॥
204)यागप्रिय - आदि ताळम्
ब्रह्मनॆरिगि ब्रह्मानंद मंदरे हरिदासुलै ॥ब्रह्म॥
अंजनमुवेसि निधुलकनुगॊनि नट्टुल आत्म स्वरूपमु कनरे
ज्ञानार्जन वलन हृदिलोनि अष्टदळ कमलगर्भुनि कनुगॊनरे ॥ब्रह्म॥
सर्व कारणमु मूल प्रकृतिनि योग दृष्टितो पट्टरे परमात्मनु
तत्त्वमसि अनु अद्वैतभावन ज्ञान मार्गान मनसेंद्रियालु चेरिचि ॥ब्रह्म॥
205)नागाभरणं - आदि ताळम्
हृदिनि स्पंदिंचु सुनादमुने आलकिंचरे हरिदासुलै ॥हृदिनि॥
आत्मलोनि नादमुचे परमानंदमु पॊंदिनवाडे
योगि, नादबिंदु कळातीतमगु तत्त्वमु परतत्त्वमु ॥हृदिनि॥
आद्यंतालु लेक अनुभवैक वेद्यमै वेदतुल्यमगु
तर्क वितर्कालकु अतीतमैनदे परम तत्त्वमनेरु ॥हृदिनि॥
206)छायातरंगिणि - आदि ताळम्
मोक्षरहस्य मूलमुनु ऎरुगुवारे योगिपुंगवुलु ॥मोक्ष॥
अरिषड्वर्गाल त्रिकरणाल कट्टि षडाधारमुनु गट्टिग अरयरो
सरिग सहस्रारमुन त्रिगुणातीतुलै कुंडलिनी शक्तिनिगट्टिग पट्टरो ॥मोक्ष॥
कामक्रोधाल निलिपि निष्काम कर्मफलान्नि ब्रह्मपरमु चेसि
स्थिरमुग चित्तोपरति सिद्धिंचुननि गमनिंचिन श्रीहरिदासुलु ॥मोक्ष॥
207)खमाच् - आदि ताळम्
वाडेरा भजनपरुडु हरि भजनानंदपरुडु ॥वाडेरा॥
इल्लु विडिचि इल्लालिनि मदिलो मरचि बुद्धि निलिपि
तननु तानु मदिलो मरचि ब्रह्मानंदमंदु ॥वाडेरा॥
इहपर सौख्यालु विडिचि चिदानंदुनंदु चित्तमु निलिपि
बहिरंतराळाल ब्रह्ममुनु चूचु श्रीहरिदासुडु ॥वाडेरा॥
208)शुभपंतुवराळि - आदि ताळम्
तत्त्वमॆरुगरा जीवात्म परमात्म भेदमुमानि ॥तत्त्व॥
ऎंतकाचिना मट्टिकाक मानदु तृटिलो ईतनुवु ॥तत्त्व॥
नूतिलो पडिनवानिकि ईत यॆरिगिन नेमि चावु तप्पदे,
फलमु शून्यमु चित्तमु निलुपनिदे योग मॆरिगिन नेमि ॥तत्त्व॥
निधनमु चेयवच्चु नेमो ईनिन पुलिनि, मनसु मर्ममु

तेलिय तरमे, तारक योगमैन हरिदासार्चितुनि ॥तत्त्व॥

209)पीलु - आदि ताळम्

आत्मचैतन्यमु वल्लने वॆलुगु मनो बुद्धेंद्रियालु ॥आत्म॥
दीपमुन्नने कलुगुवेलुगु नलुदॆसल ईजगतिनि ॥आत्म॥
गुरु शुश्रूष चेसिनने तॆलियुनु ब्रह्मस्थिति तथ्यमुग
साकार निराकाराललो सर्वत्रचॆलगु परमात्म तत्त्वमु ॥आत्म॥
उत्तमुडगु योगिकेतॆलियु मुक्तिमार्गमु, अरिषड्वर्गाल
अतकरिंचिनगानि सरिग अरयलेरुगा हरिदासार्चितुनि ॥आत्म॥

210)हिंदोळ - चापु ताळम्

वेदमु वल्लॆवेसिन नेमि योगसिद्धि कावलॆनु ॥वेदमु॥
आत्म तत्त्वमु तॆलियुने ऎंतनेर्चिन नेमि ॥वेदमु॥
तरतम भेदमु लॆंचुचु, आध्यात्मिक सिद्धांतमु
पाठिंचनि दांतुलु वेदांतुलु ऎंदरो विमूढुलु ॥वेदमु॥
ब्रह्म स्वरूपमु अरय यत्निंचुटे ध्येयमनि
ऎंचनि वारॆंदरो श्रीहरिदासुलु कानिवारु जडुलु ॥वेदमु॥

211)हुसेनि - चापु ताळम्

चिंत लेकुंडुटे तरगनि वैकुंठमु ॥चिंत॥
कलुगु कष्टमु भाग्यमुन्न कॊलदि
चिंतलुन्नने चॆडुनु मनो बुद्धुलु ॥चिंत॥
निर्विचारमे निधिरव्य संपदट
नीदासुडु श्रीहरिदासुनि चित्तमंदु ॥चिंत॥

212)कळावति - चापु ताळम्

पूजलॆन्नि चेसिन नेमि पूज्यमु भक्तिविना मुक्ति
ब्रह्मुमे अंतटिकि परमार्थमनि ऎंचरो
गमनिंचि ब्रह्ममंदे चित्तमुंचरो ॥पूज॥
योगमॊरिंगि तनुवुनु पाटिंपक पूनिकतो
श्रीहरिदास वरदुनिपै चित्तमु संधिंपरो ॥पूज॥

213)असावेरि - चापु ताळम्

ईश्वर तत्त्वमुने ऎरुगरे ऎन्निकैन ॥ईश्वर॥
पंच भूतावृतानिकि बाह्यमैन ॥ईश्वर॥
पंचभूताल विवेचन चेसिनने तॆलियुनु
हृदिनुन्न हरि अकलंकात्म परमात्म ॥ईश्वर॥
हरिदास विनुतुडे आत्मलिंगमनि अरयक
कोटिलिंगालु कॊलिचिन चालुना ई जन्मकु ॥ईश्वर॥

214)बेगड - आदि ताळम्

स्वस्वरूप संधानमे मुक्ति ॥स्वस्व॥
जीवन्मुक्ति हरिदास सद्गतदे ॥स्वस्व॥
पटापंचलमगु चिम्मचीकट्लु इनुडुदयिंचिन
अंतमगुने अज्ञानतिमिरमु ज्ञानोदयमैनने ॥स्वस्व॥
कंठमलंकरिंचि हारमुंटे, वॆदुकनेल इतरत्र
आत्म नित्यप्राप्तमु निजदासुनिकि अविद्य नशिंचिनने ॥स्वस्व॥

215)बृंदावनि - आदि ताळम्

सत्यमु सरिग अरयरारे आर्युलारा ॥सत्यमु॥
शरीरांतर्गत आत्मवेरु शरीरमु वेरनु ॥सत्यमु॥
प्रकृति बंधालु तत्संबंध गुणानुबंधालु ऊडिनने
श्रीहरिदास नाथुनंदे निश्चलसिद्ध योगस्थिति संभवमगु ॥सत्यमु॥
ज्ञानमु क्रिय मनस्सुनकु, शरीरमु साक्षि रूपमय्यू
कूटस्थमगु आत्मवलन निर्लेपमै नॆरयुनटे मुमुक्षुवु ॥सत्यमु॥

216)बिंदुमालिनि - आदि ताळम्

कॊलुवरो वैराग्य तत्त्व साक्षात्कार रूप बलमंदुटकै ॥कॊलुव॥
आश्रमोचित कर्मल द्वारा ध्यानस्तुति पूजादि मानसिक
वाचिक शारीरक क्रियलद्वारा श्रीहरि चरण कमलमुलने ॥कॊलुव॥
जीवुलसमस्त जन्मकर्मलचे संसार बंधालचे कलुषित
मनो मालिन्याल बापुटकै हरिदासार्चितुनि पदमुलपरिपरि ॥कॊलुव॥

217)जयमनोहरि - जंपॆ ताळम्

श्रीकर करि वरद भवहर नीकु वंदनमुलु ॥श्री॥
श्रीहरि दासात्म बंधो अविज्ञान नाशक ईश्वर ॥श्री॥
जडमै ऎनिमिदि रूपाल नगुपिंचु प्रकृति कंटॆ भिन्नमु
विश्व व्याप्तमु उत्कृष्टमगु सुश्रेष्ठ सुज्ञान तेजोनिधि ॥श्री॥

218)शहन - रूपक ताळम्

ननु चेरदीयरा नाकिह्पर शुभमॊसगु श्रीहरिदास वरद ॥ननु॥
सलुपुनेमो यत्नमु ज्ञान सिद्धिकै ऒकडु ई पुडमिनि, वेलादि
पुरुषुललो उंडु नेमो ऒक्कगा नॊकडु निन्नरयु वाडु ॥ननु॥
निंगि नेल नीरु निप्पु गालि मनो बुद्ध्यहंकारालु ऎनिमिदि
यंदु, नी मायचे प्रस्फुटमगु, नीप्रसिद्ध शक्तिनि गमनिंच लेनि ॥ननु॥

219)मंजरि - रूपक ताळम्

ओ परात्पर कृषितो नास्ति दुर्भिक्षमंदुरे ॥ओ॥
कलुपु तीसि पैरुनु काचुरीति स्थिर चित्तमुतो तृणीकरिंचेरु
भक्तवरुलु मायावृतमगु दृश्य प्रपंच मंतयू ॥ओ॥
तॊलुत कामियैननु तुदकु घनुडगुनु काममु वीडिनने,
हरिदास वरदुनि पूजिंचिनने चित्तोपरतिप्रद ब्रह्मानंदमगु ॥ओ॥

220)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

कलुगु श्री हरिदासुनि चित्तमुन सत्त्वशुद्धि ॥कलुगु॥
हृदयेंद्रिय आनंद दायकमगु आनंदभैरव
नीरूपमुने उपासिंचेरु उर्विनंत अनवरतमु ॥कलुगु॥
प्रभविंचुनट प्रपंचमंता नीवलनने, तुदकु
लीनमगु विश्वमंता नीयंदे नीसंकल्प मात्रान ॥कलुगु॥

221)नायकि - त्रिपुट ताळम्

नीवु लेनि तावु गलदा देवदेव श्रीवासुदेव ॥नीवु॥
नीट रसमु, निंगि नॊगडु निनादमु नीवेगा
सूर्य चंद्रुलंदु चॆलगु ज्योतिर्मूर्ति ॥नीवु॥
पुरुषुललो वॆलयु पौरुष रूप, गंध रूपुडवे नीयंदु

इंपै उन्नदीपृथिवि, अग्निलोनि तेजस्स्वरूप हरिदास तेजम ॥नीवु॥

222)मायामाळवगौळ - त्रिपुट ताळम्

सर्व भूतालकु चिरंतनमगु मूलबीजमु नीवु ॥सर्व॥
प्राणुलंदॆल्ल वॆलुगु प्राणमु नीवै तापसुलंदु
तनरु तपस्सु नीवैन आदिदेव आराध्य दैवमंटिने ॥सर्व॥
बुद्धिमंतुललोनि बुद्धिवै तेजस्स्वरूपुलैन श्रीहरिदासुललोनि
दिव्यतेजस्सुगा अलरु आदिपुरुष अनंत नीवु अमरेश्वरुडवे ॥सर्व॥

223)मोहन - आदि ताळम्

योगीश्वरुलकु गानि अंदरानि अखिलांडनायक ॥योगी॥
ऐनलेनिनाम रूपालुगल निर्विकारि निरंजनुडवे ॥योगी॥
नलुवुरुंडिन ऊरुचेरिन कलुगुसम्तसमु, नट्टडविनि चेरिन
कलुगु दुःखमु, ई द्वंद्वमुनकु अतीतुडवैन निर्विकल्प ॥योगी॥
क्रिंद मीद यनि तर्किंचक, निस्संकोचमुग आध्यात्मिक तत्त्वमु
पालिंचि ब्रह्म तत्त्वमरय यनिशमु यत्निंचु हरिदासुडु ॥योगी॥

224)नवनीतमु - आदि ताळम्

आत्म अधिष्ठानमैनदट नरुनि चित्तक्षेत्रान चिद्रूपमै ॥आत्म॥
गालिकि पुट्टि गालिकि पॆरिगिन वानिके तॆलियु गालिपट्टु ॥आत्म॥
निस्संग सच्चिदानंद परब्रह्ममे साक्षी मात्रमगु
आत्मये हरिदासुलु अर्चिंचु अमर तत्त्वमु ॥आत्म॥
कानरादु गट्टॆक्किन गानि क्रीडनुन्नदंत, कानरावु
जगद्विषयमु लंदलि विकारमुलु ज्ञानियैन गानि ॥आत्म॥

225)देशितोडि - त्रिपुट ताळम्

श्रीहरियंदु भक्तिलेक रक्ति कट्टनि साधन फलिंचुने ऎंच ॥श्री॥
एकैक लक्ष्य शुद्धितो सदा सद्गुरु पूज सेयरे चित्तोपरतिकै ॥श्री॥
महदानंद चिन्मात्रमगु चिद्रूपमु
साक्षात्करिंचुट तथ्यमु निर्मल चित्तमुन्न ॥श्री॥
सुज्ञान ज्योतिर्मयमैन सद्गुरुवे श्रीहरिदासार्चितुडु
जगदानंद कारकुडनि चक्कगनम्मि सेविंच रारे ॥श्री॥

226)चॆंचुकांभोजि - त्रिपुट ताळम्

विश्वमंत निंडियुन्न उपाधि रहित श्रीहरिदासेश्वर ॥विश्व॥
निष्काम निरागालतो ऒप्पु बलाढ्युल लोनि बलमु नीवट
देह धारणकु अवसरमगु अन्न पानादुल इच्छयू नीवे ॥विश्व॥
नीवलनने कलिगिननेमि त्रिगुणालु, सर्वाधारमु नीवय्यू
सत्त्व रजस्तमो गुणालकु, निर्गुणब्रह्मग भासिल्लु भुवनेश्वर ॥विश्व॥

227)नटभैरवि - चापु ताळम्

त्रिजगमुलु त्रिगुणभाव मोहितमुलट ॥त्रिजग॥
त्रिगुणालकु विलक्षणुडवैन श्रीहरिदासाश्रित ॥त्रिजग॥
नीप्रकृति मायचे जनिंचिन जीवुलु सत्त्व रजस्तमो
गुण प्रभावालचे निज स्वरूपाल सरिगा तॆलियलेरुगा ।त्रिजग॥

228)बलहंस - जंपॆ ताळम्

हरिदासुलके तॆलियु नी तत्त्वमु परम तत्त्वमु ॥हरि॥

कर्म फलमुल धर्म फलमुल वलदनि निनु ध्यानिंचु ॥हरि॥
त्रिगुणान्वित रूपाल राजिल्लु दैविक मायनु
अतिकरिंच साध्यमा सिरि विरिंचि शिवादुलकैना ॥हरि॥

229)कनकांगि - आदि ताळम्

नीकन्ना घनमैन सदाश्रयमु लेदु ऎंदु वॆदिकिना ॥नीकन्ना॥
नीशरणु जॊच्चिन सुरनरवानर हरिदास जनुलकु ॥नीकन्ना॥
पापुलु विवेक शून्युलैन विमूढुलकु मायामोह बद्धुलै
असुर भावमुतो अलरु अज्ञान पाश बद्धुलकु ऐच्चोटनु ॥नीकन्ना॥

230)देवमनोहरि - आदि ताळम्

नीकु मक्कुवैनवाडु नी दासुडु श्रीहरिदासुडु ॥नीकु॥
ध्यानयोगान निश्चल भक्तितो कॊलुचु ज्ञानिये ॥नीकु॥
आर्तुलु जिज्ञासुलु अर्थकामुलु ज्ञानुलनु चतुर्विधाल
चॆलगुशरीर धारुलु ध्यानिंतुरु निन्ने ओ भक्तवरद ॥नीकु॥

231)रघुप्रिय - त्रिपुट ताळम्

नीदासुडु श्रीहरिदासुडु पॊंदेनु निन्ने निरतमु ॥नी॥
एये नाम रूपाललो एये विधाल उपाशिंचिना ॥नी॥
जन्मलॆन्नो ऐत्तितुदकु ज्ञानियै वासुदेव
सर्वमितियनि आत्म स्वरूपमु नॆरिगिनवाडे ॥नी॥
परात्परुडवु नीवेयनि परम भागवतुलु परिपरि
पलुविधाल प्रकीर्तिंचि पॊंदु फलालकु अधिष्ठानरूप ॥नी॥

232)कानड - रूपक ताळम्

उपाधि रहितुडे विष्णु तत्त्वमुलो लीनमैन श्रीहरिदासुडु ॥उपाधि॥
ब्रह्ममंद्रु ब्रह्मविदुनि, जीवन्मुक्ति देहमुक्ति यनु तात्पर्यालु
इल चूपरुलके गानि, आत्मज्ञान निष्ठापरुडु नित्य मुक्तुनिकि लेदटने ॥उपाधि॥
जलाशयमुलो सम्मिळितमैन जलमु, महाकाशमुलो कलिसिन
घटाकाशमु, भानु द्युतिलो लीनमैन वॆलुगु प्रद्योत मवनटुल ॥उपाधि॥

233)श्रीरागं - आदि ताळम्

निनुपॊंदिन नाकिक पॊंदवलसिन देमिरा ॥निनु॥
राम रघुराम सीतामनोभिराम श्रीराम ॥निनु॥
परिमितमु अत्यल्पमु अगुपडुनदंत, शाश्वतानंद
परब्रह्मवु नीवुंड अनंतमू अनल्पमू उत्कृष्टमैन ॥निनु॥
सुखमेदिरा नीसेवचेयु सौभाग्यमुकन्न, निन्नरयनि
ज्ञानमु शून्यमु सुज्ञानज्योतिर्मय श्रीहरिदासार्चित ॥निनु॥

234)सौराष्ट्र - आदि ताळम्

उपनिषत्तुल प्रदिपादितमैन ब्रह्मवर्णनमु नीके चॆल्लुनुरा ॥उप॥
ऎंतुन्ना असंतृप्तेगा निनु पॊंदुटे निधानमु
पुनर्जन्म रहित पॆन्निधानमु नी दिव्य दर्शनमनेरु ॥उप॥
ऊर्ध्व मध्य अधो लोकाल विस्तरिंचिन सच्चिदानंद अद्वैतमु
अनंतमु अनवरतमु अनन्यमैन हरिदासुल अप्रमेय वरद ॥उप॥

235)विजयवसंतं - जंपॆ ताळम्

मूडु लोकाल मुंचि तेल्चु मूलाधार मूर्तिवि नीवे ॥मूडु॥

मूडु नाळळ मुच्चटकै मुप्पतिप्पलु पडवलसॆ निन्नरयक
मूडु मूरुतुल वॆलिसेटि मूल विराटुवु नीवे गदरा श्रीहरि ॥मूडु॥
मूडु गुणाल नलरनि मुच्चटेदो तॆलुपरा ई हरिदासुनिकि
मूडडुगुल मुच्चटगा मुज्जगाल कॊलिचिन त्रिविक्रम विक्रमोपेत ॥मूडु॥

236)हंसध्वनि - रूपक ताळम्

विनुतिंचेरु विबुधुलु नी स्तोत्रमे जीवन्मुक्तियनि ॥विनु॥
विनुत गुणशील श्रीहरिदास विभो नीमाय नरय ॥विनु॥
सूर्य चंद्रुले नी चक्षुवुलुगा वॆलुगुलकु
वॆलुगुगा वॆलुगॊंदु वेंकटेश ईश श्रीश ॥विनु॥
निनु गुर्तिंचुटे तत्त्वमु निनु गमनिंचुटे
ज्ञानमु, सद्गति नीवे यनिपलुकु वेदादुलु ॥विनु॥

237)वलजि - चापु ताळम्

उन्नदंत ऊडुनु उंडियु उंडनटुले ऊसरमु वलॆ ॥उन्न॥
ऎन्नियुन्न उन्नतुडैन ऊर्जितुनि उनिकि अरयनिदे ॥उन्न॥
अन्निटा युन्न अनंतुनि अडुगडुगुना अर्थिंचनिदे
ऎन्नगरानि ऎगुडु दिगुडुलु तप्पवुगा देवतलकैना ॥उन्न॥
बलिमि युन्न कलिगि युन्न कलुगुनु कडु कंडकावरमु
चॆलिमि युन्न श्रीहरि दास नुतुनि चॆलिमि युन्न चॆलगु सुखमु ॥उन्न॥

238)बेहाग् - आदि ताळम्

अखंडानंदं एकं अंदुरे निनु निर्गुण निखिलेश ॥अखंडा॥
नी दासुडु ई हरिदासूडु अनिशमु अनुभविंचु ॥अखंडा॥
मायलो पुट्टिपॆरिगि, चिक्कुनु मायलोने मनुजुडु,
माय वदलिनगानि कनलेरु घनमगु नीगरिम नीख्याति ॥अखंडा॥

239)जनरंजनि - आदि ताळम्

कनुल कनपडु कळले ज्वाललुगा चॆलगु ज्योतिस्स्वरूप ॥कनुल॥
वीनुल विनिपिंचु प्रणवनादमे सर्व व्याप्त महाकाशमु ॥कनुल॥
हरिदासुलु चेयु अष्टांग योगसाधन वलनकलुगु
जीवन्मुक्तिये महदानंद मनेरु ब्रह्मानंद मनेरु ॥कनुल॥

240)खरहरप्रिय - चापु ताळम्

भक्ति भुक्ति मुक्तुलॊसगु हरिदास विभुडवे ॥भक्ति॥
दॊरिकॆरा नीपूज सेयु भाग्यमु
अदे नाजन्मांतर संस्कारमु ॥भक्ति॥
प्रणव नादमु विनग विनग चित्तोपरति कलिगॆने,
तदितर शब्दमुलु कर्ण कठोरमु लायॆरा श्रीहरि ॥भक्ति॥
निरर्थक चदुवुलु चदिवि कूटिकै चमटओड्चुट कन्न,
इल हरितत्त्व विद्यनु उपासिंचिन मेलु कडुमेलु ॥भक्ति॥

241)दर्बार् - आदि ताळम्

ऎंदु जूचिन अंदु साक्षात्करिंचु सर्वज्ञुडवे ॥ऎंदु॥
कडु कानवच्चु ब्रह्ममु, दृश्य प्रपंचमुन विरक्ति चेंदिन गानि,
नडचि नडचि एडुकॊंडलु ऎक्किन गानि कानरानि एडुकॊंडल स्वामि ॥ऎंदु॥
विनग विनग गानि प्रणवनादमु चॆवुल जॊरपडदु कर्णाटकमु गादु,

गम्यमगु ब्रह्म स्वरूपमु, परमुपै भक्तिगल हरिदासुलकु ॥ऐंदु॥

242)कर्णरंजनि - जंपे ताळम्

ज्ञानियगु उत्तमुडु पुरुषुलंदु पुण्य पुरुषुडु ॥ज्ञानि॥
अंतश्शुचि लेनि पूजलु चेयनेल, जात्यंतर भेदमेल
अरयरो सरिग सर्वत्र सर्वुलु सर्वेश्वर स्वरूपुलनि ॥ज्ञानि॥
वर्ण विचक्षण चेयक मनसु नभवुनिपै निलिपि,
सरि दैवमु हरिदास दैवमे परम लक्ष्यमनरो ॥ ज्ञानि॥

243)बेगड - आदि ताळम्

आत्मसाक्षियगु हरिदासाश्रयुडे सर्वत्र व्यापिंचेने ॥आत्म॥
ब्रतुकु नित्यमनि भ्रमिंचुटेल, पुट्टुट गिट्टुटके गदा ॥आत्म॥
उदरमु पोषिंचि तुदकु उपवासमुलचे शुष्किंप जेसि
तनुवु विडचुट तगदंदुरे, सरिग अरयरे अजस्रमु ॥आत्म॥

244)चिंतामणि - आदि ताळम्

तत्त्वज्ञानमरय सत्साधनमु साकेतराम भजनेग ॥तत्त्व॥
ब्रह्म स्वरूपमु तनुवु, वायुवु प्राणमु, सूर्य चंद्रुले
चक्षुवुलु, अग्नियै दिव्य तेजस्सुगा परगु पुरुषुडे ब्रह्ममनु ॥तत्त्व॥
निखिलेशुडु निर्विकारुडु निरंजनुडै रंजिल्लु हरिदास विनुतुडु,
निखिलात्मलंदु निजसाक्षिगा राजिल्लु श्रीमहा विष्णुवे ब्रह्ममनु ॥तत्त्व॥

245)मंगळकैशिक - त्रिपुट ताळम्

परमपुरुषुनि परमपदमे मोक्षप्रदमु ॥परम॥
श्रुति प्रमाणमै पुनरावृत्ति रहितमैनदे ॥परम॥
अरमरिक लेक अमरि युंडे अन्निटयंदु
सर्वोपगतुडे सकलमु नडुपु नगधरि ॥परम॥
मूडु वन्नॆललो ऒप्पु, आकु वक्क सुन्नमु संगममैनने
रक्तवर्ण मलरु नटुल, त्रिगुणमुल रंजिल्लु श्रीहरिदास विभुनि ॥परम॥

246)लतांगि - रूपक ताळम्

श्रीहरि चरण सान्निध्यमु सद्भक्तिवलन संभविंचु ॥श्री॥
वेदोक्तमुलैन यज्ञ यागादि कर्ममुल सार्थकमु चेयु ॥श्री॥
सप्ताक्षर प्रकृतिलो ऒप्पु ॐकारनाद स्वरूपुनि
ऎरुगरे, इहपर फलमुलकु सोपान मार्गमगु ॥ श्री॥
सप्त स्तोत्रमुलनु पॊंदिक जेसि, चित्तमु निलिपि ध्यानिंचरे
ब्रह्म साक्षात्कार सिद्ध्यर्थमगु श्रीहरिदास नाथुनि ॥श्री॥

247)मलहरि - आदि ताळम्

वेद शास्त्रेतिहासालकु वॆनु बलमु वेंकटाद्रे ॥वेद॥
वेदाल भाष्यमैन परमेश्वरुडे देवदेवुडु ॥वेद॥
मनो विकारालुलेनि समाधि सुषुप्तुलंदु
अचंचल योगिकि साक्षात्कारमगु सद्ब्रह्मे ॥वेद॥
तत्त्वप्रकाशुनि गुर्तिंचि फलमॆरिंगि मनो विकारालकु
विवशुडु कानि योगि हरिदासुडरयु आत्म स्वरूपमे ॥वेद॥

248)नारायणि - खंड चापु ताळम्

इकनैना दयरादा यनि प्राधेयपडु वाडनुरा ॥इक॥

हरिदासुनि भक्तिये सल्लक्षण मंटिने लक्ष्मण सेवित ॥इक॥
पञ्चजूचि मॆच्चुटेल, पञ्चये लोक मनुटेल पञ्चमीद
इञ्चकमु पडनेल पञ्चविल्तुनि कन्न चक्कनय्याने कॊलुतु ॥इक॥
पंच भूतात्मक, परमेश परात्पर नीयंदु उल्लमुंचि
नी स्वरूपमु गुर्तिंच गल ज्ञानमुनकै योग साधनचेतु ॥इक॥

249)रागवर्धिनि - आदि ताळम्

कावलसिन देमि चिदात्मकमैन नी परतत्त्वमु प्राप्तमैन ॥कावल॥
दुःखमुतो जन्मिंचु, दुःखमु पॊंदु, बॊंदि पॊरलिन वरकु
पुट्टेडु दुःखमुतो मरणिंचु मनुजुनकु मार्ग बंधुवे नीवु ॥कावल॥
चरिंचुना श्रीहरियाज्ञ लेनिदे पंचभूतात्मक प्रपंचमु,
पुडमि पालिंचु हरिदास नुतुंडुंड उत्सव विग्रहंबुलेल ॥कावल॥

250)आरभि - खंड चापु ताळम्

नाचित्तमु तल्लडिल्ल ऊरक जूचेदि नीकु न्यायमा ॥ना चित्त॥
ऎंत पोषिंचिना बॊंदि शाश्वतमा, उंडेदि कॊलदि कालमे गद
उन्न वित्तमु नित्यमा, नीवैन धर्ममॊकटे सत्यमनि नीपै तगिलिन ॥नाचित्त॥
बॊम्म नाडिंचु ब्रह्मय्य ओ रामय्य नी मुञ्चटकेमि
नीवाडिंचु आटलो अलसिन नीचरण दासुड श्रीहरिदासुड ॥ना चित्त॥

251)षण्मुखप्रिय - आदि ताळम्

चूडमुच्चटनि कीर्तिंचिरि नीरूप विभवसंपदल ॥चूड॥
रामदासन्नमय्य त्यागराजादि हरिदासुलु ॥चूड॥
इट्टिरूपमु कलवाडवनि ऊहिंचिनने स्मरण रूपमगु
शुभरूपान कनिपिंचुनभव सद्गुणस्तोम सद्रूपानंद ॥चूड॥
मनसुनिलिपि ए रूपमॆट जूचिन नी रूपमेरा
भवहर परात्पर हे जगद्प्रभो पाहिमाम् ॥चूड॥

252)बेगड - आदि ताळम्

हरियनुवाडे अखिलांडालकु निधानमु सन्निधानमु ॥हरि॥
हरिदासस्वांत सात्त्वतांपति सच्चिदानंद परब्रह्मये ॥हरि॥
गतजन्म वासनलचे कलुगु कोरिकलकतन अज्ञान बद्धुलै
कॊलिचेरु जनुलु दैवमुल, कनलेरु श्रीमन्नारायणुनि ॥हरि॥
ए दैवमुनु भजिंचिन, भक्तितो तलचिन, आ देवता रूपान
सत्फलिताल संप्राप्तिंप जेयु सदयहृदय दयाकर ॥हरि॥

253)शंकराभरणं - रूपक ताळम्

अरसि हरिनि अर्चिंचिन पॊंदेरु भवहरुडु हरिने ॥अरसि॥
पूनि देवतल पूजिंचिन पुण्य लोकमे प्राप्तिंचुनट ॥अरसि॥
अव्यक्तमु निर्विकारमु निरुपमानमु नी रूपमु
कांचलेरु अविवेकुलु, बुद्धिहीनुलु अग्राह्युडवंद्रु ॥अरसि॥
अव्ययुडु जन्म रहितुडगु श्रीहरि दासजन रंजकुनि लोने
कप्पियुंडु योगमुलु, तेट तॆल्लमुग तॆलियदॆव्वरिकि ॥अरसि॥

254)देशि - आदि ताळम्

सर्वमुसर्वज्ञुनि अधीनमनु ईहरिदासुनि अनुग्रहिंचरा ॥सर्व॥
सकलजीवमुलु जन्ममॆत्तिनदि मॊदलु काम क्रोधोद्भव शीतोष्ण

सुखदुःख द्वंद्वालंदु तगिलिसरिग दारितॆन्नु तॆलियरुगा ॥सर्व॥
जगतिनिजन्मिंचि शरीरालु चालिंचि जन्मिंच बोवुवारिनि
ऐॆरिगिन ईश्वर निनुतॆलिय तरमा देवदेवुलकैना ॥सर्व॥
अज्ञानजनित मायलोतगुलु जनुलकु नी मायतॆलिय
तरमा वेंकटपति, ऐॆंचग अज रुद्रादुलकैना ॥सर्व॥

255)मांड् - चापु ताळम्

ननु मन्निंचि भवदीयुनिग भाविंचरा भवहर ॥ननु॥
पुण्य कर्मलचे पुनीतुलैन पुण्युलु मानावमान
द्वंद्व विमुक्तुलु कॊलिचेरुरा राम कोदंडराम ॥ननु॥
जननमरण जराभाराल निवृत्तिकै शरणन्न श्रीहरिदासुलु
निन्ने तॆलिसेरुरा तारकराम श्रुति प्रमाण परब्रह्म रूप ॥ननु॥

256)शिवरंजनि - आदि ताळम्

ननु वेरुगा चूचिन, ने निमुषमैन सहिंपजाल ॥ननु॥
श्रीहरि दासजनुलु समाहित चित्तुलेग
अंत्यकालान तथ्यमुग तॆलिसेरुरा निनु ॥ननु॥
निनु अधिभूतुनिग अधिदैवमुग अधियज्ञुनिग स्वकीय
आत्मलंदु ऐॆरिंगिन नी चरणरविंद दासुंडनेग ॥ननु॥

257)हिंदोळवसंतं - खंड चापु ताळम्

ना दुर्गति चूचि करुणिंचरा कौसल्यराम ॥नादुर्गति॥
नाशमुलेनि निर्गुण परब्रह्म उत्कृष्टमैन
सत्पदार्थमे नी तत्त्वमनि निनु कॊलिचेरुरा ॥ना दुर्गति॥
शरीरमुलतो अन्वयिंचि युंडु जीवभावमेग
आध्यात्ममु, अधिष्ठान आत्मये अनंतश्री श्रीहरि ॥ना दुर्गति॥
चतुर्विध भूताल जनन कारणमैन श्रीहरि दासजन पोषक
काममुनु वीडुटये कर्म, अदिये निन्नॆरुगु साधनकर्म ॥ना दुर्गति॥

258)कल्याणि - चापु ताळम्

शरीरमु जीवमुलनु भावालकु अतीतमैन आत्मतत्त्व प्रबोधक ॥शरीर॥
जनन मरणाले स्वभावमुग नॊप्पु शरीरमु अधिभूतमु
अन्नि भूतालकु शक्तिनि प्रसादिंचु प्रभुवर वरप्रदायक ॥शरीर॥
शरीरमंदुन्न जीवुडु सदा संस्तुतिम्चु सरिदैवमु
अरय जगद्वासना रूपमैन जीवभावमे अधिदैवमु ॥शरीर॥
सर्वदा तत्त्वमसि यनि प्रबोधिंचु प्रभविष्णो
सर्व देवतल अधिष्ठात सर्व श्रीराम्तर्गत हरे
सर्वदा अधियज्ञमु श्रीहरिदासुल मनुगडवे ॥शरीर॥

259)सिंहेंद्रमध्यमं - आदि ताळम्

हरिदासहृद्य गम्युनि कमलनाभुनि कॊनियाडरे ॥हरि॥
हरि हरि यनि तलचुचू तनुवु वीडु साधकुडु चेरुनुने ॥हरि॥
सर्वकाल सर्वावस्थललो अव्ययुने अर्चिंचुचु अंत्यान
सर्वेशुने ध्यानिंचुचू देहमु वीडिन ब्रह्म भावमंदेरु ॥हरि॥
परात्परुने प्रस्तुतिंचुचू बॊंदि पॊरलिन वरकु
परेशुनि तप्प, अनित्य भावाल वासनलनु वदलरे ॥हरि॥

260)हंसनादं - आदि ताळम्

नी दय नाभाग्यमनि नॆर नम्मितिने रामय्य ॥नी॥
ऒंटि कंबमु इल्लु शरीरमु, जीवुडॊकडे गृहमेधि, सप्त प्रकृतुले
इल्लांड्रुगा अलरु शरीरांतर्गत जीवात्म, परमात्मवे ओ अव्यय ॥नी॥
सनातन सारथि, आदि देवुडवनि हरिदासुलु कॊलुचु गुणरहित,
जगत्तंतकु अतीतुडवु अष्टदळमुलकु आधारमैन अक्षय ॥नी॥

261)हरिकांभोजि - खंड चापु ताळम्

त्रिकरण शुद्धिगा नी दासुडनेरा नॆनरुंचरा नापै ॥त्रिकर॥
उपवास व्रतमु पूनिन नेमि, कंदमूल फलमुल भक्षिंचि
वनांतर सीमल वसिंचिन नेमि, चित्त शुद्धितो नीतत्त्व मॆरुगवलॆ ॥त्रिकर॥
चिम्मचीकटिलो ऒंटिगा नुन्ननेमि चित्तमु निलुप तरमा
श्रीहरिदासवरद सदानीतारक नाम स्मरणे शरण्यमु ॥त्रिकर॥

262)कल्याणवसंतं - त्रिपुट ताळम्

आदिचूड नलविकानि वाडवटने वारिजदळ लोचन लोकनाथ ॥आदि॥
आदिनेपुट्टि अलविकानि प्रभुवैतिवि गादे प्रपंच मंतटिकिनी
आदिपुरुष हरि अच्युत अजहरादुलकु अंदनि अव्यक्त ॥आदि॥
निखिलमुनकु निधानमु नीवंटिने नादात्म नाद ब्रह्मानंद
चेतनाचेतन भूतालकु मूलमंटिने श्रीहरिदास सनाथ ॥आदि॥

263)बिलहरि - आदि ताळम्

हरिनीनाममु परमपावनमु वॆनुबलमु वेल्पुलकुनु ॥हरि॥
हरिदासानंद धामनिन्ने अनवरतमु आराधिंतुनु ॥हरि॥
जलमुलो कलिसिन उप्पु, मंट गलिसिन कप्पुरमु, कानरानटुल
परमात्म जीवात्मल एकते अनंतश्री, श्रीशनिन्निक आश्रयिंतुनु ॥हरि॥
षट्चक्रमुल निंडियुन्न शरीरमे इल्लु, अंदुकु आधारमैन
ब्रह्मांडमनु ऒंटि कंबमुनु निलिपिन जीवात्मवट, परमात्मवु नीवे ॥हरि॥

264)धन्यासि - आदि ताळम्

ब्रह्मेंद्रादुलु सत्यमैननिनु सदा सन्नुतिंचॆरु वेंकटनाथ ॥ब्र॥
एकाकृति, प्राकटमुग श्रीहरिदासुलु कॊलिचेटि करिवरद ॥ब्र॥
ऎल्लॆडल निंडिन आकाशमे नीवैन परब्रह्म, चूड कानरावु,
विन नोचुकोलेमु विंदामंटे नीपलुकु, पिलिचिन पिलुपंददु ॥ब्र॥
चित्त शुद्धितो निश्चल समाधि पॊंदिन कलुगु अनिर्वचनीय
आनंद मूलमौ अव्यय, प्रशांतिधाम परंधाम ॥ब्र॥

265)सौराष्ट्र - त्रिपुट ताळम्

कार्य कारण स्वरूप सर्वेश स्मरमाम्यहम् ॥कार्य॥
नीना भेदमेल ओ राम नीदभिन्न रूपमे नेनुकद ॥कार्य॥
पुट्टे तनुवु, अज्ञानमुचे कलुषमायॆ चित्तेंद्रियालु,
जन्ममॆत्त वलसिन पनिलेदु निनु तॆलिसिन तनुवु धन्यमट ॥कार्य॥
अवस्था त्रयमुलेक संपूर्ण स्वरूपान चॆलगु श्रीहरिदास विनुत
नीवे सर्वमु, निन्नरयु निरुपम ज्ञानमे निनुजेरु सन्मार्गमु ॥कार्य॥

266)पाडि - खंड चापु ताळम्

संसार तापमुनु ग्रसिंचु श्रीहरि दासजन रंजक ॥सं॥

परिपरि जनन मरणमुल पालैनट्टि ज्ञानशून्युड ॥सं॥
निनु ऎंदेंदो वॆदिकिनंत मात्रान कनिपिंचु वाडवा
सर्व जीवुलकु आत्मीयुडवै युन्न अनंतात्म परंधाम ॥सं॥

267)मुखारि - आदि ताळम्

कानरावु विनरावु एलको, निनु तॆलियु ज्ञानमीयरा राम ॥कान॥
सर्वचक्षु श्रवणेंद्रियालु नीवेगद मरिनाकु ईति बाधलेल ॥कान॥
अज्ञान तिमिरमुनु पारद्रोलु ज्ञान प्रकाशमु प्रसादिंचु
जगद्गुरो, निनु गानक ब्रह्ममु नॊंदलेडी श्रीहरिदासुडु ॥कान॥

268)छायातरंगिणि - त्रिपुट ताळम्

अद्वैत स्वरूपुडवे आदिदेवुडवे निन्नरयगा ॥अद्वैत॥
प्रियमारग श्रीहरिनि कॊलिचिनकॊलदि, परमोत्तम
वेदवेदांत तत्त्वज्ञानमु तॆलियजेयु तत्त्वप्रकाश
नीनामस्मरण मात्रानने नीवु परिपरि कानवच्चु ॥अद्वैत॥
अवगत मगुना आध्यात्म विद्यातीतहरि नीदुलीललु
निरंतर ध्यानयोग तत्परुलैन हरिदासुलकु ॥अद्वैत॥

269)रीतिगौळ - आदि ताळम्

चित्तमु कलुष रहितमै आत्मोन्मुख मैनंतने ॥चित्तमु॥
लभिंचु नटने श्रीहरि दर्शनमु श्रीहरिदासुलकु ॥चित्तमु॥
प्रतिदानि प्रतिबिंबमु प्रस्फुटमौने घटमुलो जलमुन्न ,
कानरादु नीरु लेनिदे, निजमंतिये जीवात्म परमात्मल भेदमु ॥चित्तमु॥
जीवुडॊकडे कडु देहमुलु धरिंचुने, तनुवुल तोटि संबंधमुलेनि
जीवुडु परमात्मलो एकमगुननु अद्वैत भावमे अद्वितीय तत्त्वमु ॥चित्तमु॥

270)तोडि - आदि ताळम्

जीवन्मुक्ति निच्चु ॐकार प्रणव नादध्वनि विनरो ॥ईजीव॥
जीवन्मुक्तुडै आत्म स्वरूपमै सौख्यमंदुनु जनुडु
निजात्मयगु निरंजनुनरसि आराधिंचुडी आर्युलारा ॥जीव॥
व्यापिंचि युंडॆने मृत्तिक घटकुड्यालंदु,
अंतट निंडियुंडॆ निर्मलतत्त्व स्वरूपुडैन
श्रीहरि दासावनुडे शरण्यमु सर्वदा शरण्यमु ॥जीव॥

271)झंझूटि - चापु ताळम्

हरितत्त्व स्वरूपमु तॆलियनि चदुवुलेल ॥हरि॥
नीटनीड जूचिभ्रमिंप तगुने, तनुवुनुसदा
आश्रयिंचिन जीवुडे परमात्म यनि प्रबोधिंचु ॥हरि॥
आत्मानात्मल अन्वयमु ऎरुगु बुद्धिवलन
हरिदासाराध्युनि अरयरो अक्षर परब्रह्मग ॥हरि॥

272)साम - रूपक ताळम्

सद्गुरुवे सद्ब्रह्म स्वरूपमनि सेविंचरो ॥सद्गुरु॥
आत्मगा अलरु हरिदास वरदुनि अरयरो ॥सद्गुरु॥
आश वीडिन वाडे बंध विमुक्तुडट, विरुगुमनमु
विषय वासनल नुंडि, अनिप्रबोध चेयु गुरुविललो ॥सद्गुरु॥
आत्म रूपुलै मंगळं परमगति यनि आनंद पडुटे मुक्ति,

सदा शिवोहं यनु मुमुक्षुवुलकु सद्गति चूपु गुरुविललो ॥सद्गुरु॥

273)देशि - आदि ताळम्

ऍंदेंदो हरिनि वॊदिकि वॊदिकि वेसारुटेलो ॥ऍं॥
जीवुलंदरिकि सन्निहितमैन आत्मयुंड ॥ऍं॥
अत्म रूपमु हृदयान कनि कॊलुचुटये
सर्वात्मनु चेरु सन्मार्गमु, अज्ञानुलै ॥ऍं॥
सुनिश्चल ध्यानमु सुस्थित प्रज्ञतो वॊदिकिन श्रीहरिदासुनिकि
कानवच्चु परब्रह्म तत्त्वमु, ब्रह्म संदर्शनमुकै ॥ऍं॥

274)गौरि - आदि ताळम्

ब्रह्म साक्षात्कारमु कलुगु निक्कमु ॥ब्रह्म॥
चित्तमु कलुष विदूरमै आत्मोन्मुखमैन ॥ब्रह्म॥
तनुवुलॆत्ति रानुन्न मृत्युवुनु अड्डुलेवुगा,
मृत्युवुनु जयिंचिनने कलुगु मोक्षमु ॥ब्रह्म॥
सत्यमु शुद्धमु ब्रह्ममॊकटे,
प्रकृति स्वभावमुलचे वॆलुगुवस्तु
संपदलन्नि ब्रह्म स्वरूपालनु हरिदासुलकु ॥ब्रह्म॥

275)पंतुवराळि - खंड चापु ताळम्

ज्ञानातीत, ब्रह्म पदमु श्रेयो मार्गमु नीवेरा ॥ज्ञा॥
अक्करकु रानि चदुवुलॆन्नि चदिविन नेमि,
परमशांति निच्चुचदुवुले निन्नरयु चदुवुलु ॥ज्ञा॥
ई हरिदासुनि चित्तमुनु ब्रह्मंदु ऐक्यपरचु
विद्यये, भक्ति मुक्तु लिच्चु ब्रह्म विद्य अनेरु ॥ज्ञा॥

276)कुरंजि - आदि ताळम्

अज्ञान जन्य बंधालनु भंजिंचु ज्योतिर्मूर्ते ॥अज्ञान॥
कर्म फलमुनु पंचु परम पुरुषुडवु नीवेरा ॥अज्ञान॥
बाह्येंद्रिय ग्राममुनकु अग्राह्य, सर्वज्ञ सर्वतोमुख
विभुडवु विश्वशासन विभुडवु व्यक्ताव्यक्त स्वरूपुडवे ॥अज्ञान॥
अंत्य कालान योग निष्ठचे भृकुटि मध्यन आयुवु निलिपि
निन्ने सरिग स्मरिंचु हरिदासुडु अंदेनु सरगुन सरिग निन्ने ॥अज्ञान॥

277)वाचस्पति - आदि ताळम्

नित्यमु योगमॊनर्चु निश्चलमतिकि सुलभुडवे ॥नित्य॥
विरागुलु यतुलंता, चेरु परमनिधानमु नीवनि
अक्षर परब्रह्म यनेरुनिनु वेदार्थ विदुलंत ॥नित्य॥
परब्रह्म वाचकमैन ॐकारमुने ध्यानिंचुचू
तनुवुलुवीडु श्रीहरिदासुलु चॆलुवुग चेरेरुरा निनु ॥नित्य॥

278)ईशामनोहरि - चापु ताळम्

जीवन्मुक्ति निच्चुदुवनि अनिशमु अर्चिंचेरु हरिदासुलु ॥जीव॥
इंद्रियालकु अव्यक्तमुगा गोचरिंचु सद्ब्रह्मवे ॥जीव॥
भक्तितोड निन्नर्चिंचुटे सद्गतिप्रदमु सदानॆंच
रक्तितोड नीसद्गुण संकीर्तने कैवल्यप्रद ॥जीव॥

279)जनरंजनि - आदि ताळम्

कैवल्यमु पोंदेरु सदानिनु नुतिंचु हरिदास जनुलु ॥कैव॥
बीजाक्षरालु हृदयान स्थिरपरचि स्थिर समाधिनि ॥कैव॥
युग सहस्रमु ब्रह्मकु पगलुकाग समस्त स्थावर जंगम
प्रकृति जनिंचुनट, लयिंचुने युग सहस्रमु रात्रिकाग
भूर्भुवादि भुवनालु, चतुराननुडैन ब्रह्म,
लोकुलु परिभ्रमिंत्रु जननमरण चक्रान,
ब्रह्म भावनापरुलु निक्कमुग निरुपमान ॥कैव॥

280)कानड - आदि ताळम्

ब्रह्ममोकटे परब्रह्ममोकटे प्रमुखमु ॥ब्रह्म॥
ब्रह्म विदुलु हरितत्त्वमु अक्षरमंद्रु
त्रिकालमुल अच्युतमु अनंतमनि नुतिंचेरु ॥ब्रह्म॥
ऎवनिलो नुंडु ऎल्ल प्राणुलु, ऎल्लॊडल आवरिंचिन
हरिदास विभुडु भक्त सुलभुडु बृहदीशुडेग ॥ब्रह्म॥

281)बलहंस - रूपक ताळम्

अव्यक्तमैन परमागति वंदुरु हरिदासुलु ॥अव्यक्त॥
योगि हृद्यान गम्य सन्निधानमु नीवेरा
परम निधानमु चिन्मयानंद चिद्रूपमौ ॥अव्यक्त॥
अस्वतंत्रुलु जीवुलु, जनन मरण चक्रमुल
परिभ्रमिंचु, बुद्धि जाड्ज्य प्रेरित विमूढुलकु ॥अव्यक्त॥

282)फलरंजनि - चापु ताळम्

पंकजनाभुनि पदपंकजाल पट्टिनने बंधविमुक्तगु ॥पंक॥
स्वयंप्रकाशमु अकलंकषमु, अग्निर्ज्योति, पगलु तॆलुपु
वर्णमुलतो नॊप्पु शुक्ल पक्षमुवोलॆ सुज्ञान ज्योतिर्मूर्ति ॥पंक॥
ज्ञान विज्ञानान्वित चित्तमुतो तनुवुलुवीडु ब्रह्मविदुलु
पोंदेरु, श्रीहरिदासुलु संपूजिंचु पदमुत्तममुने ॥पंक॥

283)श्रीरागं - चापु ताळम्

जन्मकु कारणमु संसार हेतुवनि तॆलियरो ॥जन्म॥
यज्ञ दान तपो ध्यानादुलु ऒसगु कर्म फलमुले ॥जन्म॥
अज्ञान पूरित चित्तमुतो तनुवुनु वीडु साधकुडु
तिरिगिजन्मिंचु, तॆलियडु श्रीहरिदास हृदयेशुनि ॥जन्म॥
काम पंकिलमु, अंधकार बंधुरमु पोग, रात्रिनलुपु
वर्णमुलतो नॊप्पु कृष्ण पक्षमुवोलॆ दुर्निरीक्षणमै ॥जन्म॥

284)वराळि - चापु ताळम्

नीकेमि कॊरत ना पोगड्तलु ऒक लॆक्कया ॥नी॥
अकुंठित अनन्त भक्तुलु पोगडग निन्नरवतमु ॥नी॥
निनु तॆलिसिन अशुभमुलु समसि पोवु, कलुगुनिर्मल ज्ञानमु
निनु तॆलिसिन उत्तमोत्तम सच्चिदानंदमु कलुगुनंदुरे ॥नी॥
नीनामस्तुति प्रसादिंचुनट ब्रह्मानुभव सद्गति
परमनिधानमु, संतापहर शांतिनिलयमु
नीवेयनेरु हेवेंकटपति हरिदासविनुत विमलेश ॥नी॥

285)मणिरंगु - रूपक ताळम्

आधारमु जीवुलकु अव्यक्तमैन नी स्वरूपमे ॥आधार॥
अंतटा आवरिंचिन, हरिदास नाथु नरयरे ॥आधार॥
जनन मरण रूप संसार मार्गमंदु
संचरिंतुरु मॊदलु तुदि तॆलियक ॥आधार॥
निनु तॆलियु धर्ममंदु श्रद्धलेनि नास्तिकुलु
भव बंधमुल चिक्कुकॊनि निनु पॊंदरुग ॥आधार॥

286)पुन्नगवराळि - आदि ताळम्

अंदरू नीलो उन्नारु नीवंदरिलो उन्नवुगा ॥अं॥
अंता व्याप्तमैन वायुवु, निंगिनंता
निंडिनदय्यू दानिनंटि युंडनटुल ॥अं॥
दुःखालय देहादि जगत्तुकु भूतभावाल
नीतत्त्वमु पोषिंचुट मिथ्य यनेरु
निरवधि सुखस्थानमैन नीकाड तावेड ॥अं॥
सर्व भूतालु नीलो युन्ननू भूतभावालतो
अनुबंधमु लेनि विश्वंभर हरिदासस्वांत ॥अं॥

287)पूर्णचंद्रिक - आदि ताळम्

अंदनि आदिदेव हरिदास वरद ॥अंदनि॥
अंदरु नीयंदुन्न ऎवरिकी ॥अंदनि॥
कल्पांतान जीवराशि नीदगु प्रकृतियंदु
सल्लीनमै, त्रिगुणात्मक प्रकृतिचे प्रभविंचु
मळ्ळि प्राणिकोटि यंत, ओ अनंत स्वांत ॥अंदनि॥
प्रभविंचिन प्राणिकोटि परतंत्रुलेग
तम प्रकृतिबट्टि, माया वशमै मरल
पुट्टुदुरटने वारि वारि प्रकृति बट्टि, ओ परेश ॥अंदनि॥

288)सावेरि - खंड चापु ताळम्

लोकेश केशव सर्वमु नीकु अर्पिंचुटे ना जीवित लक्ष्यमु ॥लोकेश॥
कॊरतपडेनु सद्गुण जालमु, कोप तापालुन्न क्षुभितमै
पोवुट तथ्यमु व्रतुकु तॆरुवुलु, रागद्वेष रहितमुगा ॥लोकेश॥
तॆलिसि गुरिनि, गुरुवुनु कनि ज्ञानियगुट सद्ब्रह्म विद्य,
कलुगु ज्ञानमु श्रीहरिदास वरदुनि कनु कैवल्य साधनमु ॥लोकेश॥

289)भैरवि - रूपक ताळम्

कर्म बंधालु लेनट्टि कलुष विदूर श्रीहरिदासात्म ॥कर्म॥
सृष्टि स्थिति लयरूप कर्मलंदु आसक्तिलेनि अनिवर्ति श्रीहरे,
निर्विकारि निरंजन चराचर जगत्तंतकु साक्षिवैन सर्वात्म ॥कर्म॥
नीदुनिकि गुर्तिंचु नटुल सर्व भूताल शासिंचु श्रीश ईश निखिलेश
निखिलभूत नियामक मानव मात्रुलु तॆलियरु नीतत्त्व मर्ममु ॥कर्म॥

290)सिंधुभैरवि - चापु ताळम्

हरि विरिंचि शिवादुल रूपाल परगु परात्पर ॥हरि॥
नीदु त्रिगुणात्मक मायनरय ना तरमा दयाकर ॥हरि॥
नीदुकरुण कलिगिनजन्म धन्यमगुनु, नीरु पल्लमु
ऎरुगुनटुल, वारधि कलदे नीदु वात्सल्य झरिकि ॥हरि॥

वैरभाव रहित निर्गुण नित्य मुक्तमैन निवृत्तात्म
श्रीहरिदासात्म नीदु परब्रह्म तत्त्वमु अव्ययमुरा ॥हरि॥
291)माळवि - रूपक ताळम्
हरिस्मृति कलिगिन नी दासुडु तरिंचुनु ॥हरि॥
बंध विमुक्तिकै परम साक्षि आत्मनु अरसिन ॥हरि॥
चित्तमु विशुद्धमैन उंडदु विषयासक्ति नरुनिकि,
तत्त्व ज्ञानमु कलुगु नपुडे , बडयुनु समत्व स्थिति,
चित्तोपरति प्रदमगु, निश्चल प्रशांति निलयमु नीवेग ॥हरि॥
गुणप्रवाह रूपालगु जनन मरणयुत जीव ग्रामालु
इंद्रियालु, परिच्छिन्न लिंग शरीरमुने क्षोभ परचुने ॥हरि॥
292)उदयरविचंद्रिक - आदि ताळम्
अजहरादुल वरदुडवु नीवेरा हरिदास वरद ॥अज॥
तृप्तुडगु नेमो पामरुडु ऒकपरि नीप्रकीर्ति विनि, गुणग्राहि
असंतृप्ति पिपासियगुट तथ्यमु परिपरि नीपरिकीर्ति विनिननु ॥अज॥
आत्मवंतुलगु धीरुल आत्मरूपाल प्रकाशिंचु परात्पर
उपासकुल हृदय सीमल स्वस्वरूपान चॆलगु श्रीहरिदेव ॥अज॥
293)गमनश्रम - आदि ताळम्
पद पंकजमुलके पट्टॆरु बुधुलु शुभहारतुलु ॥पद॥
परमहंसल परमनिधानमु प्रशांति धाममनि ॥पद॥
चित्तमु निरतमु श्रीहरिदास वरदुनंदे
निक्षिप्तमैन निक्कमु जन्मधन्यमु गदा ॥पद॥
स्वस्वरूप विस्मृति कर्मबंधमु कलुगजेयु जन्मकु
अनिशमु हरिपद पंकेरुह ध्यानमे तरणोपायमु ॥पद॥
294)अमृतवर्षिणि - चापु ताळम्
वाडे विज्ञुडु यॆंच स्वेच्छग नॆचट चरिंचिना ॥वाडे॥
इंटि यंदुंडि आरु शतृवुल निरोधिंचु निरागुडु ॥वाडे॥
भयपडुने जनन मरणाल गुरिंचि
एदारि संचरिंचिन इंद्रिय लोलुडु,
इंद्रियाल सरिगा अणचि आत्म यंदे
निरतुडै युन्न श्रीहरिदासुडु धन्युडु ॥वाडे॥
295)वागधीश्वरि - जंपॆ ताळम्
नी पद सेवये कैवल्य पथमु हे परात्पर ॥नी पद॥
देहमंदलि इंद्रियाल बिगिंचि
ध्यान योगान निनु तॆलियुटकु चेयु ॥नी पद॥
वेरु चिंतनलु लेक निर्विकल्प समाधितो चेयु
हरिदास वंद्युनि ध्यानमे परम ध्येयमु ॥नी पद॥
296)आनंद भैरवि - चापु ताळम्
परि परि निन्ने स्मरिंचि भक्ति प्रपत्तुलतो प्रकीर्तिंचॆरु ॥परिपरि॥
यतींद्रुलु संयमींद्रुलु सुव्रतुलु सुरलु ॥परिपरि॥
नित्यानित्य ज्ञानमु लेक चॆडेरु लोकाल विमूढुलु
मतिचॆडि प्रकृति व्यामोहमुचे, महात्मुलन्ननो ॥परिपरि॥

भूत ग्रामेंद्रिय कारण जगदधीश निन्नरसि
दैव भावमंदेरु श्रीहरिदासुलु, चिंतलु मानि ॥परिपरि॥

297)घूर्जरि - रूपक ताळम्

नी नाम चिंतनये श्रीहरिदासुलु चेयु ज्ञान यज्ञमु ॥नी॥
जन्म मृत्यु संसार तापत्रय परिहारि श्रीहरि,
अनेरु इंद्रादिदेवतल स्वरूपुडवनि कोंदरु
अनेरु ऒकडवनि देवतलंदु, सर्वतोमुख नाम ॥नी॥

298)पीलु - आदि ताळम्

आज्यमु अग्निहोत्र स्वरूपमु हवनकर्ममु नीवेग ॥आज्यमु॥
महाहवन कीलक वषट्कार मंत्रमैन श्रीहरि दासाश्रय ॥आज्यमु॥
अद्वैत भावान ज्ञानविज्ञान पूर्वक तत्त्वसाधन चेसेरु कोंदरु
पृथग्भावान जीवात्म परमात्मलु भिन्नमंद्रु मरिकोंदरु ॥आज्यमु॥

299)जगन्मोहिनि - चापु ताळम्

नी तत्त्वमुनु पोंदकोरि साधन कर्मनु आचरिंचेरु ॥नी तत्त्व॥
परमानंद, अद्वैतभाव संशोभित श्रीहरिदासार्चित ॥नी तत्त्व॥
दृश्य प्रपंचमुने परिगणिंचि कर्मलनु चेयुनट्टि
पृथग्भावान्नि वीडि निन्ने सेविंतुरे निरतमु भद्रगिरिपति ॥नी तत्त्व॥

300)सरसांगि - आदि ताळम्

कामक्रोधादि चिंतलद्रुंचु श्रीहरिदासुल अंतरात्म ॥काम॥
यज्ञसंकल्पमु मॊदलु अवबृध स्नानमुवरकु
क्रतुवु यज्ञमु पितृकर्मलन्नि नीवैन परमात्म ॥काम॥
ओषधुलु मंत्रमु आज्यमु होमाग्नि आहुतुलु
नीवेगदरा वैश्वानरुडवु ओबृहदीश्वर महादेव महात्म ॥काम॥

301)नादनामक्रिय - चापु ताळम्

मात पित धात धातकु धात रूपाल वॆलुगु वेल्पुवे ॥माता॥
निनु जेरु आकांक्ष, चेयु साधने परमाद्वैत भावमु ॥माता॥
चतुर्वेदाल ध्येयमैन ॐकारमे प्रणव नादमैन
श्रीहरिदास विनुत निनु गुर्तिंचुटे अनुपम अद्वैतमु ॥माता॥

302)नारायणि - आदि ताळम्

भावकुल भक्तितन्मयुल चेयगल श्रीहरि दासाभिराम ॥भाव॥
निनु गुर्तिंचकये वेदाध्यनमु चेयुट पृथग्भावमु ॥भाव॥
रक्षणकोरि कर्म फलमुनु कोरुचु मायामोह
बंधालबरगु पृथग्भावमु दुःखभाजमट ॥भाव॥

303)धर्मवति - चापु ताळम्

मनोभिराम सीतामनोभिराम शरणु शरणंटिने ॥मनो॥
अगम्यमु मायामयमु जगमंता, कार्यकारण
रूपान नीयंदे प्रतीतमगुने ज्ञानोदय समयान ॥मनो॥
कर्मदोष कलुषितमैन परापर प्रकृतुलकन्न
परममैन श्रीहरिदास वंद्य सुज्ञान ज्योतिर्मय ॥मनो॥

304)सारंग - चापु ताळम्

आत्म ज्ञानमु कलिगिन, कनेरु श्रीहरिदास स्वांतुनि ॥आत्म॥

सदसद् विवेकमु लेनिदे नशिंचुनु नरुनिकि
अंतःकरण रूप पूर्वापराल स्मृति ॥आत्म॥
आत्म नरयनिचो रक्तिजनिंचु पदार्थालंदु
आरोपिंचेरु विमूढुलु शुद्धात्मकु जाति
वर्णाश्रम धर्ममुलु उपाधि दोषमुचे ॥आत्म॥

305)आभोगि - आदि ताळम्

चालु चालु नीपद भक्ति, नेनॊल्ल मुक्ति ॥चालु॥
प्रसिद्ध पदार्थमुलॆन्नि प्रकटमैन नेमि दृश्यप्रकृतिनि
स्थिर पदार्थंबुगा चॆलंगु जगन्नाथुंडवु नीवुंड ॥चालु॥
देहेंद्रिय अहंकार मनोबुद्धुलचे परिवृतमैन
प्राणिकोटि हृदयांतराल अलरु हरिदासांतर्गत ॥चालु॥

306)कर्णरंजनि - आदि ताळम्

कर्णधारे भक्तियोग साधनकुलॊंगु हरिदास शरण्य ॥कर्ण॥
अहंकाररूप हृदयग्रंथिनि, छिन्नाभिन्नमु
चेयु कोदंडपाणि, दंडमु पॆट्टेनुरा नीकु परिपरि ॥कर्ण॥
निंडिनदि संसारांबुधि मनयिंद्रियालगु मकरालचे
मनयिंद्रियाल प्रत्याहार मॊनर्चि अंतःकरणाल
निर्विषयमु चेयु यतुलकु नीवेरा सदा शरण्यमु ॥कर्ण॥

307)नारायणगौळ - आदि ताळम्

सर्व नियामक सर्वेश निनु कॊलिचेरुरा ॥सर्व॥
सर्वात्म सर्वदा प्राणुल अंतर्यामिवे ॥सर्व॥
कर्म फलमुल नीके समर्पिंचि आत्मनु कर्म साक्षिगा
प्रकृतिकन्न अतीतमनुचु निर्लिप्तुलैन वारलंदरु ॥सर्व॥
देहात्मबुद्धि तॊलगि परमात्म नीदनुभूति कलिगि
ब्रह्म भावानचे भासिंचेरु सुस्थिरुलैन श्रीहरिदासुलु ॥सर्व॥

308)नळिनकांति - चापु ताळम्

इह परमुलंदु ऎल्लॆडलनुन्न परमात्म ॥इह॥
तिरिगि तिरिगि पापमुलॆल्ल पॊंदु नरुडु
निलिचि स्थिरमुग तलचिन तॆलियुनु निन्ने ॥इह॥
भग्गुमनुने कप्पुरमु अग्निनि ताकिन,
दग्धमगुनु अविद्य, ज्ञानाग्नि वलन ॥इह॥
अव्यक्तमगु प्रकृतिजीवुल नियामक
नीवे श्रीहरि दासेशुडवनि स्तुतिंचेरुरा ॥इह॥

309)कानड - रूपक ताळम्

श्रीहरिदास वरदुनि अरसिन परम योगे ज्ञानि ॥श्री॥
चलिंपनि चित्तमुतो चित्स्वरूपमु तॆलिसिन वाडे ॥श्री॥
इन चंद्रुलकु इरवैन चिदाकाशान चित्तमुंचि
परंधामुने पूजिंपरो पूतात्मु लय्येरुग ॥श्री॥
हृदय फलकान हत्तिन चित्तरुवु प्रतिम पगिदि
आलोचनलु मानि कोरि कॊलुवरो कोदंड पाणिनि ॥श्री॥

310)नागगांधारि - आदि ताळम्

आत्म शुद्धि लेनिदे व्यर्थमु उच्चरिंचिन मंत्रालन्नि ॥आत्म॥
वट्टि माटलतो परमात्म लॊंगडु कद नरुनिकि
गट्टिगा चित्तमु पट्टिन गानि दॊरकडट दॊड्डु दैवमु ॥आत्म॥
मनो बुद्ध्यहंकार गुण प्रेरितमगु आत्मचे
अलरु अथमुडु अरयडु हरिदास स्वांतुनि ॥आत्म॥

311)सूर्यकांतं - त्रिपुट ताळम्

जीवुलु चेयु कर्म फलमुल साक्षिवि नीवेग ॥जीवुलु॥
परात्पर परंधाम दिक्कु नीवेरा नाकु ॥जीवुलु॥
कर्मफल प्रदात, जगद्प्रभो जगद्पोषक,
चराचर जगत्तंतटिकी सन्निवासमु सदाश्रय ॥जीवुलु॥
सृष्टि स्थिति लय कारकुडवु नीवेरा प्रत्युपकारमु कोरक
अंदरिकी उपकार मॊनर्चु आर्तजनरक्षक ओ हरिदास सेवित ॥जीवुलु॥

312)बहुदारि - जंपॆ ताळम्

निक्कमुगा निन्ने कॊलिचेरु हरिदास जनमु ॥निक्कमु॥
कार्य स्वरूपमु कारण स्वरूपमु नीवनि ॥निक्कमु॥
रवि रूपान तपिंप जेसि वर्षाल कलिगिंचु परात्पर
अमृतमय, काल स्वरूप मृत्युवू नीवे गदरा ॥निक्कमु॥
वेदार्थ विदुलु क्रतुवुलु चेसि निनु कॊलिचि सोममु ग्रोलि
स्वर्गमुन सुखाल सॊक्केरु, कनलेरु निन्नविद्य वल्ल ॥निक्कमु॥

313)अठाण - रूपक ताळम्

नीतत्त्व साधने चेसेरु श्रीहरिदास जनतति ॥नी॥
अन्यभावन लेनि एकत्व भावान भासुरमौ ॥नी॥
निरतमु ध्यानसाधन यंदे दृढ चेतस्कुल
साधन लोनि योगक्षेमाल चक्कजूचु चक्कनय्य ॥नी॥
श्रद्धा भक्तुलतो इतरदेवतल पूजिंचु वारु
आदिदेव निनु परोक्षमुग कॊलिचेरु गदरा ॥नी॥

314)सौराष्ट्र - जंपॆ ताळम्

तत्त्व दृष्टितो आराधिंचु हरिदासुलु निन्ने पॊंदेरु ॥तत्त्व॥
निनु तॆलियनि विमूढुलु अंदलेरु यज्ञ फलमुल
निनु निजध्येय रूपान कननि कारणमुचे चॊच्चेरु
जनुलु दुस्तर संसार सागरान, नीवे गति सद्गतिवनि ॥तत्त्व॥

315)आभेरि - जंपॆ ताळम्

अंतयू नी कर्पितमेरा ने चेयुनदॆल्ल ॥अंतयू॥
पितृ देवतल पूजिंचु वारु पितृ देवतलने,
भूताल पूजिंचु वारु भूतालने पॊंदेरु ॥अंतयू॥
देवतल ध्यानिंचु दृढ चित्तुलु आ देवतलने,
निन्ने पूजिंचु हरिदासुलु पॊंदेरु निन्ने ॥अंतयू॥

316)शुद्धसावेरि - त्रिपुट ताळम्

ऎल्ल यज्ञाल भोजनमु भोक्तवु नीवेगा ॥ऎल्ल॥
ए यज्ञमु ए व्रतमु ए दानमु चेसिन ॥ऎल्ल॥
निश्चल निर्मल चित्तमुतो निवेदिंचु अर्पणमुल

सर्वत्रा परिग्रहिंचु भक्त वत्सल भद्रगिरि निलयेश ॥ऎल्ल॥
शुद्ध चित्तमुतो श्रीहरिदासुडु ऒसगुपत्र पुष्प
फलोदकाल सततमु स्वीकरिंचु श्रीविभावनुडवे ॥ऎल्ल॥

317)कन्नडगौळ - आदि ताळम्

निन्नंदेरु हरिदासुलु साधनकर्मलु सलिपि ॥नि॥
वीडुनु पापपुण्याल निच्चुकर्म बंधालु इललो
नी तत्त्वमु अरयुटे ध्येयमुग योगमु पूनिन ॥नि॥
तॊलगुनिललो शुभाशुभ द्वंद्वाल तनरु
कर्मबंधालु, शरीरमु यिंद्रियालु चेयु
कर्मलु फलकांक्ष रहितमैन तत्क्षणमे ॥नि॥

318)आंदोळिक - आदि ताळम्

सर्व भूताल समभावमु गल भुवनेश्वर ॥सर्व॥
पृथग्भावान द्वेषमे लेदंदुरे भक्तवरद
निन्नाराधिंचु सुर नर वानर वरुलंदरु ॥सर्व॥
पक्षपात मंतकन्ना लेदंदुरे श्रीहरि
एकत्व भावान आराधिंचु योगुलंदु ॥सर्व॥
साधन कर्मचेयु श्रीहरिदासुलु वसिंचेरु
नी तत्त्वमंदे, गमनिंचेरु निनु तमयंदे ॥सर्व॥

319)आरभि - त्रिपुट ताळम्

मोक्ष मार्गान सरिग संचरिंचुने परम हंस ॥मोक्ष॥
पापमुलॆन्नि चेसिन नेमि तुदकु अनन्य भक्तितो ॥मोक्ष॥
दुराचारमु मानिपश्चात्ताप चेतस्कुडैन चेरेरु
भक्तवरदुनि, श्रीहरिदास वरदुनि तत्त्वोपासनचे ॥मोक्ष॥

320)देवगांधारि - त्रिपुट ताळम्

पुडमिनि उत्तममैन मुक्तिने पॊंदेरु ॥पुडमिनि॥
पूजिंचरे पूतात्मुनि श्रीहरिदासात्मुनि ॥पुडमिनि॥
नराधमुलु पापुल गर्भाल जनिंचिन ऎट्टि वारैन,
शोकमयमु अस्थिरमैन जगतिनि जन्मिंचिन ऎट्टि वारैन
साधन कर्माचरण पूर्वकमुगा नीदु शरणु जॊच्चिन ॥पुडमिनि॥

321)चक्रवाकं - आदि ताळम्

नी दर्शनमु गोचरमगु नटने अंतरात्मकु ॥नी॥
अंतरंग मनोदृष्टि कलिगिननाडे सुदिनमु ॥नी॥
जनन मरणाद्यवस्थलु लेनि चित्स्वरूपुडवे
नी तत्त्वमंदु तन्मयत्वमु चॆंदिन नाडे ॥नी॥
जीव पोषण कलुगु जीव रसमु वलन, इहमु वीडि परमु
पॊंद श्रीहरिदासुलु ब्रह्म रसमुनकै यत्निंचिन नाडे ॥नी॥

322)छायातरंगिणि - त्रिपुट ताळम्

सुर भूसुर मुनुल युनिकिकि मूलाधार ॥सुर॥
आदिदेव अगम्यमु नीदुनिकि नीदुत्पत्ति प्रभुत ॥सुर॥
आद्यंतालु लेक नॆगडुचु निखिल भुवनावळिनि
एलु निखिलाधिपति, नीवेरा मंगळमु परम निधानमु ॥सुर॥

निन्नॆरिगिन श्रीहरिदासुल पाप विमुक्तुल चेयुश्रीकर
नीवेरा प्रशांति निधानमु ओ प्रबुधजन वंद्य ॥सुर॥
323)आनंदभैरवि - आदि ताळम्
आदिपुरुष अनादिवैन अनंत आदरिंचरा ॥आदि॥
आदितत्त्व हरिदासाराध्य दैवमु नीवे गद
जितेंद्रियुलकुनु अंतु पट्टनि अरय लेनि ॥आदि॥
बुद्धि ज्ञानमु निर्मोहमु क्षमत्वमु
बाह्येंद्रिय निग्रहमु सुखदुःख जनन
मरणालु नीदुनिकिनि अन्वयिंचवट श्रीहरि ॥आदि॥
324)कमलामनोहरि - आदि ताळम्
सर्वव्यापक श्रीमहा विष्णुरूप स्मरिंतुनिन्ने ॥सर्व॥
वनमालिनिनु वर्णिंप तरमा सिरिविरिंचि शिवादुलकैना ॥सर्व॥
भयमु अहिंस समत्वमु तृप्ति तपस्सु दानमु कीर्ति अपकीर्तुलु
भूतोन्माद भावालु नीतत्त्व संबंधालेगा हरिदासार्चित ॥सर्व॥
325)बिलहरि - चापु ताळम्
कल्पानिकि आदिवि अनादिवि नीवेरा श्रीकर ॥कल्पा॥
स्थावर जंगम रूप सृष्टिकंत
आदि कारणमैन सप्तर्षुलु मनुवुलु
नलुवुरु नीकतन जन्मिंचिरट ओजगद्पति ॥कल्पा॥
आत्मज्ञानमुन चिदानंद मॊंदु श्रीहरि दासुलु नित्यमु
नी तत्त्वमु ननुसरिंचिन भावस्वरूपुलु निन्ने कॊल्तुरु ॥कल्पा॥
326)मध्यमावति - चापु ताळम्
सृष्टि स्थिति लयकारक अनादिवैन आदिदेव ॥सृष्टि॥
अंता एकत्वमु उत्तम तत्त्वमैन दैवम ॥सृष्टि॥
सर्वोत्कृष्टमु विख्यातमैन नी विभूतिये विनिश्चलमैन
योगमनि ऎरिगिन हरिदासुलु पॊंदेरु नी दर्शनमुने ॥सृष्टि॥
327)श्रीरंजनि - चापु ताळम्
नी तत्त्वमे उपासिंचेरु उत्कृष्ट साधनतो ओ विश्वविलक्षण ॥नी॥
बृंदावन संचार गोविंद श्रीहरिदास जनानंद मुकुंद ॥नी॥
निनु तॆलियदलचि पॊंदगोरि नी मायचे तॆलियलेक
पॊंदलेक विविधरीतुल वर्तिंचु विश्ववासुलु तुदकु ॥नी॥
328)सरस्वतीमनोहरि - रूपक ताळम्
चालु चालुनुरा नीपद पंकेरुह ध्यानमे ॥चालु॥
वेलादि वेल्पुलकु वॆलुगुगा वॆलुगु वेदमूर्ति
त्रिजगाल गॊलिचिन त्रिविक्रम नी क्रीगंटि चूपॊकटि ॥चालु॥
विरिंचिकि विनुतिंप वशमुकानि वनमालि करुणिंपरा
श्रीहरिदासुल कन्न तल्लि तंड्रि गुरुवु दैवमु नीवेरा ॥चालु॥
329)कांभोजि - आदि ताळम्
जय जय जगन्नाथ जय जय जगदीश ॥जय॥
जीवन्मुक्तिकि सन्मार्गमु नीपद सेवये गदा
नीगुण संकीर्तनमे सततमु शुभदायकमु ॥जय॥

ऐंचेरु एकैक पुरुषार्थमु नीपद भक्तियनि शांतुलु
दांतुलु शुद्धांत स्वांतुलु श्रीहरिदास स्वांतुलु ॥जय॥

330)शहन - आदि ताळम्

हरि गोविंद मुकुंद कुंद सुंदर नयनारविंद ॥हरि॥
संचरिंतुरे अरुचितो निजदार सुतादि भोगाल,
गणिंतुरे घनुलु नीपद भक्ति परम भाग्यमनि ॥हरि॥
शरीर निर्वहणकै केवलमु प्रवृत्तुलय्येरु लौकिक कार्याल
श्रीहरिदासुलु नीपद चिंतनये परमंबनि ऐंचेरुगद ॥हरि॥

331)शुभपंतुवराळि - रूपक ताळम्

चित्तमारग कॊलुवग रारे देवदेवुनि श्रीवासुदेवुनि ॥चित्त॥
तत्त्व जिज्ञासचे हरिदास पूजितुनि परि परि कोररे ॥चित्त॥
ममत बंधनयुत देहमु दुःख दायकमु
असत्तु, अन्नि अनर्थाल कारणमनि सरिग गुर्तिंचरे ॥चित्त॥
तॆलियरे इंद्रियाल परितुष्टि परचु प्रवृत्तुले
मूल कारणालु, चित्तमु कर्मवासन वशमगु ॥चित्त॥

332)मोहन - आदि ताळम्

श्रीहरि नी वाग्विलासाले श्रुतुलु सदा आदरणीयालु ॥ श्रीहरि॥
त्रिगुणात्मक रज्जुवुचे बंधान्वित पामरुल सद्गति ॥श्रीहरि॥
मुक्कुत्राटिचे पशुवुवशमगु नटुल नरुनिपट्टुदुवॆ
ऐव्वारिकैना नीदाज्ञमीरि वर्तिंप तरमा तारणनाम ॥ श्रीहरि ॥
अज्ञानांधुलकु सुज्ञान नेत्रमैन श्रीहरिदासार्चित
अंतटनन्नि रूपुलनलरु अतींद्रिय सुरवंद्य ईश्वर ॥श्रीहरि॥

333)रेवगुप्ति - आदि ताळम्

आत्मज्ञानिग परगु नरुनकु सिद्दिंचु कैवल्यमु ॥आत्म॥
गृहस्थाश्रम निर्वाहकुडैन नेमि, जितेंद्रियुडु ॥आत्म॥
कमलेशु चरण कमलाल आश्रयिंचिन आर्युनिकि
अरिषड्वर्गा लणचि मुक्त संगुडैन निर्गुणनकु ॥आत्म॥
कललो गांचिन वस्तुवु वोलॆ मिथ्ययनि
भाविंचरो जाग्रदवस्थ लोनि दृश्यमु,
जीवन्मुक्तिये ध्येयमु हरिदासुनकु ॥आत्म॥

334)धन्यासि - आदि ताळम्

कैवल्य पथमंदुट तथ्यमु हरिसेवा निरतुडु ॥कैवल्य॥
सदासुस्थिरमु जीवमनु भावमुकलिगि श्रीशुनि
ध्यानिंचु दुरहंकार निर्जितुडु निर्गुणुडु ॥कैवल्य॥
पंच भूतात्मकुडे जीवुडु वेरॊक आलोचनेल
परमतत्त्वमु सरिगतॆलिसिन हरिदासुडु ॥कैवल्य॥

335)अठाण - आदि ताळम्

सनातनुडु सच्चिदानंदुडे श्रीहरि दासांतरंगुडु ॥सनात॥
अंदरि भावाल नॆरिगिन ज्ञान स्वरूपुडे ईश्वरुडु ॥सनात॥
ज्ञानमुन्न कानवच्चु तेजमु, उत्कृष्टमैन
परमार्थमट, सर्व व्याप्तमैन निर्गुणपरब्रह्म ॥सनात॥

336)बृंदावनि - आदि ताळम्

सर्वांतर्यामि श्रीमहा विष्णुवुने संस्मरिंचरे ॥सर्वां॥
तत् पदमु प्रत्यगात्म त्वं पदमु ब्रह्ममु ॥सर्वां॥
तत् त्वं पदमुल एकत्वमु तॆलुपुने असि यनु पदमट
तत्त्वमसि यनि तॆलुपु सद्गुरु ब्रह्मे श्रीहरिदास वंद्युडनि ॥सर्वां॥

337)नीलांबरि - आदि ताळम्

नित्यमुकर्मल निरुपमसाक्षि श्रीहरिदास रक्षकुडे ॥नित्य॥
यदार्थमैन पूर्णत्वमुनु चित्तमुन निलिपि,
मिथ्य ईलोकमनि ऊहिंचिन अगुपडु आत्मसर्वत्र ॥नित्य॥
आत्म स्वरूपान्ने निजात्म यंदे कनि, अंता आत्माकृतिगा
कनिन परमहंसे ऐक्यमगुनु अंतटाहरि तत्त्वमंदे ॥नित्य॥

338)धेनुक - चापु ताळम्

माबोंट्लकु साध्यमे नी तत्त्वान्नि निरूपिंचुट ॥मा॥
पंच भूताल सृष्टिकि लोनै नाम रूपालु धरिंचिन ॥मा॥
नीयंदु चित्तमुंचि नी तत्त्वमंदु वसिंचु ज्ञानुलु,
ज्ञानविज्ञान तत्त्वविचारमुल आनंदिंचु विबुधुलकु तप्प ॥मा॥
प्रीतिनि निन्ने भजिंचु परम भागवतुलकु निनु तॆलियु
मनोबुद्धि बलमुल प्रीतितो नॊसगु हरिदास वरद ॥मा॥

339)वसंतभैरवि - आदि ताळम्

परमपुरुष परंधाम पाहि मां पाहि वरद ॥परम॥
संसार सागरान मुनिगितेलु नराधमुड नेनु
नीदु गुणमुलेंच तरमा सारमुलेनि संसारुलकु ॥परम॥
प्रकृतिकन्ना जीवुनिकन्ना भिन्नमैन परमेश ईश महेश
हरिदासुल अंतःकरणाल प्रज्ञान प्रदीप्तमै परगु परेश ॥परम॥

340)आरभि - आदि ताळम्

धार्मिक धराधिप दिव्यप्रभाव श्रीहरिदासाधिप ॥धार्मि॥
परात्पर पुट्टुटगिट्टुटलु लेनट्टि परंधाम ॥धार्मि॥
सदा साधकुलंदु दयकलिगि वारि निजात्म भावाल
सदा प्रकाशिंचि अज्ञान तमस्सुनु पारद्रोलु प्रभो ॥धार्मि॥

341)गौळिपंतु - चापु ताळम्

सुरनर वरुलकैना तरमा नीप्रभुति नेंच ॥सुर॥
परब्रह्म तत्त्वैक मूर्ते सनातन श्रीसदन
स्वयं ज्योतिर्मय संपूर्ण स्वरूप ॥सुर॥
अखंडानंद रूपमनि आर्चिंचेरु हरिदासुलु
अखिलांडाल सर्व व्यापिवै संशोभिल्लु सर्वाधीश ॥सुर॥

342)सिंधुकन्नड - आदि ताळम्

निन्नॆरुग गलवाडवु नीवेरा श्रीहरि ॥निन्नॆ॥
भूत भावनुडवन वलॆना भूतेशुडवन वलॆना
भुवनाधिपति भुवन वासुडवु भुवन रूपुडवैन ॥निन्नॆ॥
प्राणुल पॆंपॊंदिंचु पुरुषोत्तम हरिदासावन
प्राणुल नियमिंचेटि देवदेव श्रीवासुदेव सर्वेश ॥निन्नॆ॥

343)आहिरिभैरवि - चापु ताळम्

भक्तितो पूजिंचिन परितृप्तिनोंदु भक्त वत्सल ॥भक्ति॥
सलिल पल्लव तुलसीदळ चंपक चामंतुलतो ॥भक्ति॥
वॆललेनि वॆंडि बंगाराल संतरिंचुकॊनि
यज्ञ यागालु चेसिन संतृप्ति कलुगुनेमि नीकु ॥भक्ति॥
सर्वदा सर्वत्र साक्षात्करिंचु श्रीहरिदासेश्वर सर्वातिशय
अव्यय! अलरु चतुर्विध पुरुषार्थ स्वरूप चिन्मयरूप ॥भक्ति॥

344)रीतिगौळ - चापु ताळम्

वरमीयग रावेरा वरद भक्त वरद ॥वर॥
निनु कनुगॊन निनु सन्नुतिंचेनुरा ॥वर॥
नीपद युगळमुले पट्टितिरा परात्पर
निरुपमान महिमान्वित महनीय ॥वर॥
परम भागवतुलु भासुरमुग पूजिंचु पूतात्म
सुरवर तामस मेलर नीवाडनुर श्रीहरिदास वरद ॥वर॥

345)आभेरि - आदि ताळम्

नीकेतगुनु नी विभूतुल विशदीकरिंचु वैनमु ॥नीके॥
सुस्वर विन्यासमुचे अलरु वाग्विलास सुहास
विनुतिंचेरु निरतमु नी महिमलने विबुधुलु ॥नीके॥
यशोविभव संपन्न ॐकारेश्वर ओजस्सु तेजस्सुलतो
विश्वांतराळाल विस्तरिंचिन विश्वेश श्रीहरिदास विभो ॥नीके॥

346)कानड - आदि ताळम्

सुनाद विनोदाल रंजिंपजेयु वेणुनाद विनोद ॥सुनाद॥
घनमैन नीप्राभव विभयालतो अखिलांडाल ऎल्लॆडल
चॆलुवॊंदु दिव्यमूर्ति मुनिजन वंद्युडवु नीवेरा ॥सुनाद॥
विश्वमंता विस्तरिंचि युंटिवे नी महात्म्यमुचे,
नीके चॆल्लुनुरा नी विभूतुल विशदीकरिंचु वैनमु
हे वैकुंठवास विष्णुदेव श्रीहरि दाससनाथ ॥सुनाद॥

347)शुद्धवसंतं - जंपॆ ताळम्

विनग विनग नवरस भरितमुलु ॥विनग॥
तेनिय लॊलुकु नीदु पलुकुलु इंपुग ॥विनग॥
अगणितमुलु नीविभूति योगमुलु सुर भूसुरुलु
कॊनियाडु नीदद्भुत अद्वितीय चरितमु ॥विनग॥
अनंतमु नीवु, नी चरितमु अनंतमुरा हरिदासनुत
सिरि विरिंचि शिवादुलु निरतमु कीर्तिंचेरु नीगुण प्रस्तुतिनि ॥विनग॥

348)साळगभैरवि - रूपक ताळम्

सर्व भूताल आत्म स्वरूपमैन सर्वेश्वर ॥सर्व॥
सर्वभूत गणमुल आदि मध्यांत हेतुवै
सर्वदा वॆलुगु सर्वात्मवु नीवट हे सर्वदेव ॥सर्व॥
परापर प्रकृति स्वरूपमुलैन सर्व चराचर
भूतांतर्गत सर्वमुनकु विलक्षणमुग
सत्य प्रकाशमैन श्रीहरिदासेश सर्वेश्वर ॥सर्व॥

349)ललित - आदि ताळम्

शब्दब्रह्म स्वरूपमुग उपासिंचेरु परमहंसलु ॥शब्द॥
ममत्वमु वीडि बुद्धि ज्ञानमुलतो अंतर्हृदयमु
कांचि शरीरांतर्गत आत्मतत्त्वमुनु ऎरिंगिन तत्त्वज्ञुलु ॥शब्द॥
तमनु तामॆ़रिगिन वारे मुक्तुलु ब्रह्मस्वरूपुलु
श्रीहरिदासुलु, मुक्ति शरीरमंदे कलदनि ग्रहिंचि ॥शब्द॥

350)केदारगौळ - आदि ताळम्

आत्मानंदुले अंतरारामुलु योगुलु ॥आत्मा॥
तत्त्वमयमुग तॆलियु ताने आत्म परमात्म
निंगिनेल वॆदुकनेल माया मोहालु मानरे ॥आत्मा॥
चित्तमुलेनि जपतपमुलेल वक्रचिंतन लेनि
श्रीहरिदासुलु मुक्तुलय्येरु चित्तनिवृत्तुलै ॥आत्मा॥

351)फलमंजरि - जंपॆ ताळम्

जन्ममु संसार बंधालु नश्वरमुलु ॥जन्म॥
तलपुल मोहमंदु चिक्कक जीवुनंदे
निलिचिन कलुगु शाश्वतमैन ब्रह्म भावमु ॥ जन्म॥
पॊंदुट तप्पदु कर्मगतिनि, दान धर्मालु चेसिननू,
कर्मफलमु वीडिनने तॆलियु हरिदास नुतुनि तत्त्वमु ॥जन्म॥

352)रीतिगौळ - आदि ताळम्

जन्मलॆन्नैन ने कोरेदि नीपद भक्तियेग ॥जन्म॥
हरिविरिंचि शिवादुल भेदमुलॆंच तरमा
मतिभेदमु कलिगिन मतभेदमु कलुगुने ॥जन्म॥
द्वादशादित्युललो ख्यातिगॊन्न घनश्याम श्रीहरिदासात्म,
तेजस्संपदतो लोकाल भासिंपजेयु भानुप्रकाश परेश ॥जन्म॥

353)लतांगि - आदि ताळम्

वेदमुललो सामवेदमु नीवैन श्रीहरिदास सेवित ॥वेद॥
अमरुललो अनुपमान आदिदेव अलरु अमरेंद्र,
ज्ञान कर्मेंद्रियाल उन्नतमैन मनस्सुवु नीवेगा ॥वेद॥
शरीरमु इंद्रियालतो चॆलगु जीवुलंदलि
चैतन्य हे जगद्प्राणनाथ जगद्पते ॥वेद॥

354)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

अघमुलॆंच नीकेमि घनतरा अघोर ॥अघमु॥
एकादश रुद्रुललो ऎंचदग शंकरुडवु
यक्ष राक्षसुलंदु ख्यातिगल कुबेरुडवे ॥अघमु॥
अष्टवसुवुलंदु प्रसिद्ध पावनुडवु, शैलमुलंदु
मेटिदैन मेरुनगमु नीवेराश्रीहरि, दासांतर्गत ॥अघमु॥

355)रसाळि - चापु ताळम्

एकाग्र चित्तमुतो निन्ने स्मरिंचु श्रीहरिदासुड ॥एकाग्र॥
प्रख्यातिगॊन्न बृहस्पतिवे वर पुरोहितुल नॆल्ल,
सुरसेन नेतललो घनत पॊंदिन स्कंद नामधेय ॥एकाग्र॥
जलनिधुलकु सागरमु पगिदि पतितुलब्रोचु दयासागर

महर्षुललो भृगुवनु नाममुन चेलगु श्रीकर शुभकर ॥एकाग्र॥
356)यदुकुलकांभोजि - रूपक ताळम्
पराकेलरा कापाड रारा सर्व रक्षक ॥पराकेल॥
अंदरू ऎंचिन स्वामि, गति नीवेरा ॥पराकेल॥
तारा गणमुलो विनुति चेंदिन चंद्रुडवु श्रीहरि दासनुत
वायुवुलंदु मरीचि यनु वायुवट मायातीत सुचरित ॥पराकेल॥
357)केदार - आदि ताळम्
ऎंतगानो ऎंचितिरा एकांत राम ॥ऎंत।
एदिरा नीमर्याद, तगुना ना तप्पुलॆंच ॥ऎंत॥
सिरि विरिंचि शिवादुलकु तोडु नीडवैन तोयजाक्ष कनिपॆंचिन
कन्न तंड्री, कोर्केलॆल्ल तीर्चि करुणिंचु श्रीहरिदास स्वांत ॥ऎंत॥
358)तोडि - त्रिपुट ताळम्
नीतोडु दॊरिकिन चालु नंटिने तोयजाक्ष ॥नीतोडु॥
अक्षर रूपमैन प्रणवमु नीवेगद वाक्कुलंदु,
यज्ञमुलंदु वासिगॊन्न जपयज्ञमु नीवनेरु ॥नीतोडु॥
स्थावराल वर हिमगिरिवै विराजिल्लु श्रीहरिदास विनुत
नापै अभिमानमु लेदा, जगदभिराम पट्टाभिराम ॥नीतोडु॥
359)रामप्रिय - जंपॆ ताळम्
दय लेदा आदिनुंडि आदुकॊने अनादिवि अंदुरे ॥दय॥
वेयि कनुलतो वेयि रीतुल जगतिनि परिकिंचु
दयानिधि ननु जूडरा ऒक कंटितो नैना ॥दय॥
नलुगुरिनि नालुगु रीतुल चेर दीयु चतुर्भुज चतुर
चालुरा वरदहस्त मॊकटि नी दासुड श्रीहरिदासुड ॥दय॥
360)शहन - आदि ताळम्
नीवाडिंचु बॊम्मनुरा तोलु बॊम्मनुरा ॥नीवा॥
श्रीहरिदास शरण्य ननु करुणिंच रावय्य ॥नीवा॥
अलसि पॊलसि युन्नारे जनुलु संसार तापत्रयाल,
निलुव नीडे नीवैन अश्वत्थ वृक्षम वरदुडवे ॥नीवा॥
देवर्षुललो विनुति चेंदिन नारद, गंधर्वुलंदु ऎन्निकैन
चित्ररथ, सिद्धुलंदु जगद्विख्याति चेंदिन कपिल नामधारि ॥नीवा॥
361)शंकराभरणं - चापु ताळम्
सर्व कामपूर्ण हरिदास प्रपूजित नीकु प्रणामालु ॥सर्व॥
अंतरंग अनुभूति अनुभविंचु निष्कामुडनु ॥सर्व॥
सागर मंथनमुन जनिंचिन उच्चैश्रवमु,
कल्पतरुवु कामधेनुवु, करिकुलमंदु मॆप्पुगॊन्न
मेटिवैन ऐरावतमुगा ऒप्पु ओ परमपुरुष श्रीहरि ॥सर्व॥
362)शुद्धधन्यासि - त्रिपुट ताळम्
नित्यानित्य कृत्याकृत्याल नेरिगिंचरा निर्गुणब्रह्म ॥नित्या॥
नागकुलान ख्यातिगल अनंत नामाख्य, जलचरमुल
घनमैन वरुणदेव श्रीहरि वंदनीय अव्यय ॥नित्या॥
पित्रु देवतलंदु अर्यमुडवु नीवु, न्यायमुनु निर्देशिंचु

यमाभिज्ञात हरिदासार्चित सदागति सद्गतिवि नीवे गदरा ॥नित्या॥

363)साम - आदि ताळम्

हरिनाम संकीर्तनमे सकलपाप प्रायश्चित्त साधनमु ॥हरि॥
कारुचिच्चुनु जलमार्चुनु, चिम्मचीकट्ल पारद्रोलु
भानोदयमु पगिदि, कलिकलुषाल हरिंचु हरनुत ॥हरि॥
कनक कांचनादि धातुवुलंदलि मालिन्यमुनु
हरिंचु अग्निचंदमुन, चित्तमारग चेयु ॥हि॥

364)वसंत - आदि ताळम्

नीतोटि बंधमु कलिगिन दिनमे सुदिनमुरा ॥नीतोटि॥
नीसाटि ऎवरुरा ऎंदु वॆदिकिना ओ वेद वेद्य ॥नीतोटि॥
मृगराजगु सिंहम, पक्षिकुलमंदु गरुत्मंतुडवे
असुरललो ऎन्निकैन भक्तप्रह्लाद रूपान रंजिल्लुश्रीकर
आयुः परिमाणमु लॆक्किंचु कालमैनहरि दासविनुत ॥नीतोटि॥

365)सारंग - चापु ताळम्

विश्वंभरुनि अरयरारे उदर भरुलारा ॥विश्वं॥
जन्म कारणमु तॆलियरो पंचभूत विवेचनचेसि
जन्मफल मरसिन परतत्त्व मंदे कलुगु नासक्ति ॥विश्वं॥
तामसमु वीडि नियम निष्ठलंदु आसक्तिगॊनि
आ मनसु, कैवल्यप्रदुडु हरि दासेशुनिपै निलिपि ॥विश्वं॥

366)बेहाग् - आदि ताळम्

गतिलेक नीदापु कोरितिनिरा राम ओसर्वशरण्य ॥गति॥
पवनुडवु नीवेरा पापुल पावनमु चेयु श्रीहरे
इल धनुर्धारुलंदु सर्वश्रेष्ठ श्रीरामचंद्र ॥गति॥
जलचरमुलंदु प्रचंड मकरम, नदुलंदु ऎन्नतगु
गंगा झरिविगा विराजिल्लु विबुधविनुत श्रीहरिदास सन्नुत ॥गति॥

367)द्विजावंति - आदि ताळम्

नीपदभजने नीशुभ दर्शनमुनकु सत्साधन यनेरु ॥नीपद॥
अखिल सृष्टिकि आदि मध्यांतमु नीवे विद्यलंदु ब्रह्म विद्य,
अर्थमु अन्वयमु चेयगल हेतु वादमैन श्रीकरश्रीद ॥नीपद॥
वर्णमुलंदु अकारवर्णमु समासमुललो द्वंद्व समासमु
नीवैन अव्यय, कालस्वरूप श्रीहरिदासार्चित सुचरित शुभप्रद ॥नीपद॥

368)नादनामक्रिय - आदि ताळम्

कर्मफलमिच्चु प्रमुख सर्वतोमुख श्रीहरि ॥कर्म॥
लोकालनु हरिंचु मृत्युवैय्यू भाव्यमंदु
जरुगुनट्टि शुभाशुभ कार्यालकु मूलकारण श्रीकर ॥कर्म॥
स्त्रीलंदलि कीर्तिसंपदलु स्मृति धृति क्षमादि गुणमुल
स्वरूपमैन श्रीहरिदासवरद श्रितजनमंदार शुभंकर ॥कर्म॥

369)बिलहरि - त्रिपुट ताळम्

नीयंदे तदेक चित्तुडनैन ननु कापाड रारा ॥नी॥
साममुलंदु बृहत्सामु नीवेग छंदस्सुललो
ख्यातिगल गायत्री छंदस्सुगा चॆलुवॊंदु चक्रधारि ॥नी॥

ऋतुवुलन्निट श्रेष्ठमैन वसंत ऋतुवुगा वॆलुगु
श्रीहरिदास विनुत नीसहज सद्‌गुणमुलॆन्न नातरमा ॥नी॥

370)यदुकुलकांभोजि - त्रिपुट ताळम्

नाजन्म संस्कार मॆंच वलॆना नीगुण मेमायॆ ॥नाजन्म॥
वंचकुललो जूदमु, तेजो वंतुललोनि तेजमु नीवे
जगमुलंदु जयमु पॊंदु लौकिक साधनमगु श्रीद ॥नाजन्म॥
सत्त्व गुणोपेतुल लोनि सत्त्वगुणमुग वॆलुगु वेल्पुवे
नीदासुलु श्रीहरिदासुल सुपोषण सेयु साकेत राम ॥नाजन्म॥

371)यमुनाकल्याणि - रूपक ताळम्

ना अंतरमु अनाहत नादमू नीवैन अनंत ॥ना॥
निन्नरय यत्निंचु वारल सत्प्रयत्न बलमैन
सदय यदुकुल वंशज जलजाक्ष अक्षय वरप्रद ॥ना॥
पांडव मध्यम विजयाख्य, ऋषिवर्य वेदव्यास
कवि वरेण्य शुक्राचार्य श्रीहरिदासाचार्य सदाचार्य ॥ना॥

372)कापी - त्रिपुट ताळम्

विनिर्मल चित्तुलैन भक्तुल मनमुल हरिंचु श्रीहरि ॥विनिर्मल॥
निनुजेरु सत्पथमुनु तॆलुपु शिक्षणनेर्पु सुलक्षण
राजुलंदुन्न जयाकांक्षग नॊप्पु राजनीति विदुर ॥विनिर्मल॥
परम रहस्याल वॆलुगु मौनमु नीवैन श्रीहरि दासावन
ज्ञानवंतुल सुज्ञानमु नीवे गदरा सुज्ञान ज्योतिर्मय ॥विनिर्मल॥

373)कापीनारायणि - आदि ताळम्

आदिमूलमु अखिल भूतालकु ओ मुकुंद ॥आदि॥
कदुलुना नीतोडु लेक ईचराचर जगमंत ॥आदि॥
चित्तमंदु अधिष्ठानमैन देवदेव नीवुलेनि पदार्थमेदि
एदिरा परमार्थमु, जगमंता नीदटने जगन्नाथ ॥आदि॥
अदे संसारावनि अंदेचिक्कि सॊलसिन वाडनंटिने
आदुको, नेजड्डनु ननुचूडरा श्रीहरि दासाधिप ॥आदि॥

374)वराळि - आदि ताळम्

शरणनु वारि वॆतल दीर्चु श्रीहरिदास रक्षक ॥शरण॥
अनंतमु नीदिव्य विभूति, विस्तरिंचिन कॊलदि पॆरुगुनु
अनन्य पराक्रम विक्रम विभवालकु पेरॆन्निकैन पॊद्दवुगादे ॥शरण॥
जगतिनि नीतेजो बलालचे शोभिल्लुने सकलपदार्थ संपदलु
भगवान् इदियदि अननेल अंतट नीदंशये पर्वियुंडॆ ॥शरण॥

375)रीतिगौळ - आदि ताळम्

आप्तुडवु नीवे ननु धन्यात्मुनि जेयु परमात्मवे ॥आप्तुड॥
आवरिंचियुन्न मोहमंत मायमगु विधानमु
सद्विज्ञान तत्त्वमु तॆलुपरा अद्वितीय तेजोमूर्ति ॥आप्तुड॥
जीवकोटि उत्पत्तिलयमुल मूलमैन बृहदीश भुवनेश
भुवनवंद्य अरविंदाक्ष अक्षयवरद हरिदास जनासक्त ॥आप्तुड॥

376)रंजनि - त्रिपुट ताळम्

अन्निनाम रूपालू नीकळले नीदंशाले ॥अन्नि॥

ऐश्वर्य शोभितमु नीरूप विभवमु निन्नरय
निनुकोरु ना आकांक्ष ऐँतटिदो योगीश्वर ॥अन्नि॥
अव्ययमैन नीदु जगदात्म रूपमु चूचु महनीयुलु
अंदरिकि ना वंदनालु हरिदास चंदन श्रितचंदन ॥अन्नि॥

377)शहन - त्रिपुट ताळम्

वीनुलकु विंदुग विराजिल्लुने नीगुण संकीर्तन ॥वी॥
अनूह्य रूपाल नोँप्पुनु नीस्वरूप विभवालु
अनुपम प्रभाव शोभितमुलु, हेशुभानन श्रीसदन ॥वी॥
द्वादश आदित्युल अष्टवसुवुल एकादश रुद्रुल चूचेरु
नीदासुलु श्रीहरि दासुलु नीलोने अच्चेरुवुतो आनंदमुग ॥वी॥

378)आरभि - आदि ताळम्

नीप्रेरण लेक कलुगुने नरुनकु ज्ञानमु ॥नी॥
ज्ञानाग्निचे दग्धमैन देहि, कडकु मोहमु वीडि,
निन्ने पोँदेनु निक्कमु, देवालयाल लेँक्किंचनेल,
तनुवेगुडि अंदेगल हरिदासनुत, निन्नरय वेडिति ॥नी॥

379)अमीर्कल्याणि - आदि ताळम्

नादमे ब्रह्ममनि पोँगडिनवि वेदमुलु ॥नाद॥
नादमु लेनिदे जीवमु लेदनेरु, मननमु चेयरे
सदाजगमेँल्ल मनमारग विनिपिंचु ॐकार प्रणव ॥नाद॥
नादांतमे अरय संपूर्णमैन ज्ञानमनेरु
ज्ञानुलु सदानंद सदागति श्रीहरि दासानंद ॐकार ॥नाद॥

380)बेहाग् - चापु ताळम्

ॐकार नादमे मुक्तिकि मार्गमनेरु हरिदासुलु ॥ॐ॥
नी शरीरान सर्वमु चराचर जगत्तंता युंडेने आश्चर्यमुग
अद्भुतमुग जगमंतयु चूडवच्चुनट नीयंदे ॥ॐ॥
प्राकृतमुलु ना नेत्रद्वयमु निनुचूड कानरावु,
दिव्याक्षुवुल नीयरा निनुगन, चिद्रूप चिदानंद ॥ॐ॥

381)केदारगौळ - आदि ताळम्

नीवाडनेरा नेनु, नीवात्सल्य मेदिरा नीदभिमान मेदिरा ॥नीवाड॥
मोमुलेँन्नो लोकाल वेँलय, कनुलेँन्नो करुणा वीक्षणाल कटाक्षिंप,
भासुरमुलैन आश्चर्याद्भुत दर्शनमुल प्रसादिंचु श्रीविभावन ॥नीवाड॥
अगणित दिव्यवस्त्र हारमुलतो ऐँल्लेँडल वेँलुगोँदु वेंकटेश
श्रीहरिदास दैवम महादेव श्रीवासुदेव करुणिंपरा सरगुन ॥नीवाड॥

382)मायामाळवगौळ - आदि ताळम्

समयमेँरिगि ननु पालिंचुटये नीमर्यादरा ॥समय॥
निंगिनि सहस्रादित्युलु उदयिंचिनटुल भासिंचु
भव्यप्रकाश, वेँलुगुलकु वेवेँलुगुवैन दिव्यपुरुष ॥समय॥
नी दिव्य देहमंदु विविधविधाल विभजिंपबडिन भुवनालोँकचो
वेँलयु नीवे आलवालमुग, हरिदासावन नीकु तेँलियदा ॥समय॥

383)देवगांधारि - रूपक ताळम्

तरिंचु दारि तोचु हरिनि योचिंचिन ॥तरिंचु॥

परतत्त्वमु नादमे हरितत्त्वमनि ऎंचरो
ऐरिगिन मतमे परिपरि परिकिंचिन ॥तरिंचु॥
तमनुतामे मरिचेरु हरिदासुलु हरिनिचूचि,
ब्रह्ममुने मरिचेरु स्वार्थमुने यॆंचुवारु ॥तरिंचु॥

384)विजयश्री - चापु ताळम्

मोक्षमु कोरेटि वारिके तॆलियुनु नीमर्ममु ॥मोक्ष॥
पनुलॆन्नि युन्ननु हरिनि तलचिन चालु निमुसमैन
लिंगरूप जीवात्म परमात्मने मनमारग पूजिंचिन ॥मोक्ष॥
संसार बंधाल भंजिंचि वासुदेवुनि हृदिनि संधिंचिन
सदाचारुलु श्रीहरिदासुलु सदानंद स्वरूपुलु ब्रह्मवेत्तले ॥मोक्ष॥

385)केदार - आदि ताळम्

जनन मरणाल कारणमु इहमनेरु ॥जनन॥
अवगतमगु नंदुरे हरिदासुनकु आत्मनरसिन ॥जनन॥
दुर्गम कारडवि अवनि, अंदुन्न घोरांधकार
वनचरुलुग चरिंचेरु जडुलु, सुखमुंडुने ऐन्नग ॥जनन॥
हृदिनि पॊंदिकगनुन्न परिपूर्णब्रह्म हरिदासलोलुनि
सदा तॆलिसिनवाडे मुक्तुडु जीवन्मुक्तुडु इलनॆन्नग ॥जनन॥

386)कन्नड - आदि ताळम्

तॊलुगुभ्रमलु, नशिंचु पापमुलु निनुतॆलिसिन ॥तॊलुगु॥
मदिनॆंचि निर्गुणांशुने सरिग ध्यानिंचिन, स्थितप्रज्ञ
सदापॊंदेरु ब्रह्मतत्त्वज्ञुलु बुधुलु, निक्कमुगा ॥तॊलुगु॥
नीटबुट्टुनुप्पु, तुदकु नीरुगारु उप्पु, जीवात्म परमात्मल
भेदमंते अनिसरिग अरसिन हरिदासुलकु नीचरण दासुलकु ॥तॊलुगु॥

387)नळिनकांति - आदि ताळम्

नेजेयु पनुलन्नी नीलीललेगा वेंकटेश ॥नेजेयु॥
नेनेडरा नी नीडलेक, ननु नडिपिंचेटि नेतवेहरि
नीविच्चिन तलपुले नातलपुलुरा हे हरिदास हृद्सदन
अवधीश अवधरिंपुमा नी दरहासाले नामदि पुलकरिंपुलु ॥नेजेयु॥

388)द्विजावंति - आदि ताळम्

तत्त्वमॊकटे हरिदासात्मुनि परब्रह्म तत्त्वमॊकटे ॥तत्त्व॥
नेनु नेननु वादमुचच्चिन हरिजॊच्चु मदिलो,
गोचरमगु सदा सूक्ष्ममुगा आत्मयंदे वॆदिकिन ॥तत्त्व॥
आभरणालु वेरैना अंदलि मेलिमि बंगार मॊकटेगा
जीवमॊकटे, शरीरालु वेरैना मायवलन रूपालु वेरैना ॥तत्त्व॥

389)गौरीमनोहरि - त्रिपुट ताळम्

नीगुट्टु तॆलियदुरा श्रीहरिदास विनुत ॥नीगुट्टु॥
पट्टुवीडक निनु पूजिंचिन गानि निजमुग ॥नीगुट्टु॥
मायवलन रूपालु वेरैना चिदानंद रूपान
शोभिल्लु सर्वेश्वर सदय दयाकर श्रीकर शुभकर ॥नीगुट्टु॥

390)शुद्धबंगाळ - आदि ताळम्

नीतलपु कलिगिन क्षणमे शुभक्षणमटने ॥नीतलपु॥

नत मस्तकमुतो मनमारग निनु कॊलुतु ॥नीतलपु॥
पुलकरिंचु तनुवु, कलुगुनिव्वॆर नीनाम स्मरणचे
इलविनुत भक्तजन परिपालक परितापहर श्रीहरि ॥नीतलपु॥
अनुपम गुणधाम परंधाम अंजलि घटिंचि
निन्ने विनुतिंचु नीदासुडु श्रीहरिदासुड नंटिने ॥नीतलपु॥

391)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्

अद्वितीय! जगालन्नि शोभिल्लु नीयंदु ॥अद्वि॥
आदिमध्यांत रहित श्रीहरि दासाधिप ॥अद्वि॥
श्रीनीलकंठ कमलासन सुरभूसुर वरुलु
अनिशमु सन्नुतिचेयु सत्सार्वभौम सदय ॥अद्वि॥
बहुभुजोदर मुखनेत्राल नॆगडु विराड्रूप
अहो अनंत! अनंतरूप अलरु अमेयरूप ॥अद्वि॥

392)मधुमति - रूपक ताळम्

अखिल लोकाल नीवे युंटिविरा अप्रमेय प्रमुख ॥अखिल॥
अक्षर परब्रह्म स्वरूप विश्वाधार परात्पर प्रभो
अकलंक धर्ममुने संरक्षिंचु सनातन भक्तजनसख ॥अखिल॥
अद्वितीय! दिशलंता तेजोकांति पुंजमुचे प्रदीप्तमौ
नीदुकृपचे शुभंकर श्रीहरि दासप्रियसख ॥अखिल॥

393)गौळ - चापु ताळम्

नीकु तॆलियदा अपरिमित परितापमुल नलरु नाचित्तमु ॥नीकु॥
नाकु कानरादु नीकिटुकु ओकमलेश, संचरिंच कावलॆना
नाकुजटिलवेषमु, मोक्षमुनकु सदागतिवि नीवेरापरेश ॥नीकु॥
ध्येयमु एकड दैवमु एकडरा, नीवे अद्वितीयमै स्थिरमुगा
नायंदे युंटिवट, निन्ने आराधिंचु आर्तुडने हे हरिदासेश ॥नीकु॥

394)रीतिगौळ - आदि ताळम्

हरिहरी अंटिने परिपरि, परमात्म धात परंधात ॥हरि॥
अखंड आत्मज्योति! आदित्युनि द्युतुलतो नादबिंदुवुल वॆलुगु
ब्रह्मांड स्वरूप परमपावन पावनचरित ॥हरि॥
परमहंस गाथलचे मनमुलु अलरग, त्यागराजादि
हरिदासुलु संदर्शिंचिन संपूर्ण सांद्रानंद श्रीद ॥हरि॥

395)पूर्वीकल्याणि - आदि ताळम्

ऎट्टिवारैन नीतत्त्वमुनु तॆलिपेटि वारे विज्ञुलु ॥ऎट्टि॥
इटतॆलुपुने वैद्युडु पृथ्विनि पिंडमुल जाति लक्षणमुल,
अटुलने अंदजेतुवे हेवेदवेद्य आत्मानात्म विवेकमिल ॥ऎट्टि॥
अज्ञान तमस्सुतो चरिंचुजनुल सरगुन बंधविमुक्तुल चेयु
प्रज्ञानमुनु प्रबोधिंचु श्रीहरिदास सन्नुत आश्रितजन मंदार ॥ऎट्टि॥

396)षण्मुखप्रिय - चापु ताळम्

नाहृदिने नॆगडु परंज्योति वॆटिने ॥नाहृदि॥
सर्वुलनुन्न आत्माराम जन्ममिच्चु श्रीश
परब्रह्मवे यनेरु प्रियमारग नीदासुलु ॥नाहृदि॥
पॆंचि पॆद्दचेयु प्रवृद्धुडवे, बॊंदि वीडुनपुडु

हेच्चुग पवित्रपरचु परमशिव, त्रिमूर्तुल रूपाल
ऎचटैन वॆलुगॊंदु वेदवेद्य श्रीहरिदास हृद्सदन ॥नाहृदि॥

397)कल्याणि - आदि ताळम्

सर्वेश्वर सर्वात्म नीवेरा नादु दैवमु ॥सर्वे॥
आद्यंतालु ऎंचलेरु अनंततेजो वीर्याल वॆलुगु
वॆंकटेश! नीदु नेत्राले इनचंद्रुलुगा
अनंतबाहुवुल परगु बृहदीश्वर ॥सर्वे॥
प्रज्वलिंचु मुखतेजो मंडल, महनीय हरिदासवंद्य
त्रिजगमुलनु विद्युल्लतलचे विकाशिंपजेयु उद्यद्भानु संकाश ॥सर्वे॥

398)नटभैरवि - आदि ताळम्

दशदिशल निंगिनेल विस्तरिंचिन विराट्पुरुष ॥दश॥
आश्चर्यकर अद्भुताल उत्पादिंचु उग्ररूप रुचिरांगद
विश्वांतर्यामि विनुतिंचेरु निनु वरसिद्धि मुनिवरुलु ॥दश॥
अरयरे! भयविभ्रांतुलै चेतुलॆत्ति म्रॊक्केरु कॊंदरु,
सुरभूसुर हरिदासुलु अर्चिंचेरु निनु, ओसुरवरद ॥दश॥

399)कीरवाणि - त्रिपुट ताळम्

पुराणपुरुष पूतात्म पावनचरित पाहिमाम् ॥पुराण॥
उत्कृष्टमैन विश्वाधार वेदवेत्तवै वॆलयु ॥पुराण॥
दृष्टिकगपडु सदसद्रूप प्रपंचमु नीवेरा
पंचभूतालु रविचंद्रुलु नीवेरा, कश्यपादि
प्रजापतुलुगा, धातकु धातवैन हरिदासार्चित ॥पुराण॥

400)देशि - आदि ताळम्

अनंत पराक्रम, दिशलन्नी पर्विन अनंतश्री नमोनमः ॥अनंत॥
सर्वमंदु सर्वत्र स्वस्वरूपान शोभिल्लु सर्वस्वरूप
विराजिल्लु नीप्राभव विभवालु विंतलैन विविधरूपाल ॥अनंत॥
नीदु महिमनु तॆलियजालनि नाजाड तॆलिपॆदरा हरिदासवरद
अवधीश अवधरिंचि ननु मन्निंचरा माननीय श्रीहरि ॥अनंत॥

401)नाटकुरंजि - आदि ताळम्

मुल्लोकाल निरुपमान! नीकु नीवे साटिविरा ॥मुल्लो॥
ऎल्लजगाल जनकुडवे, ओ जनार्दन जनरंजक
ऎल्लर उल्लमुल चक्कनॊत्तु चतुरुडवु नीवेरा ॥मुल्लो॥
ऎल्लतप्पुल मन्निंचि मुक्तिनॊसगरा राम श्रीराम
उल्लमु निलुपलेनि नीदासुनि श्रीहरिदासुनि कावरारा ॥मुल्लो॥

402)सुरटि - जंपॆ ताळम्

अद्वितीय नीरूपु रेखल चूपरा ॥अद्वि॥
मुदमंदु नामदि नीमोमु चूड ॥अद्वि॥
अद्भुत विराड्रूप चतुर्भुज शंखचक्र गदाधर
श्रीदशुभद कमनीय, कनुलार कांच कोरिति ॥अद्वि॥
अनंत! अलरुनट नीदैन स्वरूप विभवालु,
अनन्य अनघ हरिदासुनि उल्लमु उप्पॊंगु ॥अद्वि॥

403)केदारगौळ - आदि ताळम्

साध्यमे नीरूपु चूड ऎंतटि वारलकैन ॥साध्यमे॥
आद्यमै विंतविंत कांतुलचे नॊप्पु विश्वरूप
नीदुरूप विभवालु तॆलियलेरु, योगियैनकानि ॥साध्यमे॥
वेदाध्यनमु यज्ञ दान तपस्सुल श्रौतस्मार्त
सदाचर कर्मलचेतनु अरयलेनि परेश परात्पर ॥साध्यमे॥
प्रहृष्ट भक्तिप्रपत्तुल चॆलुवॊंदु पराशर
प्रह्लाद नारदादि श्रीहरिपद दासुलकु तप्प ॥साध्यमे॥

404)मोहनकल्याणि - चापु ताळम्

त्रिमूर्तुलकु अधिष्टानमौ हरिदासनुत ॥त्रिमूर्तु॥
नीकु जगद्भावमुनु आपादिंचु अल्पुडने,
माया मोहबद्धुड गुणकर्मल वीडि
तत्त्वोपासन वलनने तॆलियु नीरूपमु ॥त्रिमूर्तु॥

405)नवरोज् - आदि ताळम्

सुरनरवानर पूजित पूतात्म पालिंपरा ॥सुर॥
परमानंद ब्रह्म, विश्वात्म सरिग चूडरा ॥सुर॥
परमागतिवि नीवनु गुणत्रय कामवर्जितुड निस्संगुड
सर्वांतर्गत श्रीहरिदास वरद कॊलिचेनु निनु कनुगॊन ॥सुर॥

406)चॆंचुकांभोजि - आदि ताळम्

सर्वदा नीकु मिक्किलि सम्मतमैन वारलकु नावंदनालु ॥नीकु॥
सर्वाधार साकार निराकार नीयंदे चित्तमु निलिपि
अर्चिंचेरु साधकुलु नीरूपान्ने हे जगद्विलक्षण ॥सर्व॥
विश्वभावमु वीडि नीवे परम गम्यमनि गरिष्ठनिष्ठतो
विश्वरूप उपासकुलै यजिंचेरु हरिदासुलु निन्ने ॥सर्व॥

407)नटभैरवि - आदि ताळम्

स्वरूपतः चिन्मयुडवे हे श्रीहरे ॥स्वरूप॥
हेरागद्वेष रहित राजीवदळ नेत्र ॥स्वरूप॥
सर्वदा इंद्रियमुल पट्टि सकलमंदु समतकलिगिन
दॊरिकेवुग धृढात्मुनिके निर्द्वंद्वुडैन धन्युनिके ॥स्वरूप॥
अनिर्देश्यमु अव्यक्तमु सर्वत्रा व्याप्तमु
मनमुनकु अनूह्यमगु हरे हरिदासात्म
अनन्यात्म अक्षर परब्रह्म, नीवेरा सद्गुरुवु ॥स्वरूप॥

408)भैरवि - आदि ताळम्

नीवुविना सदाश्रयमु लेदुरा हे श्रीहरे ॥नीवु॥
अवाङ्मानस गोचर मनो बुद्धेंद्रियातीत ॥नीवु॥
शरीरमन अभिमानि मानवुनकु साकारमंदे कुदुरु
अरुदैन सद्बुद्धि, अंदरानि अप्रमेय हरिदासावन ॥नीवु॥
सन्न्यसिंचि कर्मलन्नी, परमगतिवि नीवनेरु
अन्यविषय चिंतलेनि ध्याननिष्ठुलु नीदासुलु ॥नीवु॥

409)कामवर्धिनि - आदि ताळम्

मृत्युरूप संसारांबुधि दाटिंचरा राम ॥मृत्यु॥
नीतत्त्व साधनंदु निमग्नमै देहेंद्रियाल

निर्देशिंचि नीतत्त्वमंदे वसिंचु वाडनंटिने ॥मृत्यु॥
मनोबुद्धुल नीतत्त्वमंदु निलुपलेनि वारलकु
निनुसरिग चेरुगति साधनकर्मये सद्गतियटने ॥मृत्यु॥

410)रघुप्रिय - त्रिपुट ताळम्

राम जगदभिराम नावेतलु तीर्चि पालिंपरा ॥राम॥
निनु चेरु उपकरणमैन साधनकर्मनु तत्त्वदृष्टितो
बोधिंचु गुरुशुश्रूषे सद्गति यनेरु ईजगतिनि ॥राम॥
हरिदास विनुत नीतत्त्वमरय श्रवणमनन
ध्यान साधनकर्मले सत्साधनालु अनेरु ॥राम॥

411)श्रीरागं - आदि ताळम्

ऎंदरो महोपासकुलु अंदरिकि नावंदनालु ॥ऎंद॥
अभ्यास योगमुकन्न ज्ञानमुमेलु ज्ञानयोगमु कन्नमेलु
ध्यानमु, अंतकन्न मेलु कर्मफलत्यागमु परमोत्तममट ॥ऎंद॥
कर्तकर्म क्रियलनबडु त्रिपुटिभावाल भंजिंचि पॊंदेरु
प्रशांतस्थितिनि सदानंद संभावकुलु श्रीहरिदासुलु ॥ऎंद॥

412)रुद्रप्रिय - चापु ताळम्

सर्वत्र श्रीहरिपद दासुनि आश्रयिंचरे सर्वदा ॥सर्व॥
सर्वुलकु सन्निहितुडु सदात्म भावमुचे आप्तमित्रुडै
शरीरादि जगत्तुनंदु विलक्षणमुग वॆलुगु सर्वेशुडु ॥सर्व॥
निरागुडै आत्मसुखमुन आर्तिगॊन्न अद्वैतुडे अनघुडु
शरीरमन सुंतैना आभिमानमु आसक्तिलेनि सुस्थिरुडु ॥सर्व॥

413)विजयवसंतं - आदि ताळम्

हरिदासुडु प्रणुतिकॆक्किन परमानंद भागवतुडे ॥हरि।
हर्षाग्रह भयभीति गुणवर्जितुडे विशुद्धात्मट ॥हरि॥
ऎव्वानि वलन भुवनमुलु भयपडवो
ऎव्वाडु भयपडडो भुवनमुलंदु, वाडे ॥हरि॥
ममतबंधन विमुक्तुडै शत्रुमित्रुलंदु निर्द्वंद्वुडै
समतत्त्व भावनचूपु सर्वकर्मफल परित्यागिये प्रमुख ॥हरि॥

414)ललित - चापु ताळम्

घनुडु जगान ऎन्नगरानि वाडे स्थिरचित्तुडु ॥घनुडु॥
शुभाशुभाल सुस्थिर चित्तमुन्न श्रीहरि दासुडु ॥घनुडु॥
इष्टायिष्ट पदार्थ प्राप्तियंदु समभावमु कलिगि सर्वासक्तुल
विसर्जिंचि शीतोष्ण सुखदुःखाल विकारमु चॆंदनि विरागुडे ॥घनुडु॥

415)वसंतभैरवि - आदि ताळम्

वाडे स्थितप्रज्ञुडु श्रीहरिदास सन्नुतुनि सन्निहितुडु ॥वाडे॥
आत्मभावमंदु स्थिरबुद्धि दूषण भूषण तिरस्काराल
समतचूपुचु शरीर पोषणकै लभिंचिन दानितो तृप्तिचॆंदु ॥वाडे॥
धर्मसारमैन श्रीहरिगीत पारायणमुन स्थिरमुगा चित्तमु निलिपि
सर्वकाल सर्वावस्थल स्थिरमुगा श्रीशुडे शुभप्रदुडनि सरिग ऎंचिन ॥वाडे॥

416)सौराष्ट्र - आदि ताळम्

श्रीहरिदास पालक ननुपालिंचु समयमिदेरा ॥श्री॥

देहेंद्रिय संघमंतकु साक्षिवैन सर्वेश्वर ॥श्री॥
कनिपिंचु शरीरमु क्षेत्रमंद्रु जडमैन शरीरमुन
कनपडु चैतन्यशक्ति नीवेगदरा हे चिद्रूप श्रीकर ॥श्री॥
तनुवुलंदु प्रज्ञानरूप शक्तिगा शोभिल्लु क्षेत्रज्ञ
चिन्मयमूर्ति निर्विकारि निरंजन पंचकोश विलक्षण ॥श्री॥

417)हंसध्वनि - चापु ताळम्

अंतटा अलरु प्रत्यगात्म श्रीहरि दासात्मवे ॥अंत॥
क्षेत्रालन्निट चॆलुवॊंदु क्षेत्रज्ञुनि कानरारे
क्षेत्रक्षेत्रज्ञुल गूर्चिन ज्ञानमे सुज्ञानमट
उपाधियंदु ऐदु कोशालंदु प्रत्यक्ष साक्षिरूपान ॥अंत॥

418)खरहरप्रिय - चापु ताळम्

क्षेत्रमॆरिगिन क्षेत्रज्ञ, प्रज्ञान ब्रह्मवनेरु हरिदासुलु ॥क्षेत्र॥
शरीर रूपमगु उपाधि नश्वरमु विकार वंतमु ॥क्षेत्र॥
ऐदु भूताल बुद्धिगुणाल, प्रकृति अहंकारमु
शब्दस्पर्शरस गंधादि इंद्रिय विषयाल वॆलुगु ॥क्षेत्र॥

419)कमलामनोहरि - आदि ताळम्

अन्निभूताल अधिष्टानमैन परमात्मवु नीवेरा ॥अन्नि॥
नीयंदे मनसुनिलुपु श्रीहरिदासुनि ब्रोवरारा ॥अन्नि॥
कांक्षद्वेषमु सुखदुःखादि देहेंद्रियतति वृत्तिज्ञानमु
धैर्यसंपदल चॆलगुक्षेत्राल विराजिल्लु विकाररहित हरि ॥अन्नि॥

420)वलजि - आदि ताळम्

दृश्यजगत्तगु क्षेत्रमंत मनोक्लेश दायकमु ॥दृश्य॥
दृश्य दृग्स्वरूपुडु क्षेत्रज्ञुडे श्रीहरि दासाश्रयुडु ॥दृश्य॥
दृश्यपरमात्म लक्ष्यमु संपादिंचु आध्यात्मिक नैतिक
संपत्तिये ज्ञानमु सुज्ञानमु, अन्यमुमिथ्य यंदुरे ॥दृश्य॥

421)रेवगुप्ति - चापु ताळम्

आत्मये परमात्मनि सरगुन व्यक्तमगु नरुनकु ॥आत्मये॥
चित्तमॊपुडु चिंतलु मानुनो, अंदे अधिवसिंचिन ॥आत्मये॥
पूज्यमु, तद्ज्ञानमु विना, ज्ञेयवस्तुवु चिदानंद ब्रह्ममु,
यजिंचरो हरिदास विभुनि वेगजेर, साध्यमु तथ्यमुग ॥आत्मये॥

422)पाडि - चापु ताळम्

ज्ञानमु कलिगिनने ज्ञेयमैन ब्रह्ममु ग्राह्यमगु ॥ज्ञान॥
बाह्यप्रपंच दृष्टिकलवारि भाषणमुलु विनि चित्तमुचॆदरक
सत्यधर्म निरतिनि परमार्थमुन चित्तमुस्थिरमुग नियमिंचरे ॥ज्ञान॥
इंद्रिय मनमुलंदु संपूर्ण निवृत्तिगल सच्चिदानंदुडु
संततमु सत्यमु नित्यमैन श्रीहरिदास स्वांतुनि तॆलिसेरु ॥ज्ञान॥

423)बेगड - आदि ताळम्

दृश्यभोग रहितमैन निवृत्तात्मे सच्चिदानंदमु ॥दृश्य॥
जननमरण चक्रमुन अनिशमु संचरिंचु
जनुनकु संसारुनकु मनसु शब्दस्पर्शरस
गंधादुलनुन्न, कुदुरुना ध्यानमु श्रीहरिपै ॥दृश्य॥

जन्ममुन्नने कलुगुनु जगतिनि जनुलकु जराव्याधुलु,
जननमरण वार्थक्यजनित जराव्याधुल दोष
कारणमु अरयरे हरिदासुलै, सदासद्भक्ति नलरुचु ॥द्श्य॥

424)चिंतामणि - जंपॆ ताळम्

नीदरि चेरुदु मुरहरि मदमोह निवृत्तिकै ॥नीदरि॥
नीतत्त्व ज्ञानमु अर्थिंचॆद नेनु परिपरि
सदा दयनीय हरिदास विभो, नीदुविभूति
आध्यात्म ज्ञानमु, नीस्मृति कलुगिंचरा ॥नीदरि॥

425)नादचिंतामणि - रूपक ताळम्

अरयरो हृदिनलरु हरिदास प्रियंवदुनि ॥अरय॥
आंतः शत्रुवुल अरिकट्टु हरिनि परिताप हरुनि ॥अरय॥
ज्ञानदीपिक चेयिजार अज्ञान तिमिरमु जॊच्चि
जननमरण संसारमगु अधोगति पालगु जीवुडु ॥अरय॥

426)मध्यमावति - आदि ताळम्

निरतमु विनुतिंचेरु श्रीहरिदासुलु ॥निरतमु॥
ज्ञेयमनु परमात्म स्वरूपमुने ॥निरतमु॥
जीवुलु चेयु पापपुण्याल वीक्षिंचुनु परिपरि
सर्वचक्षुवु सर्वतोमुखुडु श्रीहरि श्रुतकीर्ति ॥निरतमु॥

427)नाट - आदि ताळम्

दृग्वस्तुवगु परमात्मे दृश्यजगत्तुनु आवरिंचॆने ॥दृग्वस्तु॥
विश्वरूपुडु विश्वंभरुडु विष्णुदेवुडे वेदवेद्युडु ॥दृग्वस्तु॥
हरिदासुडु सद्गुण प्रभावमुचे शुद्धांतरंगुडु
परमात्मतो तादात्म्यमु पॊंदुट तथ्यमट ॥दृग्वस्तु॥

428)तिल्लांग् - आदि ताळम्

श्रीहरिदास स्वांतुडे सद्गति ज्ञेयरूपमट ॥श्री॥
ज्ञानेंद्रिय कर्मेंद्रिय गुणप्रेरितुडै शोभिल्लु
अनन्य सर्वेंद्रिय विवर्जितुडु विष्णुवेगदा ॥श्री॥
सर्वमु साकुचु तानंटकये तद्गुणकर्मल
कार्यालकु सुखदुःखाल साक्षिगा विराजिल्लु विभुडे ॥श्री॥

429)मलहरि - आदि ताळम्

ज्ञानुलके तॆलियुनट सर्वात्मुनि स्वस्वरूपमु ॥ज्ञानु॥
अज्ञानुलकु अग्राह्युडु अगम्यगोचरुडु आहरि ॥ज्ञानु॥
सर्वभूताल पर्वियुंडियु पट्टनटुलुंडि
भिन्नमुगा दोचुचु अभिन्नमुगा अलरु आहरि ॥ज्ञानु॥
स्थितिकालान पॆंचुचु, लयकालान हरिंचु
गुणोपेतुडे श्रीहरिदास प्रवरुल प्रज्ञानज्योति ॥ज्ञानु॥

430)आभेरि - आदि ताळम्

ज्योतिर्मय स्वरूपुडे श्रीहरिदास प्रपूजितुडु ॥ज्योति॥
ज्योतुलकु ज्योतिर्गुण प्रभासमै पॊरलु ॥ज्योति॥
प्रज्ञानमे इरुवदि गुणमुलचे प्रदीप्तमैन
जिज्ञासमनि ऐंचदगिन ब्रह्ममु ज्ञेयमे ॥ज्योति॥

ज्ञानफलमे अनुपमब्रह्ममु निखिलांतर हृदिस्थितमे
ज्ञानगम्यमु अनन्यमैन भागवतुल बलरूपमे ॥ज्योति॥

431)नारायणि - चापु ताळम्

दर्शनमगु धरलो ज्ञेयरूपमगु परेशुडु ॥दर्श॥
अरिषड्वर्गमु तरिगि तत्त्वज्ञानमु कलिगिन ॥दर्श॥
सर्वचराचर जीवुल नंतराल अलरु अनंतात्म
हरिदास वरदुडे प्राणुल पापपुण्याल परीक्षिंचु ॥दर्श॥

432)रीतिगौळ - आदि ताळम्

अवगतमगु वास्तवमुग ज्ञानचक्षुवु वलन ॥अव॥
अवाङ्मानस गोचरमगु अनंत ब्रह्मरूपमु ॥अव॥
सदा स्वप्नतुल्य प्रपंचमुन प्राणिकोट्ल रूपाल चरिंचुचु
सद्ब्रह्मरूपान स्थाणुवुगा चॆलगु श्रीहरिदास वरदुडु ॥अव॥

433)मानवति - जंपॆ ताळम्

सर्वत्र कलडनि दंडमु पॊट्टॆरु हरिदास वरेण्युलु ॥सर्वत्र॥
सर्वात्मुडे पापुल दंडिंचु नेतट चॆंतनुंडु सर्वेशुडट
सर्वभूताल अविभक्तमुग पूलमाल लोनुन्न सूत्रमुकरणि
परगु परेशुने प्रस्तुतिंचरे, भवबंधयुत जन्मतरिंचु ॥सर्वत्र॥

434)पूर्वीकल्याणि - आदि ताळम्

शुद्धब्रह्ममु शुभकरमु श्रितजन मंदारमु ॥शुद्ध॥
स्थूलाकाशमु चित्ताकाशमु चिदाकाशमु ऒकटिकिमिंचि मरियॊकटि
सूक्ष्मतरमु, अंदुना चिदाकाशमे ज्ञेयमु जगदात्म ॥शुद्ध॥
अनुपमान सहज गुणालचे शोभिल्लुचु, शुद्धचैतन्य
ज्ञानप्रदमौ भगवद्प्राप्तिकै हरिदासुलै यत्निंचरे ॥शुद्ध॥

435)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

आनंद भैरवुडे सच्चिदानंद भैरवुडनि अरयरे ॥आनंद॥
अनंतुने अनिशमु अर्चिंचु हरिदासुडु आसक्तिग ॥आनंद॥
सर्वदा मनसुंचि प्रस्तुतिंचिन प्रत्यक्षिंचु
सर्वाधिपते जीवकोटुल कनि पॆंचे कारुण्यशीलि ॥आनंद॥
विश्वमंता वॆलुगु अजहरिहर रूपाल रंजिल्लु
विशेषगुण भासुरुने भजिंचेरु भागवतुलु ॥आनंद॥

436)बिलहरि - चापु ताळम्

अभयंकर शुभंकर श्रीकर नी चरणमुले शुभकरमु ॥अभयं॥
विन्नगिंचु कॊंटिनय्य मदिलोनि नायिंगितमु
कन्नवाडिवि नीवंटिनय्य नाचिंतलु तीर्चरा ॥अभयं॥
नीकन्न चिन्नवाडनु नीवॆंच नेनॆंतरा ईविश्वमंदु
मिन्नवु विरिंचि हरादुलकन्न, हरिदासुल अघविदूर ॥अभयं॥

437)केदारगौळ - आदि ताळम्

आनंदामृत रसधुनि निधिरव्यय पाहिमां पाहि ॥आनंदा॥
मुंदुवॆनुक लेरंटिने सदानंद पालिंपरा रामचंद्र
नंदनंदन यदुनंदन श्रितचंदन भक्तचंदन ॥आनंदा॥
ऎंदैना विंदुनीगुण संकीर्तने नावीनुल विंदंटिने

सुंदर मंदरधर अंदरियंदुन्न हरिदासवंद्य ॥आनंदा॥

438)हंसनादं - आदि ताळम्

हरिंचु अरिषड्वर्गालु अविद्य अणगिन यनेरार्युलु ॥हरिं॥
परमपुरुषुडे आदिदेवुडु अनादियगु अनंतुडु
मरिप्रकृतियो अशाश्वतमु निधनमगु निक्कमु ॥हरिं॥
स्वप्नलोकान स्वप्नमु अनादिगा अगुपिंचिननु,
भग्नमगु मेल्कॊनिनने, जन्ममंतियेग ऐन्नग ॥हरिं॥
सत्त्वरजस्तमो गुणान्वित बुद्धेंद्रिय मनोव्याधि विकारालु,
संधानमगु नश्वरमगु प्रकृतिवलननि अरयरो नरुलारा ॥हरिं॥

439)वसंतवराळि - आदि ताळम्

निरवधिक सुखशांतुलंद आराधिंचरे हरिदासविभुनि ॥निरव॥
प्रकृति संगममुन्न पुरुषुनिकि, सुखदुःखाल स्वानुभवमुचे
कर्तृत्व भोक्तृक्त्वादुलु आपादिंचेरु अनिशमु जनुलु ॥निरव॥
कार्यमन भौतिक शरीरमे, कारणमन इंद्रिय
मनोबुद्धि अहंकारालु पंचभूतालनि तॆलियरो ॥निरव॥
शब्दस्पर्शरस गंधालकु जड प्रकृते हेतुवु
आ प्रकृतिये कार्यकारणाल कलुषमै युन्नदट ॥निरव॥

440)अठाण - रूपक ताळम्

विनरो हरिदासुल सद्गुरुबोध बंधाल वीडरो ॥विनरो॥
सांख्यकर्म सन्न्यास योगाल साधन कर्मल
विवरणमु, तत्त्वज्ञान साधनक्रम रीतुल तॆलियरो ॥विनरो॥
स्थावरजंगम रूपमैन जगतिनि ऎंतटि अल्पवस्तुवु
परापर प्रकृतुल अन्योन्य संश्लेषण वलने कलुगुने ॥विनरो॥

441)तोडि - चापु ताळम्

सर्वत्र समरूपान परगु परेशुडे श्रीहरि दासेश्वरुडु ॥सर्व॥
सर्वभूताल सममुगानुंडि, अय्यवि अंतमैन
विश्वविलक्षण भावान्वित अव्ययुडगु सर्वेश्वरुडे ॥सर्व॥
तन युनिकिनि गुर्तिंचमनि अनुशासिंचे आत्मनरयु
साधकुडे अप्रमेयुडगु परमेश्वरुनि तत्त्वमॆरुगु ॥सर्व॥

442)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्

सर्वत्र स्वस्वरूपान सममैयुन्न ईश्वरुने कनरे ॥सर्वत्र॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञ ज्ञानमुतो तारकब्रह्म तत्त्वसाधन चेयरे ॥सर्वत्र॥
समस्तचराचर भूताललो भासिंचु क्षेत्रज्ञुनि
समत्वरूपान तत्त्वदृष्टितो चूडरेसरिग सर्वदा ॥सर्वत्र॥
शरीरात्म भावमुतो जगद्भावमुतो श्रीहरिदासुडु
सर्वदा तननुतानु वम्मुचेयडु, मुक्तुडगु सरगुन ॥सर्वत्र॥

443)शुभपंतुवराळि - आदि ताळम्

हरिदासुडे सम्यग्दर्शि ब्रह्ममु पॊंदुनु ॥हरि॥
प्रकृतिये कार्यमुलन्नि निर्वहिंचु, अकर्त आत्म
प्रकृति सर्वभूतमुल वॆलयुचुनु भूतरूपमै
सर्वत्र विस्तरिंचुननु सत्यमॆरुगरे हरिदासुलै ॥हरि॥

444)वागधीश्वरि - आदि ताळम्
ऎंतटिवो ध्यान सांख्य कर्मयोग मार्गालु ॥ऎंत॥
अंतट आत्मनु परमात्मनुचेरु सन्मार्गालु ॥ऎंत॥
उंदुरंदरु विभिन्न संस्कारुलै विभिन्न अंतःकरणल
पॊंदिननु, एदारि संचरिंचिन हरिदासुलै लक्ष्यमैन
पॊंदिकग पॊंदेरु सदानंद परब्रह्म स्वरूपान्ने ॥ऎंत॥

445)असावेरि - आदि ताळम्
शरीरमंदलि जीवुडे परमात्म प्रधान पुरुषेश्वरुडु ॥शरीर॥
प्रकृतितो त्रिगुणालतो उपाधितो दृश्यविषय
संगममे जननमरण दुःखालकु हेतुवनेरु ॥शरीर॥
अन्यासक्तुन्न दृश्यजगत्तुन दुःखदायक बंधालुतगुलु
अनासक्तिये अनन्यमैन मुक्तियनेरु हरिदासुलु ॥शरीर॥

446)शहन - चापु ताळम्
तनुवुल उन्नात्मये पुरुषुडु परमपुरुषुडु ॥तनु॥
तनुवुलकन्न भिन्नमैन अंतरात्मे अंतकुसाक्षि ॥तनु॥
शरीराल संचरिंचु सर्वात्मये श्रीहरि दासावनुडु
सर्वत्र प्रवर्तिंचुचु भरिंचुचु अनुभविंचु अनंतुडे ॥तनु॥

447)हुसेनि - चापु ताळम्
हरिदासुडे धन्यजीवि जीवन्मुक्तुडु इहपराल ।हरि॥
परिकिंचि त्रिगुणान्वित प्रकृतिनि, परमात्मु नरयरे
परेशुने प्रार्थिंचरे त्रिगुणाल अतिक्रमिंचिन बंधविमुक्तुडु
सरिगा आत्मानात्म विवेकमु समकूडिन जनुडु
सर्वदा दृग्दृश्य विचक्षण ज्ञानमुकलिगिन जीवुडु ॥हरि॥

448)देशि - आदि ताळम्
क्षेत्रक्षेत्रज्ञ विभाग विज्ञानमे कैवल्य प्रदमनरे ॥क्षेत्र॥
सर्वत्र व्यापिंचिन निर्मलाकाशमु सूक्ष्ममु
निर्लेपत्वमुग नुंडुने निष्कल्मषमै नॊगडुने ॥क्षेत्र॥
देहमे देवालयमु अंदॆनॊलवैन अंतरात्म हरिदासात्मे
ब्रह्ममु नित्यमैन सत्यमु त्रिगुणरहितमु सच्चिदानंदमु ॥क्षेत्र॥

449)माळवि - आदि ताळम्
शरीरजगत्तुकु परंज्योति हरिदासात्मे परमसाक्षि ॥शरी॥
शरीरेंद्रिय मनोबुद्ध्यादि दृश्यजगद्रूपमु क्षेत्रमेग ॥शरी॥
साक्षीभूतुडु चॆलगु क्षेत्रज्ञु नॆरुंगुटे सुज्ञानमु
साक्षिगाचॆलगु जगत्तंत, वेवॆलुगै जगत्तुकु वॆलुगिच्चुने ॥शरी।

450)बहुदारि - चापु ताळम्
हरिये त्रिगुणात्मक प्रकृति जगद्सृष्टि कारणमट ॥हरि॥
हरिदासात्म परेशुडे सर्वदा चराचराल बीजमट ॥हरि॥
पुनरावृत्ति रहितुले सुज्ञानुलु मुमुक्षुवुलट
पुण्युलु देहमुवदलि जनन मरण रहितुलौदुरट ॥हरि॥

451)रीतिगौळ - जंपॆ ताळम्
ऎटुजूचिन हरिदास विभुनितत्त्व भावमु कनपडु ॥ऎटु॥

पट्टिपट्टि जीवुलंदु कारुण्यमु उदारबुद्धि चूपरे ॥ऐटु॥
कलिगिंचु माया रूपमैन जगद्सृष्टिनि ब्रह्ममा श्रीहरे
तॆलियरे निक्षिप्तमु चेयुने बीजमुनु प्रकृतंदु ॥ऐटु॥

452)हरिकांभोजि - रूपक ताळम्

ॐकार प्रणवनादमे सप्तस्वराल मातृक ॥ॐ॥
अकार उकार मकार स्वराल कलयिकये ॥ॐ॥
सर्वजगत्तुकु परापर प्रकृतुल द्वारा
सृष्टिस्थितिलय कारकुडु आदि पुरुषुडे ॥ॐ॥
सर्वत्र जन्मिंचु चराचर भूतालकु,
मातृ स्थानमु मया शक्तिनि प्रकृतंदु
सरिग बीजमुंचु तंड्रि श्रीहरि दासेशुडु ॥ॐ॥

453)आभोगि - जंपॆ ताळम्

हरिचरण दासुलकु कलुगुने जीवन्मुक्ति ॥हरि॥
परिपूर्ण निर्विकल्प चित्त स्थैर्यमु पॊंदिन ॥हरि॥
अहो प्रकृतिवल्ल पुट्टुनट्टि अन्यासक्त त्रिगुणालु
देहमंदु बंधिंचु अनन्य आत्मननि अरसिन ॥हरि॥
अंतःकरण रूपान दुर्विषय जन्यासक्ति बंधिंचु
अंतर्गत ज्ञानियगु जीवुनि, विनिर्मल स्फटिकमगु
सत्त्वगुणमु अद्वैतमु आत्मयनि अरसिन आर्युलु ॥हरि॥

454)अमीर्कल्याणि - आदि ताळम्

केवलात्म स्थितिनिच्चे श्रीहरि दासेशुनि सेविंपरे ॥केव॥
दृश्यमौ विषयासक्ति निच्चुरा द्वेषरूप रजोगुणमु
दृष्टादृष्टफल हेतुवुलन्नि देहिनि गट्टिगपट्टि बंधिंचु ॥केव॥
अज्ञान जनितमु तमोगुणमु, मोहिंप जेयुने जीवुलनु
बुद्धिमांद्य प्रमादमु निद्रनलसतल मुंचु देहिनि ॥केव॥

455)मार्गहिंदोळ - आदि ताळम्

त्रिगुणमुल अतिक्रमिंचरो अजस्रमु हरिदासुलै ॥त्रिगुण॥
प्रापंचिक सुखाल सत्त्वगुणमु, यॆंच रजोगुणमु
प्रापंचिक कर्मयंदु, तमोगुणमु बंधिंचु अतिनिद्र
पापबंध प्रमत्तलंदु जीवुनि, मुप्पतिप्पल पालुचेयु
पापविवशुनि चेयुनटने, आत्मज्ञानाग्नि निधनमुचेयु ॥त्रिगुण॥

456)हिंदोळ - आदि ताळम्

निर्मलकैवल्य सिद्धिकै श्रीहरि दासुलै हरितत्त्वमॆरुगरॆ ॥निर्मल॥
शरीरमुनु वीडु सत्त्वगुणुलु ऊर्ध्वगते चेरेरु ऎंचग ॥निर्मल॥
रजोगुणुलु मध्यममगु मनुष्यलोकान जनिंचेरु
तमोगुणुलु अल्पमगु पशुजन्मल बडयुदुरट ॥निर्मल॥

457)देवगांधारि - आदि ताळम्

बंधविमुक्तिकै हरिनरयरो हरिदासुलै ॥बंध॥
सत्त्वगुण समाश्रयमे मॊदटिसोपानमु
दानिनिदाटि चित्त स्थैर्यमुचे ब्रह्ममुनंदरो ॥बंध॥
त्रिगुणमुले कर्त, जीवुडु चेयु समस्तकार्याल कर्तयंद्रु

त्रिगुणात्मक चित्तमे देहेंद्रिय ततिचे चेयिंचुने कर्मल ॥बंध॥

458)धन्यासि - चापु ताळम्

अवगतमगुनु अवश्यमु अवधीशुनि अद्वितीय तत्त्वमु ॥अवगत॥
जीवुडे गुणालकन्न वेरैन वाडटने, आत्मयेकदा
अव्ययसाक्षि देहेंद्रिय ततिकि, आत्मेताननि ऍंचिन ॥अवगत॥
दृगॄपुडुग द्रष्टग जीवुनंदु प्रवर्तिंचु सर्वात्मने
ईदृश्यकर्मल कर्तगादनि गुर्तिंचिन श्रीहरिदासुलकु ॥अवगत॥

459)रेवति - त्रिपुट ताळम्

सर्वत्रासर्व दुःखालकु कारणमु त्रिगुण तादात्म्यमे ॥सर्व॥
सर्वमुनकु आधारमैयु चलनचित्रमु नंदलि तॊरवलॆ
सर्वत्र सुखल दुःखाल पालैयु निर्लेपमुग नॆगडुने जीवुडु ॥सर्व॥
देहादि जगत्तुतो गुणान्वित चित्तमुतो नैक्यमै नॊगडुचु
अहंकार ममकाराल परगुटे भयबंधाल चिक्कुटनि
ग्रहिंचि गुणातीतुडु श्रीहरिदास सन्निहितुने अर्चिंचरे ॥सर्व॥

460)गौळ - आदि ताळम्

जीवुडे शिवुडु नरुडे नारायणुडु जनुडे जनार्दनुडु ॥जीवु॥
सर्वदा आत्मानात्म विवेचन चेयु श्रीहरि दासुडॆरुगु ॥जीवु॥
दुर्बलुडनि अल्पुडनि तलपक निरंजनुडनि गुणातीतुडनि
सर्वेशुडनि सर्वदा द्रष्टगानुन्न हृद्साक्षिग
नॆंचि दृश्यरूपमगु त्रिगुणान्वित शरीरेंद्रिय
मनोबुद्धुलतो तादात्म्यत चॆंदनट्टि अद्वैतात्मक ॥जीवु॥

461)श्रीरंजनि - त्रिपुट ताळम्

शरीरोत्पत्तिकि कारण भूतालु त्रिगुणाले ॥शरी॥
मरणरहित आत्मस्थिति यंदुटे नरुल जीवन्मुक्ति
शरीरमु वलनकलुगु, जीवुनकु जरारोग दुःखालु,
हरिदासुल जन्मतारक मर्ममु आत्मनरयु सन्मार्गमे ॥शरी॥

462)सूर्यकांतं - आदि ताळम्

निरवधिक निरतिशय ब्रह्मोपासन चेयरारे ॥निरव॥
रजोतामस गुणालणचि सत्त्वगुणमु दाटरे ॥निरव॥
निस्संकल्प आत्मस्थितंदु सत्त्वगुणमु तनकुताने
अतिक्रमिंचुननि अरसिन आर्युलंता हरिदासुले ॥निरव॥

463)नायकि - आदि ताळम्

अगणितभक्ति पारवश्याल भजिंचरे श्रीहरि दासप्रभुनि ॥अगणित॥
निर्गुणुलै परब्रह्म साक्षात्कारमु नंदरे नरुलारा ॥अगणित॥
त्रैगुण्यजन्य प्राप्ताल चंचल उदासीनततो
निर्गुण ब्रह्मनिष्ठ निश्चल भावान अलररे ॥अगणित॥

464)मध्यमावति - आदि ताळम्

निरतिशय नित्यानंद निर्गुणब्रह्मे श्रीहरिदासात्म ॥निरति॥
सर्वधर्म स्वरूपमु अव्ययमु अमृतधाममु
परंधाममे द्वैताद्वैत विशिष्टाद्वैताल लक्ष्यमनेरु ॥निरति॥
उपासनाबल संस्काराल प्रकारमु ध्येयमैन आकारान्नि

रूपोंदिंचि पूजिंचेरु परब्रह्ममुने परिपरिरीतुल ॥निरति॥

465)मायामाळवगौळ - चापु ताळम्

सार्थकमगु संपूर्ण तत्त्वमुने संस्तुतिंचरे ॥सा॥
आत्मरूपमु जीवुलंदु सर्वदासर्वत्र चूडरे
आत्माकृतिगा राजिल्लुनट्टि ब्रह्ममुने परिकिंचरे ॥सा॥
मिथ्यजगमट, कर्मलकु परमसाक्षि नित्यसत्यमगु
सदाश्रयुनि श्रीहरिदास सन्निहितुनि सन्नुतिंचरे ॥सा॥

466)उदयरविचंद्रिक - रूपक ताळम्

दारिनि अरयरो हरिनिचेरु दारिनि अरयरो ॥दारि॥
चोटु येंटुन्नदो दूरमै तोचुनट
कटकट हरियिरवु अंददट, अरुदैन ॥दारि॥
अव्ययुनि हरिदास तोषकुनि तोडुकोरि
माय तेलिसि निजमर्ममु सरिग अरयरे ॥दारि॥

467)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्

अनरेपरिपरि हरिहरियनि हरिगुणालने प्रकीर्तिंचरे ॥अन॥
चिन्नतनान चिन्नमनसु, नडिवयस्सुन रागद्वेषालु
मनोजाड्ज्याल निग्रहिंचरे चिवरकु मुसलितनान ॥अन॥
रक्तबिंदुवुल तनरुदेहमु, समचिंतन लेनि विमूढुलु
सत्यमिदि अनि ऐंचलेरु, देवदेवुनि येन्निकचेसि हरिदासुलै ॥अन॥

468)दर्बार् - त्रिपुट ताळम्

ब्रह्मचिंतन चेयरे भवबंध विमुक्तिकै ॥ब्रह्म॥
ब्रह्ममु दोरकु ब्रह्मानंद धाममै ॥ब्रह्म॥
आत्माव लोकनमु चेयरो, ब्रह्ममंदे
आत्मये ऐक्यमै परवशमगु परमानंदमै ॥ब्रह्म॥
साधकुडु श्रीहरि दासुडुचेयु अनिशमु योगमु,
साधन वलनने संभवमु ब्रह्मस्वरूप संप्राप्ति ॥ब्रह्म॥

469)बिंदुमालिनि - आदि ताळम्

जनिंचे नीनुंडे ऐंच ग जगत्तंता ॥ज॥
जनिंचे अव्यक्तमद अहंकारालु ॥ज॥
वेदमुले आकुलटने क्रिंदनुन्न शाखलैयलरु
अश्वत्थ वृक्षमगु विश्वाधार! संसारानिकि
ऐगुवगनुन्न मूलमु नीवेरा ऊर्ध्वमुन अलरु
अनंतात्म हरिदासात्म कारणभूत श्रीहरिदेव ॥ज॥

470)मोहन - आदि ताळम्

ज्ञानमीयरा श्रीहरिदास सुप्रसाद प्रसन्नात्म ॥ज्ञा॥
ईनाडोरेपो उन्नदि ऊडकमानदु, मंचिचेडुलु तारुमारगु
उन्नदोलेदो अनुनट्टि मायाभ्रमल कलिगिंचुनदि संसारमे ॥ज्ञा॥
नश्वरमु संसारमु अश्वत्थवृक्षमु,
जननमु जरामरणालु क्लेशमुलेंच,
असंगममे शस्त्रमुगा संसारतरुवु छेदिंचरे ॥ज्ञा॥

471)केदारगौळ - आदि ताळम्

त्रिगुणातीत चित्तमुतो इंद्रियाल संधिंचरे ॥त्रि॥
शाखोप शाखलुग विस्तरिंचिन संसार तरुवुनकु
शाखलु सत्त्वरजस्तमो गुणाले, कर्मवासनलु व्रेळ्ळट ॥त्रि॥
आत्मातिरिक्त विषयमुलचे संवृद्धियगु संसार तरुवुनु
समग्रमुग संछेदिंच शरणुशरणु अनरारे हरिदासुलै ॥त्रि॥

472)तोडि - आदि ताळम्

तोयजाक्ष नीतोडु कलिगिन, जन्मबंधमु वीडुने ॥तोय॥
रविचंद्र नक्षत्रालु भासिंप जेसेरु दृश्यप्रपंचान्नि,
नीवन्नो ज्ञानानंदज्योतिवे सर्वद्रष्टवु प्रस्थानात्मवु ॥तोय॥
आत्मपदार्थमे ब्रह्मरूपमु सत्यमु नित्यमगु नीपदमे
अंतटा अतिश्रेष्ठमनि कॊलिचेरु नीदासुलु श्रीहरिदासुलु ॥तोय॥

473)गानमूर्ति - आदि ताळम्

जीवुडु निजमुग श्रीहरिदास संसेवितुनि अंशमेगा ॥जीवु॥
उपाधिबंधमु वलनप्रकृतिकि लोकुवगुट तगदनेरु ॥जीवु॥
जीवुडे साक्षात्श्रीहरि सत्यमैन सनातन स्वरूपुलिरुवुरु
वीडेरु उपाधिभावमु वरेण्युलु उपासिंचेरु निजरूपान्ने ॥जीवु॥

474)द्विजावंति - चापु ताळम्

ईश्वरपथमु अरयरे हरिदासुलै ॥ईश्वर॥
देहेंद्रिय लोलुत्वमु क्षुद्रमैन पराधीनमु
देहेंद्रिय मनोबुद्धुलकु अतीतुडु जीवुडट,
देहस्थमगु तदितरमुलकु दृढमुग वेरनेरु ॥ईश्वर॥

475)देशि - आदि ताळम्

हरिदास स्वांतुडे जननमरण संतापहरुडु ॥हरि॥
मरणिंचगने गॊंपोवुनट यिंद्रिय मनोबुद्धुल जीवुडु,
हरिपरमु चेयरो पंचेंद्रिय मनोबुद्धुल पॊंदुगा ॥हरि॥
कलुगुजन्म चित्तप्रवुत्ति प्रकारमु, चित्तमु विकाररहितमै
निलकडस्थिति पॊंदिन, सिद्धिंचु जीवब्रह्मैक्यमु निजमुग ॥हरि॥

476)शहन - आदि ताळम्

चित्तमु निलिपि आत्मानात्म विवेचनमु चेयरे ॥चित्त॥
सुस्थिरसाधन चित्तसंशुद्धिचे श्रीहरिपद दासवरुलै
आत्मानुभूति आत्मानंदमु पॊंदरे पॊंदिकग ॥चित्त॥
आत्मसंदर्शन परुलैन योगुलके तॆलियु
आत्मानुभूति, आ हरिनि यजिंच वेगरारे ॥चित्त॥

477)हरिकांभोजि - चापु ताळम्

आत्मानात्म विवेचनचे दॊरकुश्रीहरि दासविभुडु ॥आत्मा॥
आत्मकंटनि इंद्रियमनो विकाराल रक्तिचे सुखदुःखमुल
नंदुनटने जीवुडु, पंचेंद्रिय मनमुलने उपाधिरूपाल
संधानमुन्न, आत्मनरयरु जगद्संबंध वासनलवल्ल ॥आत्मा॥

478)शंकराभरणं - चापु ताळम्

कलुगुने नीवल्लने शशिसूर्याग्निल प्रकाश चैतन्यालु ॥कलु॥
अलरन्नि पदार्थाल वॆलयु ज्योतिनि प्रकाशिंप जेसेरु

चॆलुवुगशशि सूर्यवह्नुलु नीदिव्य विभूति प्रतिभलचे ॥कलु॥
ओजस्सु तेजस्सु धृतिबलमुल प्रसादिंचु जगद्प्रभो
अजहरसुर वरप्रद सर्वदा श्रीहरिदास प्रपूजित ॥कलु॥

479)कापी - रूपक ताळम्

अंतकु आधारमु नीवॆगद प्राणनाथ नानाथ ॥अंत॥
अंतट जीवुलंदु वॆलयु हरिदास स्वांत ॥अंत॥
जीवुल शरीराल, वैश्वानर जठराग्नि रूपान अलरे
अव्यय प्राणापान वायुवुलतो चतुर्विधाल
सर्वमु पचनमॊनर्चु अद्वितीय अच्युत अनंत ॥अंत॥

480)कांभोजि - आदि ताळम्

हरिदासप्रभो पाहिमां देहमनु क्षेत्राननुन्न क्षेत्रज्ञ ॥हरि॥
सरिगसदा दृश्यत्यागमु चेसिनकलुगु नी दृग्स्वरूपमु ॥हरि॥
तॊलुतनीकु नैवेद्यमु ऒसंगियॊद्दिकग दैवभावनतो भुजिंचुनट्टि
सुलक्षण भोजनप्रक्रियॆ यज्ञमट, भुजिंचुनदे अमृतमट ॥हरि॥

481)नाट - त्रिपुट ताळम्

पूजिंचेरु निनुसदा ओ श्रीहरिदास सदाश्रय ॥पूजिं॥
ज्ञापकशक्ति ज्ञानोदयाल जीवुलकु कलुगजेयु
हे प्रज्ञाननिधे वेदालचे तॆलियदगिन तेजोनिधि ॥पूजिं॥
अरयदगिन परमात्म ब्रह्मविष्णु महेश्वरादि
सुरलंदु अग्निरूपाल वॆलिगेटि वेदवेद्य वेंकटविभो ॥पूजिं॥

482)रेवति - आदि ताळम्

वॊन्नंटियुंडु अखंड चैतन्युंडे जगद्वंद्युडु ॥वॊन्नंटि॥
नश्वरशरीर बद्धुडगु जीवुनिकन्न वेरैनदेवुडु ॥वॊन्नंटि॥
क्षरमगु शरीरस्थिति जीवस्थितुलदाटि परमसाक्षैन
पुरुषोत्तमुनि प्राप्तिकलिगिन धन्युडे गदा श्रीहरिदासुडु ॥वॊन्नंटि॥

483)केदार - आदि ताळम्

त्रिगुणान्वितुडे जीवुडु, त्रिगुणातीतुडे श्रीहरिदासात्म ॥त्रिगु॥
त्रिविक्रमुडु त्रिलोकाधारुनि त्रिलोकधरुनि विनुतिंचरे ॥त्रिगु॥
शरीरस्थिति जीवस्थितुलकु अतीतमुग अलरु आत्मयंदे
उंडुवाडे उत्तम पुरुषुडनु पूतात्मने पूजिंचरे ॥त्रिगु॥

484)मोहन - चापु ताळम्

परिपरि प्रपूजिंतुरु परिपूर्ण भावनतो ॥परि॥
क्षराक्षर व्यक्ताव्यक्त स्वरूप श्रीहरि दासविभो
सांद्रानंद रस स्वरूप सर्वेश परेश महेश
निरुपमनिनु तॊलिसिनवारु धन्युले हे त्रिगुणातीत ॥परि॥
ब्रह्म विद्यचे प्रज्ञानुलै कृतकृत्युलु अगुदुरे
प्रह्लाद नारदादि भागवतुलु, भासिल्लु प्रमुखभक्तुलु ॥परि॥

485)चारुकेशि - चापु ताळम्

श्रीहरि दासाश्रयुनि अजस्रमु सेविंपरे ॥श्री॥
त्याज्यमुलगु असुर गुणमुल अतकरिंचरे
ग्राह्यमुलगु दैव गुणमुल सरिग अरयरे ॥श्री॥

दैवमुलु असुरमुलु राक्षसमुलनु त्रिविधमुलैन
प्रवृत्तुलु, सत्त्वरजसतमो गुणान्वितमुलनि तॆलियरे ॥श्री॥

486)गुंडक्रिय - आदि ताळम्

भक्तितो भजिंपरे भद्रगिरिरामुनि श्रीरामुनि ॥भक्ति॥
दैव संबंध सद्गुणमुल सततमु संशोभिंचु
सर्वहित यज्ञदीक्ष सरळतलु तॆलिसि संचरिंचि ॥भक्ति॥
आत्मशुद्धि ज्ञानयोग साधन तपोदानमुलु निर्भयत
स्वाध्यायनिरति बाह्योंद्रिय निग्रहमु कलिगिसदा
संचरिंचरे संयमींद्रुलै श्रीहरि दासुलै अनन्य ॥भक्ति॥

487)शिवरंजनि - जंपॆ ताळम्

ननु चूडरा तारक राम नाजन्म तरिंचुरा ॥ननु॥
अनन्य अलोलत्वमु विनय विधेयतल विराजिल्लु
अनन्यचित्तुल, कोपरहित दासुलकाचु दयानिधे ॥ननु॥
निरागुलु अहिंस सत्य वचनमुल अलरे निष्कामुलु
हरिदासुल सर्वदा संरक्षिंचु करुणासमुद्र रामभद्र ॥ननु॥

488)शुद्धसावेरि - जंपॆ ताळम्

निनुतलचु जन्ममे जन्ममु ओ तारण नाम ॥निनु॥
सूक्ष्मबुद्धि सहनमु शुचित्वमुल चॆलगुचु
ऒरुलकिंचुकैन द्रोहमु ऎंचक मनमुन,
धैर्यमु निगर्वमुल चॆलगि चरिंचरे हरिदासुलै ॥निनु॥

489)कल्याणि - आदि ताळम्

अनिशमु हरिदासविभुनि निधिरव्ययुनि अरसिअर्चिंचि तरिंचेरु ॥अनि॥
अनाचारुलु मायावुलु असत्याविद्य वादुलैननु ॥अनि॥
नियमालु लेवु निलकड लेदु ऎंदुन नेटिविभुलु
नियंतलु, जगमंतयू तमवोले असत्यमंद्रु ॥अनि॥
स्त्रीपुरुष संगममैन कलुगु संसारमनि,
तप्पुगयॆंचेरु जनुलु, काममु तीरिनचालु ईपृथ्विनि,
माकेमि कॊरत अनेटि दुरभिमानुलु दुर्मार्गुलैन ॥अनि॥

490)यमुनाकल्याणि - त्रिपुट ताळम्

ननु वदलकुरा अपार करुणाकर ॥ननु॥
निनु वीडनुरा श्रीहरिदास वरद ॥ननु॥
दुरात्मुलु अल्पबुद्धुलु नष्टात्मुलु असुरगुणुलु
कॄरकर्मठुलु जगद्क्षोभ कलिगिंचु मोहजगतिनि ॥ननु॥
असुरलगु क्षुद्रदेवतल आराधिंचु अपरिमित काममोहितुलु
विचक्षणा ज्ञानशून्युलु, अहंकार मदद्वेषाल अलरेरिल ॥ननु॥

491)पूर्वीकल्याणि - चापु ताळम्

हरिदास पोषक अवधरिंपरा नामनवि ॥हरि॥
मारुतिरंजक मारजनक जनकजा रमण
सर्वदा सर्वकोर्केलकु स्वस्तिचॆप्पुदु सुमा
कॊरत नाकेमि सरगुन नीदंड दंडलुंड ॥हरि॥

492)सिंहेंद्र मध्यमं - आदि ताळम्

असुरगुणाल पर्विन पुडमि निलुवजाल ॥असुर॥
अपरिमित कामभोगाले ध्येयमनि
ऎंचेरुजनुलु जीवित पर्यंतमु ॥असुर॥
दुराश दुर्बुद्धुल तनरुचु द्रव्यार्जन चेयुटे
ध्येयमनेरु इलनॆल्ल, नेनॊल्लरा श्रीहरि दासेश्वर ॥असुर॥

493)सरस्वति - आदि ताळम्

शरणागत त्राणुडवनु प्रकीर्ति नीके तगुनुरा ॥शर॥
परनिंद आत्मस्तुतुलने ध्येयमुग नम्मिनवारु
नराधमुलु असुरगुण युतुलनुंडि ननुब्रोवरा ॥शर॥
सर्वचराचर हृदयस्थित परमसाक्षिवै संशोभिल्लु
सनातन हरिदास दैवम, निनुद्वेषिंचु वारिनुंडि कावरा ॥शर॥

494)सुनादविनोदिनि - आदि ताळम्

भवतापतमुलु पापवर्तनुलु परिपरि परितपिंचेरु ॥भय॥
विविधरीतुल चित्तभ्रांतिचे मोहजालमुन चिक्किन ॥भव॥
आत्मविनाश कारणमु कामक्रोध लोभाले नरकहेतुवुलु
चित्तशुद्धितो कुदुरुग श्रीहरिदास वरदुनिकोरनि विमूढुलु ॥भव॥
धनसंपद दुरभिमान मदमुलतो शास्त्रविरुद्धमुगा
अनंतुनि स्मरिंपकये चेसेरु नाममात्रपु यज्ञमु ॥भव॥

495)जनरंजनि - चापु ताळम्

स्मृति मीमांसले सत्प्रमाण ज्ञान साधनालु ॥स्मुति॥
कार्याकार्यालकु, जगतिनि ऎल्लवेळल ऎन्नतगिन ॥स्मृति॥
कामप्रवृत्तितो शास्त्रविहित कर्मल चेयकुंडग
दुर्मतिचे इष्टानुसारमु चरिंचुजडुडु तॆलियडु ॥स्मृति॥
अशास्त्र विहित कर्ममुल आचरिंचु असुरलु पॊंदलेरु
प्रशांति प्रदात सत्कर्म फलप्रदात, श्रीहरि दासप्रभुनि ॥स्मृति॥

496)नारायणगौळ - आदि ताळम्

आलन पालन चेयु परंधाम नमो नमः ॥आलन॥
श्रद्धाभक्ति प्रपत्तुलु कलुगुनट शरीरधारुल प्रकृतिरीति
सात्त्विकराजस तामसालनु त्रिविधाल तनरुनटने ॥आलन॥
स्वांत संस्काराल प्रकारमु अंतःकरण भेदमुचे
श्रद्धकलुगु ननेरु नरुलंदु, अंदुचे हरिदासुलंद्रु ॥आलन॥

497)रंजनि - रूपक ताळम्

श्रद्धये मनुजुनि संस्कारमु ॥श्रद्ध॥
नीनाम स्मरण नीयंदु अत्यंत ॥श्रद्ध॥
सात्त्विकुलु सेविंतुरु सुरगणमुनु,
राजसुलु यक्षराक्षसुल, तामसुलु
भूतप्रेत गणाल, श्रीहरि दासुलै कॊलुवरे ॥श्रद्ध॥

498)आभेरि - आदि ताळम्

हरिदासनुतुनि तत्त्वमरयनि अधमुलु असुरलु ॥हरि॥
दंभाहंकार युक्तुलु कामरागमद तामसुलु
दुर्भरजडुलु, युक्तायुक्त ज्ञानमुलेनि जनुलॆल्ल ॥हरि॥

शास्त्रविधिवीडि, शरीरमंदलि पंचेंद्रिय मनमुल,
पोंदुगनुन्न परमसाक्षि परमात्मुनि दूषिंचुचु
अधर्मकर्मल चेयुनट्टि दुर्मदांधुलु अंदरु ॥हरि॥

499)बेगड - आदि ताळम्

अन्निटिनि चूचु द्रष्ट आत्मयेगद ॥अन्निटि॥
अच्युतुडु अव्ययुडु अनघुडु आहरि ॥अन्निटि॥
दृश्यप्रपंचमु प्रकृति, अनात्मल
अविनाभाव संपर्कमेग सुखदुःखाल
अनुभूतनि अरयरो आसक्तितो हरिदासुलै ॥अन्निटि॥

500)दर्बार् - चापु ताळम्

आत्मयन्ननो चिन्मयमु श्रीहरिदासुल चैतन्यमु ॥आत्म॥
चित्तप्रवृत्तिचे स्थूलमुगा कनिपिंचु पृथ्व्यादि भूताल
पर्यंतमुगल दृश्यजगत्तु अनात्मये नश्वरमनेरु ॥आत्म॥
आत्मवलन अनात्मकमैन प्रकृतिलो चैतन्यमुंडु
शक्तिप्रपत्तुलु प्रद्योतमगु शरीरमुन आश्चर्यमुग ॥आत्म॥

501)बिलहरि - त्रिपुट ताळम्

मृण्मयमगु अनात्म स्वरूपमु मानवुडे ॥मृण्म॥
अव्यक्तात्म मानवुनि यदार्थ स्वरूपमु,
बाह्यांतः प्रकृतुलनिलिपि ब्रह्मभावमु
सुव्यक्तमुचेयु आत्मने सुज्ञान लक्ष्यमनेरु ॥मृण्म॥
आत्मचिन्मय स्वरूपमु विशुद्धब्रह्म स्वरूपमु
आत्मये अव्यक्तमु अच्युतमनु चिंतनलो लीनमगु
साधकुलु श्रीहरिचरण दासुलु सदासरिग ध्यानिंतुरे ॥मृण्म॥

502)धर्मवति - आदि ताळम्

रामनाम सुखानुभवमु मेलु कडुमेलु ॥राम॥
मेनुवोंपुलु चूचि मोसपोनेल जनुलारा
मनमे मूलमनेरु नवरसार्णव प्रेरित अलजडिकि ॥राम॥
चेतनाल अचेतनाल कलयिके दुःखदमगु रागद्वेषयुत
रक्तिगोन्न यिंद्रियालु ईजगतिनि, सरिगनरसि अर्चिंचरे
भक्तपरिपालुनि परितापहरुनि हरिदास स्वांतुनि ॥राम॥

503)जयंतसेन - आदि ताळम्

ऐन्न देहधारुल प्रियाप्रियालनु द्वंद्वालु ध्वंसमौटकल्ल ॥ऐन्न॥
मनिषिकि देहानुरक्ति कारणमु पुनर्जन्मकु, कर्मफलरूपमु,
मनसु, बंधिंचुदुरु मनमुल निरतमु कर्मलुचेयुचु ॥ऐन्न॥
दोषमुकादु देहधारणमु, देहमंदु अभिमानमु
दोषमनितेलिसि ध्यानिंचरो अनुरक्तितो श्रीहरिकि दासुलै ॥ऐन्न॥

504)रेवति - चापु ताळम्

एनाटि बंधमो ईनाटि जन्म कर्मबंधमु ॥एनाटि॥
उन्नदो लेदो रेपन्नदि, सेविंपरे श्रीहरि दासेशुनि
ऐन्नरागमे रोगमु, पोंदेसुखमु पोवुनने रागमनु
मानसिकस्थिति, कर्ममुनकु प्रेरणशक्ति अनियरयरे सरगुन ॥एनाटि॥

अणिममहिम गरिमलघिम प्राप्ति प्राकाम्यमु ईशत्वमु
विशिष्टत्वाले अष्टैश्वर्यालु राग स्वरूपालु कडुदुःख
भाजनालनि भाविंपरे भवबंध विमुक्तिकै विनुतिंचरे विष्णुनि ॥एनाटि॥

505)रामप्रिय - आदि ताळम्

अन्नमु अन्नादुलनु कलुपु संधान कर्त परमात्मेगा ॥अन्न॥
मिताहारादि नियमबद्धुलै हरिदास विभुनि भजिंपरे
आध्यात्म साधन क्रममुलो आहारशुद्धि प्रप्रथममु,
चित्तशुद्धि तत्त्वज्ञान संप्राप्तिकलुगु आहारशुद्धिवलन ॥अन्न॥
आयुस्सु मनोबलमु देहारोग्य बलसौख्यमुलु
प्रीतिनि पेंचु मृष्टान्नमु सात्त्विकगुणुलकु सुप्रीति ॥अन्न॥

506)वसंत - आदि ताळम्

सात्त्विकमैन आहारमे सद्गतिनिच्चु श्रीहरिदासुलकु ॥सात्त्वि॥
कट्वाम्ल लवणोपेतमु मिक्कुटमगुवेडि कारमुलचे
ऒप्पुचुमिगुल दाहमुनु कलुगजेयु आहारमु
ध्यानभंगमु चेयुनदे राजसगुणुलकु सदासुप्रीति ॥सात्त्वि॥
सारमु नशिंचि पाचिपोयि दुर्गंधयुतमु अशुद्धमै
ऎंगिलिचेय बडिनदैन आहारमु अत्यंत अनारोग्यकर
दुष्कर दायकमैनदे इष्टमु तामसजन पाषंडुलकु ॥सात्त्वि॥

507)शुद्धबंगाळ - चापु ताळम्

यज्ञपतिग यज्ञफल प्रदातग ऎंचेरुनिनु हरिदासुलु ॥यज्ञ॥
प्रतिफलमु इंचुकैना कांक्षिंचक, सुनिश्चल संकल्पमुतो
चेयुयज्ञमे सात्त्विक यज्ञमनि ऎंचेरु बुधजनुलु॥यज्ञ॥
यज्ञफलमु कांक्षिंचि पेरुप्रतिष्ठलकै चेसेरु
यज्ञमु राजसगुणुलु अरयलेरु हरिनि ॥यज्ञ॥
संकल्परहित मंत्रदक्षिण अन्नदानरहित अशास्त्रविधिनि
यज्ञमुनुचेयु तामसगुणुलु तॆलियलेरु श्रीहरिनि ॥यज्ञ॥

508)बौळि - चापु ताळम्

शारीरक वाङ्मय मानसिक तपस्सुले सात्त्विक सत्साधनमुलु ॥शारीर॥
ऒरुल नॊप्पिंचनि परहितमगु सत्यवचनमे मानसिक तपस्सु
सर्वदा वेदपठनमु चेयुटे वाङ्मयतपस्सु अनेरुत्तमुलु
हरिदास पोषकुनि पॊंदुयोग साधनमुलनु गमनिंचरे ॥शारीर॥

509)चारुकेशि - आदि ताळम्

मानसिक तपमनेरु, मायान्वित मोसालवीडि चरिंचुटे ॥मानसिक॥
सुरवरभूसुर हरिदासुलु पूनु बाह्याभ्यंतर
शुभ्रत ब्रह्मचर्यव्रतमु अहिंसात्मक नडकये एंच ॥मानसिक॥
निर्मलनिश्चल प्रशांतचित्तमु चित्त स्थैर्यमु मृदुभाषणमु,
अंतरिंद्रिय निग्रहमु मित भाषणमु विषय निवृत्तुलमनु ॥मानसिक॥

510)सावेरि - आदि ताळम्

करुणिंचरा करुणालवाल श्रीहरिदास वरद ॥करु॥
शरीरमे नेननु कुसंस्कार बद्धुडनुरा ननुवेग ॥करु॥
नेननु अहंभावमे सुखदुःखाल नॊसगु देहानुरक्ति

कारणमुकर्म, कर्मोत्पत्तिकि मूलमैन रागादुलनुंडि ॥करु॥
अज्ञानजनित अभिमानमुन्न कलुगु रागद्वेषमुलु,
अज्ञानरूप अविवेकुलु रागद्वेषजनुल सरगुन ॥करु॥

511)साम - आदि ताळम्

चिन्मयानंदमु कलुगुनु श्रीहरिदास जनुलकु ॥चिन्म॥
समत्वभावान रागादुलु निवृत्तैनगद निरुपम ॥चिन्म॥
जीवात्म परमात्मतो ऐक्यमैनने कलुगु दुःखनिवृत्ति
सर्वत्र समत्वबुद्धि कलुगु अंतर्ज्ञानमु जागृतैन ॥चिन्म॥
जीवमे ब्रह्ममनु समभावदृष्टे सर्वदुःखाल नतकरिंचु
अव्यक्तमैन ब्रह्ममे अंदरंदुन्न आत्मनरसिन आर्युलकु ॥चिन्म॥

512)पुन्नागवराळि - त्रिपुट ताळम्

साधनकर्मे सत्साधनमनि बोधिंचेरु हरिदासुलु ॥साधन॥
साधकुनकु उंडवलॆगा उत्तममैन श्रद्ध सुस्थिर
चित्तमु, फलापेक्षरहित सात्त्विक तपस्सुचेयरे ॥साधन॥
पेरुगॊप्पल पॊंदुटकै दुरहंकार मदान्वित तपमु,
स्थिरमगु फलमॊसगनि राजसतपमु, व्यर्थमनि ऎंचरे ॥साधन॥
दुराग्रह मदमुलतो मूर्खपु पट्टुदलतो तनकु
ऒरुलकु तापमु कलुगजेयु तामसतपमु निर्जिंचरे ॥साधन॥

513)पूर्णचंद्रिक - आदि ताळम्

सात्त्वतांपतिग नुतिंचेरु श्रीहरिदास स्वांतुलु ॥सात्त्व॥
उत्तमुलु पुण्यक्षेत्राल पुण्यकालाल पुनीतुलनुचु
सत्पात्रुलकु प्रत्युपकारमु नाशिंपक चेयुनुत्तम
सात्विक दानमे सनातन सद्धर्ममनुचु सरिगनॆंचि ॥सात्त्व॥

514)बृंदावनि - आदि ताळम्

चेयरेदानमु भगवदर्पणमनि श्रीहरि दासुलै ॥चेय॥
प्रत्युपकारार्थमु चेयु दानमु मनोक्लेशमुतो
चेयुराजस दानमु निश्चयमुग निरर्थकमनेरु ॥चेय॥
सत्कारशून्यमै अमर्यादतो तिरस्कार भावनतो
अपात्रुलकु चेयुतामस दानमु निषिद्धमनि ऎंचरे ॥चेय॥

515)नाट - चापु ताळम्

परब्रह्मे नामरूप रहित निराकारुडट ॥पर॥
निर्देशिंचेरु विविध नाम रूपाल ध्यानार्थमु ॥पर॥
उच्चरिंचेरु त्र्यक्षर संकलित प्रणवमुने
सत्क्रतु प्रारंभमुन श्रीहरिदास वरुलु ॥पर॥

516)बिलहरि - चापु ताळम्

परब्रह्ममे वाचकमैन परमपावन, प्रणमाम्यहम् ॥पर॥
महाशक्तियुत ॐकार नादमे हरिदासुनि आधारमु ॥पर॥
ॐतत् सत् यनु मुव्विधाल नॊप्पुनाम उच्चारणचे
वेदमुलु यज्ञमुलु प्रादुर्भविंचॆ ननिपॊगडबडु ॥पर॥

517)नादनामक्रिय - रूपक ताळम्

तत् यनु परब्रह्म पदमुनु पलुकरे ॥तत्॥

फलमुपै कोर्कलेक, यज्ञदान तपोकर्मल
निरतमु चेयरे चित्तशुद्धितो श्रीहरि दासुलै ॥तत्॥
उनिकिनि श्रेष्ठत्वमुनु सूचिंचु सत् यनु
अनुपम पदमे परब्रह्ममनि तेलियरे ॥तत्॥

518)शहन - आदि ताळम्

हरिदासात्म बंधुवे आपद्बांढवुडु भवभंजनुडु ॥हरि॥
यज्ञदान तपस्सुलंदु पेरॆन्निकैन निष्ठयेयुनिकि
अनबडु सद्ब्रह्मोद्देश्य कर्मले सत् यनेरु ॥हरि॥
श्रद्धारहितमौ होमदान तपमुलन्नि असत् यनेरु
पृथग्भावमट, अरयरो परमार्थमगु परमात्मनु ॥हरि॥

519)केदारगौळ - आदि ताळम्

नल्लनय्य चल्लनय्य विनवय्य नाविन्नपालु ॥नल्ल॥
अनिशमु नीतोडु नीडकै नीदासानु दासुडनै
विनयमुग विमलमगु मनमुतो मनवि चेतुने ॥नल्ल॥
सर्वेंद्रिय ग्राममुल नियामकुडवगु हृषीकेश
महेश केशव श्रीहरिदास वत्सल वात्सल्यनिलय ॥नल्ल॥

520)कन्नडगौळ - जंपॆ ताळम्

सरिगनॆंच सन्न्यासमन निष्काम कर्ममे समुचितमु ॥सरिग॥
श्रीहरि दासुलु फलोद्देश्य यज्ञदान तपमुलु वर्जितमुलनेरु ॥सरिग॥
कर्ममु दोषमनि यॆंचेरु कोंदरु, तपोयज्ञ दानादि
कर्ममुल त्यजिंचेरु, ऎंचरे कर्मफल त्यागमे श्रेयस्करमु ॥सरिग॥

521)अमीर्कल्याणि - रूपक ताळम्

अरनिमुसमु निन्नॆडबासि उंडलेनु ओराम ॥अर॥
प्रकृतिकि मायकु बद्धुडनै चरिंचेटि जडुडने
नादगु निश्चयमंदु लोपमॆंत उन्नदो ॥अर॥
प्रकृतिमाय विदूर दोषरहित अद्वितीय चैतन्यश्री
हरिदास वरप्रद परमात्म नीभावने निर्दुष्टमनि ॥अर॥

522)आभोगि - आदि ताळम्

कर्मफलाकांक्ष रहितुले हरिदासुलु सुचरितुलु ॥कर्म॥
शरीरमुचे आचरिंचुटकु नियमित शास्त्रोचित कर्ममुलनु
वीडुटये तामस त्यागमनु अज्ञानमु निषिद्धमनि ऎंचरे ॥कर्म॥
कायकष्टमु कलुगुननि त्यजिंचुकर्मे राजसत्यागमु
निषिद्धमनरे त्यागफलमु पॊंदलेरनि सरिगतॆलियरे ॥कर्म॥

523)हिंदोळ - आदि ताळम्

त्यागिकानिदे विरागिकालेडु श्रीहरिदास नुतुनिकनलेडु ॥त्यागि॥
मानसिक वाचकमुलु कायिकमुले श्रुतिस्मृतिविहित
न्यायमुलु, तदितरमुलन्नि अन्यायमनि अरयरो ॥त्यागि॥
नित्यनैमित्तिक कर्मलन्नियु, संगमुलेनि निष्फलापेक्ष
कर्मलन्नियु सात्त्विकत्यागमु योगसिद्धिनि कलिगिंचुने ॥त्यागि॥

524)आभेरि - आदि ताळम्

ऎन्नगत्यागि आतडे श्रीहरिदासुडु प्रशांतचित्तुडु ॥ऎन्नग॥

ऐव्वडौनर्चुनो नित्यकर्मल, कर्मफल त्यागियै ॥ऐन्नग॥
निस्संकोचमुग फलापेक्षल संगमुलेनि त्यागिये
ज्ञानियनेरु, परमार्थ तत्त्वमुनु तॆलिसिनवाडे ॥ऐन्नग॥

525)सावेरि - चापु ताळम्

परित्राणुडनि फलप्रदातनि प्रणुतिंचु प्रबुधलोकमु ॥परि॥
परममैन श्रीहरिदास नुतुनॆंचि फलत्यागमु चेयरे,
सात्त्विक त्यागमु चेयु वारलॆल्ल पॊंदेरु
जन्मांतान अनन्यमैन अनंतश्री श्रीहरिनि ॥परि॥

526)कल्याणि - त्रिपुट ताळम्

ओहरि नीयनुग्रह प्रसादमेग कर्मसंसिद्धि ॥ओहरि॥
अहंकार मदमुलचे तॆलियडु जड्डु
अहो परमार्थमे निजमैन कर्ममनि ॥ओहरि।
कर्त काममु, पंड्रॆंडु विधमुल वॆलुगुनट्टि
करणमुलु चेष्टलन्नि, अधिष्ठानमु, साधनलय्यु
अन्निटिकन्न हरिदास वरदुडे कारणमु कर्मसंसिद्धिकि ॥ ओहरि ॥

527)बिलहरि - त्रिपुट ताळम्

हरिदासुलै आत्मरूपमु नंतट नरयरो ॥हरि॥
सजातीय विजातीय भेदरहितमु आत्मगद ॥हरि॥
अविद्याकल्पित भोक्तगा परगुचु उपाधुल
स्वरूपाल वॆलुगु प्रज्ञातये परमात्म ॥हरि॥
बाह्यमुलैन श्रोत्रादुलु अंतर्गत बुद्ध्यादुलु
करणालु, फलमुद्देशिंचि चेयु व्यापारमे कर्ममट ॥हरि॥

528)मोहन - आदि ताळम्

मुकुंद माधवुनि मुचिकुंद वरदुनि तॆलियरो ॥मुकुंद॥
अखिल भूतालंदॆल्ल अलरुचु अखंडमु अव्यक्तमु
एकमै तनरु तारक ब्रह्ममॊरुगु सात्त्विक ज्ञानमु ॥मुकुंद॥
विविध रूपाल श्रीहरिदास विभुनि विविध भूतालंदु
तलचु राजसज्ञानमु वीडरो सद्बुद्धिचे परतत्त्वमगु ॥मुकुंद॥
अतत्त्वमगु तुच्छवस्तुवुनु जगद्पूर्णुनिग चूचु अभिनिवेशमु
तथ्यमु कानिदि तर्कमुनकु निलुवनि तामस ज्ञानमु वीडरो ॥मुकुंद॥

529)हंसनादं - आदि ताळम्

पुरुषोत्तम प्राप्तिकै भजिंपरे भवतापहरुनि श्रीहरिनि ॥पुरु॥
रक्तिद्वेषमु आसक्तुलुलेक, कर्मफलमुलंदु आकांक्षलेक
नित्यमु कर्ममुसलुपु विधानमे सात्त्विक कर्ममनेरु ॥पुरु॥
कर्मफलमु कोरुचु अहंकार मदान्वित कष्टनष्टाल
समकूर्चु राजसकर्ममुल वीडरे, वञ्चॆडिमेलु कीडुल
सममुगा मनमुनतलपक, सुळुवुबरुवुल ऎंचलेनट्टि
अमितदुःखद तामसकर्ममुल सरगुनवीडरे हरिदासुलै ॥पुरु॥

530)आनंदभैरवि - आदि ताळम्

समुचितचित्तुले श्रीहरिदासुलु सदा सदानंदुलु ॥समु॥
कर्ममु मोक्षमुल भेदमॊरिगि कार्याकार्यमुल बंधविमुक्ति

सर्वदा रागबंधाल भयाभयाल विचक्षणचेयुने सात्त्विकबुद्धि ॥समु॥
धर्माधर्ममुल कार्याकार्यम्मुल यदार्थरीतुल
अरयलेनि अल्पबुद्धि राजसबुद्धिनि वीडरो हरिभक्तुलै ॥समु॥
तमोगुण प्रेरितुलै अन्नुमिन्नु कानराक अधर्ममे
धर्ममुग, निश्चयिंचु तामसबुद्धि वीडरो भागवतुलै ॥समु॥

531)कोकिलप्रिय - चापु ताळम्

अभयंकरुडु भयभंजनुडु परब्रह्मने अभ्यर्चिंचरो ॥अभ॥
दृश्यसंसार स्थितियंदु विरति, अधर्ममंदु निवृत्ति
सद्धर्म प्रवृत्तुल चरिंचु सात्त्विकबुद्धे शुभदमु ॥अभ॥
बंधमु मोक्षमुल विदिशमुग तॆलियरो जनुलारा
बंधाल वीडि मोक्षगामुलै श्रीहरि दासुलै भजिंपरो ॥अभ॥

532)मणिरंगु - आदि ताळम्

मोक्षरूपमैन पुरुषोत्तमुडे श्रीहरि दासविभुडु ॥मोक्ष॥
धर्माधर्म कार्याचरणमुल स्वरूपमुल सरिगा
अरयक तिकमकपडु राजसबुद्धिनि वीडरो हरिभक्तुलै ॥मोक्ष॥
विकृतमैन दर्पणमंदु चूपुविकृतमौ पगिदि
दुर्विद्यचे विकृतमैन तामसबुद्धिनि वीडरो भागवतुलै ॥मोक्ष॥

533)गांगेयभूषिणि - चापुट ताळम्

श्रीहरिदास वरदुनि कनरो स्थिरधैर्य योग साधनचे ॥श्री।
विषयचिंतल नुंडियिंद्रिय मनमुल निरोधिंचि
दृश्यव्यामोह निवृत्तिये सात्त्विकमनो धैर्यमनेरु ॥श्री॥
फलापेक्षल नासक्तिचे कामादुल रंजिल्लु राजसधैर्यमु
परमात्म दृष्टिलो श्रेष्ठमुकादनि गमनिंचरो हरिदासुलै ॥श्री॥
अतिनिद्र भयदुःख मदमात्सर्य गुणान्वित निकृष्टवस्तु संपादन
यंदुजॊच्चु निरर्थक तामसधैर्यमु सदा वीडरो भागवतुलै ॥श्री॥

534)शुद्धवसंतं - आदि ताळम्

आत्मानुभूतिच्चु नित्यानंदमु वल्लने दुःखांतमगु ॥आत्मा॥
सुखमिच्चु शाश्वतानंद वस्तुवुकलदा दृश्यजगत्तंदु
दुःखांतमु आत्मयंदे दैवमंदे कलदनेरु हरिदासुलु ॥आत्मा॥
अभ्यासमपुडु निष्ठध्यान वैराग्यालु कष्टमैननु
संचित पापालवल्ल, पुण्यवासना बलमुचेपाप निवृत्तियगुने ॥आत्मा॥
अभ्यासमुवल्ल साधनाचतुष्ट संपत्तिचे दुःखराहित्यस्थिति
पॊंदुटकै निरहंकार निर्मोहलचे निरतानंदुनि नुतिंचरे ॥आत्मा॥

535)भैरवि - आदि ताळम्

सुखमॆचटो मोक्षमॆचटो तॆलियरो श्रीहरिदास विभुनिसेविंचि ॥सुख॥
परमात्मयंदु परिपूर्ण विश्वासमुंचि विनिश्चल बुद्धिस्थैर्याल
निरंतर ध्यानसाधन चेयरो सात्त्विकानंद अनुभूतिनॊंद ॥सुख॥
चेपनुपट्टु ऎरलोनि गालमुवोलॆ दृश्यविषय जनितसुखमु
दुःखगर्भितमु राजससुखमुनु वीडरो सर्वदा सद्भक्तुलै ॥सुख॥
अतिनिद्रालसत प्रमत्तलयुत जीवितमे निरर्थकमगु जननमरण
चक्रमे संसारमटने, मायायुत मोहमे तामससुखमट ॥सुख॥

536)बेहाग् - चापु ताळम्

हरिदासुल परमात्मे परमनिधानमु सन्निधानमु ॥हरि॥
त्रैगुण्यबुद्धुलु प्रकृतिजन्यालु, सत्साधनचे रजस्तमस्सुल
दाटिसत्त्वगुण प्राबल्यमुचे गुणातीतस्थितिनि नंदुसद्भक्तुल ॥हरि॥
पुट्टुकतो कलुगदुजाति, जन्मांतर संस्काराल ननुगुणमुग
चातुर्वर्णालु, तदनुगुण कर्मलेर्पडु ननितेलिसिन भागवतुल ॥हरि॥
तमतम स्वानुभव कर्मलंदु श्रद्धासक्तुलु निष्फलासक्तुलु
श्रीपदभक्तुलु सुस्थिरचित्तुलु पोंदेरु ज्ञानयोग्यता संसिद्धिनि ॥हरि॥

537)सारंग - चापु ताळम्

नीवुलेनि तावु लेदुरा निरुपम निरंजन ॥नीवु॥
सर्वात्म अणुवणुवुन व्यापिंचिन सर्वेश ॥नीवु॥
सर्वसाक्षि! सर्वमु समीक्षिंचु सारसाक्ष
सर्वत्र स्वानुभवमु नीसान्निध्यमु गादे ॥नीवु॥
पापकर्म विरहितमुग सदाभक्ति भावांबुधि मुनिगि
पावन चरितुलै वेलुगोंदेरु श्रीहरिदास विबुधवरुलु ॥नीवु॥

538)ललित - आदि ताळम्

दृश्यवस्तु चिंतनवलदु परधर्मचिंतन चालु ॥दृश्य॥
आत्मध्यान साधन कष्टमैननु मेलु कडुमेलु ॥दृश्य॥
त्रिगुणात्मकमु दृश्यमु, अंदंतर्भूत कर्मलवल्ल कलुगु
आधिव्याधि दोषालु, तोलगु पावनमुलैन निष्काम कर्मलवलन ॥दृश्य॥
चित्तशुद्धिद्वारा ज्ञानसिद्धिनि मोक्षसिद्धिनि बडयरो हरिदासुलै
सर्वेश्वरार्पण बुद्धितो निरतमु निष्कामकर्मल चेयरो ॥दृश्य॥

539)केदारगौळ - त्रिपुट ताळम्

जीवुलनुन्न प्रकृतिदोषालु तोलगु तथ्यमुग ॥जीवु॥
स्वभावसिद्ध कार्याल प्रकृतिजन्य कलुषालुन्न
सद्भक्तुलै निष्कामबुद्धितो कर्ममुलचेयरे ॥जीवु॥
साक्षीभूत अव्ययात्मवे! आत्मध्यान साधनलवल्ल
निष्काम कर्माचरणवल्ल श्रीहरिदास हृदयान
निष्कलंक ज्ञानमु सद्ब्रह्म ज्ञानमु समगूडु ॥जीवु॥

540)जगन्मोहिनि - त्रिपुट ताळम्

संगराहित्य ज्ञानमार्गान निष्क्रियात्मक स्थितिपोंदेरु ॥संग॥
अत्यंत विनिर्मल दर्पणमंदे मुखमु कनपडुनटुल
अत्यंत विशुद्धमैन बुद्धियुन्न आत्मदर्शनमु कलुगु ॥संग॥
शब्दादिदृश्य विषयादुल मनसु विरतिगोनि
सात्त्विक धैर्यमुतो चित्तमु संधिंचिन
हरिदासुलकु आत्मानुभवमु संभवमगु ॥संग॥

541)खमाच् - आदि ताळम्

आध्यात्मिक साधनरूप सौधमुनकु पुनादि आहारमे ॥आध्या॥
ध्यानमुन्ननु लेकुन्ननु ध्यानकालान प्रशांतसात्त्विक
स्वांतमुन्न सुनिश्चयमुग संभवमगु आत्मानुभवमु ॥आध्या॥
ध्यानानुकूल सात्त्विक आहारमे श्रेयस्करमनि ऎंचरो

मनोवाक्काय गणमुनु गट्टिगपट्टरो श्रीहरि पददासुलै ॥आध्या॥

542)रीतिगौळ - आदि ताळम्

नीपद भक्तिरक्तितक्क अन्यत्रविरक्ति चेंदेरु श्रीहरिदासुलु ॥नी॥
सत्कार्य साधनाचरणकु उपयोगिंचु बलमुत्तममु,
दुष्कार्य साधनाचरणकु विनियोगिंचु बलमधममु ॥नी॥
अहंकार मदमात्सर्यालु निर्जिंपवलॆननि नॆरनम्मेरु
देहपोषण साधनालु तप्पवु, तदितरमु निरर्थकमनेरु ॥नी॥

543)तोडि - आदि ताळम्

हरिये गति सद्गतनि आराधिंचरो अहर्निशलु ॥हरि॥
हरिदासुलु अनिशमु शांतचित्तुलै शोभिल्लेरु ॥हरि॥
दृश्यजगत्तंता अंतरात्मयंदे अनिशमु अन्वितमनि,
तॆलिसिनिर्मल चित्तुडुपोंदु परब्रह्म साक्षात्कारमु ॥हरि॥
ब्रह्मप्राप्ति पॊंदिन पराशर नारद प्रह्लादादि भागवतुलु
अहो समत्वबुद्धि कलिगिराग रहितुलै संचरिंचेरु सर्वत्र ॥हरि॥

544)अठाण - रूपक ताळम्

भक्तियुन्न ज्ञानमु, ज्ञानमुन्न भक्तिकलुगु ननेरु ॥भक्ति॥
आत्म तत्त्वानुसंधानमे पराभक्ति अंदुरु अनघुलु
पराभक्तिकि ज्ञानमुनकु भेदमे लेदंदुरु आर्युलु ॥भक्ति॥
ज्ञानमु अरसिन हरिपद दासुलकु अपरिमित भक्ति
जनिंचुट तथ्यमनेरु अद्वैत विशिष्टाद्वैत तत्त्ववेत्तलु ॥भक्ति॥

545)मोहन - आदि ताळम्

शाश्वतशांति धाममंदेरु हरिदासुलु ॥शाश्वत॥
सर्वदा सदाश्रयमु हरियेग, अनुग्रहमुन्न ॥शाश्वत॥
भक्तियुत कर्माचरण वलन भगवदनुग्रहमु
कलिगि मोक्षसिद्धि संप्राप्तिंचु सुनिश्चयमुग ॥शाश्वत॥
सर्वेंद्रियालचे कर्मलु सलुपुचुन्ननु, सर्वेश्वरुनि
सर्वदा स्मरिंचुचु हरिकिनर्पणमनरे कर्मफलमु ॥शाश्वत॥

546)आंदोळिक - चापु ताळम्

साक्षिगा प्रवर्तिंचु सर्वेश्वरुनि सेविंपरे ॥साक्षि॥
प्रशांत स्थिरचित्तमुकै श्रीहरिचरण दासुलै ॥साक्षि॥
सर्वजीवुल संसार चक्रमुन त्रिप्पुनु मायचे जगदीशुडु,
संसार कर्तृत्वमु चेपट्टनि चतुरात्मये चक्रधारि ॥साक्षि॥
संसार चक्रमुन गट्टिगचिक्कि भ्रमणमुलो विवशुलै
संचित कर्मफलमु वल्ल परिभ्रमिंचेरु पामरुलु ॥साक्षि॥

547)पाडि - चापु ताळम्

चित्तमु श्रीशुनिपै नुंचेरु हरिदासुलु ॥चित्त॥
सकल कर्मल शरीरमुतो चेयुचुन्ननु
सकलकर्म फलमु कृष्णार्पणमु चेसेरु ॥चित्त॥
निश्चलमुग शरीरमुन्न, कर्मल चेयुचुन्न
चंचलचित्तमॊ मायाजनित मोहाल मुनिगिन ॥चित्त॥

548)उदयरविचंद्रिक - चापु ताळम्

अहरहमु हरिदासुनि ब्रोचुवानि भजिंपरे ॥अह॥
जननमरण संसार शृंखलमुल चिक्कनेल ॥अह॥
सकल दृश्य पदार्थमुलु नश्वरमु, शाश्वतमगु
परम्धामुड्ड परमात्मये परमगम्यमट ॥अन॥

549)सिंहेंद्रमध्यमं - आदि ताळम्

चित्तैकाग्रत संधिंचि आत्म विचारण चेयरो ॥चित्तै॥
मदमात्सर्य द्वेषालुन्न चॆड्डनु चित्तमु ॥चित्तै॥
चित्तोपरतिकै चित्तमुंचरो श्रीहरिदास स्वांतुनंदु
संसार जनित भवबंधाल भंजिंचु भव्युनरयरो ॥चित्तै॥

550)हिंदोळ - त्रिपुट ताळम्

गोविंद गोविंद यनि यजिंचरो ॥गोविंद॥
हरिगोविंद हरिगोविंद यनरो ॥गोविंद॥
जीवुडुसदा जागरूकुडै, सत्प्रयत्न पूर्वकमगु
दैवकृप पॊंदिनने, हरिदास सन्नुतुनि ऎरुगुनु ॥गोविंद॥

551)आरभि - आदि ताळम्

गोविंदनाम संकीर्तनमु चेयरे कर्माधीनुलय्यु ॥गो॥
पूर्वजन्म संस्कारमुचे परगु प्रकृति स्थितमैन
कर्मलचे कट्टुबडिननू, श्रीहरिपद दासुलै कैवल्यमुकै ॥गो॥
पूर्वजन्म संस्कारमुन्न नेमि, इहजन्म
पुरुषप्रयत्नमु चित्तैकाग्रतलु सुस्थिरमैन,
हर्यनुग्रह संस्कारमुलु तोडगुनटने ॥गो॥

552)बलहंस - आदि ताळम्

अन्निविधाल अंतरंगुड्ड अनंतश्रीने आश्रयिंचरे ॥अन्नि॥
अनन्यशांति नॊंदरे अनिशमु अभ्यर्चिंचरे श्रीहरिनि ॥अन्नि॥
मायासक्तिनि निर्वीर्यपरचु भगवद्भक्ते शरण्यमनु
सत्यमु ग्रहिंचेरु श्रीहरिदासुलु सद्भावमुतो॥अन्नि॥

553)खरहरप्रिय - चापु ताळम्

सर्वत्र जीवुलंदुन्न श्रीहरिदास सन्नुत सर्वेश्वर ॥सर्व॥
शरणं तव चरणमनरे माया जनित मोहाल दाट ॥सर्व॥
शाश्वत कैवल्यमुकै दुःखरहित अप्रतिहत प्रशांतिकै
सर्वेश्वरुनि सेविंपरे सर्वदा दृश्यमंता मिथ्ययनरे ॥सर्व॥

554)शंकराभरणं - चापु ताळम्

हरिदास नुतुनरयु क्रमपद्धते सुज्ञानमट ॥हरि।
निगम सारमगु गीता सारमु तॆलुपु गुरुवे सद्गुरुवु
सुज्ञानमु सुतर्कमुतो अरयरे सद्गुरु बोधल ॥हरि॥
ज्ञानमे जीवुलचरम लक्ष्यमटने, कर्मफल त्यागमु भक्तिये
ज्ञानप्राप्ति साधनमनि सदासरिग गणिंचरे, सदानंद धाममु ॥हरि॥

555)तोडि - आदि ताळम्

अनिशमु अभ्यर्चिंचेरु, नीपादमुल भक्तजनमंत ॥अनिशमु॥
अन्निकर्मल ऎल्लॆडल चेयुचु निन्नरयनॆंचि ॥अनिशमु॥
अन्निकर्मलु दैवस्मृति ईश्वरार्पण बुद्धुलतो

अनन्यभक्ति चित्तसंस्कार संयुत गुणाढ्युलु ॥अनिशमु॥
सद्बुद्धि ज्ञानमुलतो सर्वकर्मलनु नीयंदे सन्न्यसिंचि
सदाश्रयुडवनि सेविंचेरु श्रीहरिदासुलु सद्भक्तितत्परुलु ॥अनिशमु॥

556)हंसध्वनि - आदि ताळम्

परिकिंचरो हरिये गति सद्गति यनि परिपरि ॥परि।
परमात्मये परमगति परमप्राप्यमनि ॥परि।
मायातीतुनि मरचिन मनसु चलिंचिन जीवुनिकि
माधवुनि स्मरिंचिनने, चित्तमुलग्नमगु आत्मयंदे ॥परि॥
सर्व संसार दुःखाल हरिंचु हरिदासनुतुडु
सर्वेश्वरुनंदु सर्वदाचित्तमु चॆलुवुग चेर्चरो ॥परि॥

557)गानमूर्ति - चापु ताळम्

चित्तमुनु दृश्यमुन नुंचक देवुनंदे उंचरे ॥चित्तमु॥
माय ऒककोट जीवुनि चुट्टियुन्न अड्डुगोड
दुःखालयमु दुर्गम दुर्गति, अनुरक्ति नलरु ॥चित्तमु॥
मायनुभेदिंचु मायातीतुनि चरणमुले शरणमनरे
आश्रितजनुलै अन्निट नरतिचॆंदि हरिपद दासुलै ॥चित्तमु॥

558)नायकि - जंपॆ ताळम्

अंदरि हृदयाल पर्वियुंडॆ पदिलमुग ॥अं॥
अंदरि जीवुल संसार यंत्रमु त्रिप्पुने
अंदरिनि मभ्यपरचु, आत्मललरु हरिये ॥अं॥
संसार चक्रमुनचिक्कि चक्रभ्रमणमु वल्लने
विवशुलै परिभ्रमिंचु जनुलार अरयरे हरिदासेशुनि ॥अं॥

559)कल्याणि - आदि ताळम्

सर्वोत्तम शांतिये सर्वदा शाश्वत चित्तोपरति ॥सर्वो॥
शरीर वाङ्मनमुलतो श्रीहरिनि परिपरि प्रकीर्तिंचरो ॥सर्वो॥
परमात्मये दृग्स्वरूपमगु परब्रह्ममे
परमानंदुडु श्रीहरिदासुल सर्वाधारुडु ॥सर्वो॥

560)अठाण - चापु ताळम्

नरुडनु ननु सरगुन करुणिंच रारा हरि ॥नरु॥
परापराल विचक्षण चेयगल विज्ञानमु लेनि ॥नरु॥
कूरिमितो कडुगॊप्प गोप्यमैन गीतार्थमु
नरुनिकिल बोधिंचिन गोकुलपति सद्गतिविनीवु ॥नरु॥
नित्यमुसत्यमु सत्यप्रामाणमौ परमतत्त्वमु
सुव्यक्तपरचु गीताचार्य श्रीहरि दासाचार्य ॥नरु॥

561)साम - चापु ताळम्

नीशरणु पॊंदि कर्मल आचरिंतुरु हरिदासुलु ॥नी॥
कर्मफलमुल सन्न्यसिंचि ज्ञाननिष्ठातो ॥नी॥
नित्यनैमित्तिक कर्मलकंटॆ श्रीहरिनाम स्मरणे
श्रेष्ठमनि ऎंचि नीसेवलो रतिगॊन्न नीदासुलु ॥नी॥
देनिनि तॆलिसिन समस्तमु गोचरमगु नदेज्ञानमु परमोत्तममु
देनिनि पॊंदिन समस्तमु प्राप्तमगु नदेब्रह्ममु अक्षरमनेरु ॥नी॥

562)हरिकांभोजि - चापु ताळम्

हरियनु रेंडक्षरमुलु पलिकिन चालुनु ॥हरि॥
त्र्यक्षररूप परब्रह्म नीतत्त्वमु तॆलियगोरि ॥हरि॥
शून्यमु नभमंदे पुट्टॆने पूर्णशब्दमु,
सरिग चूडरो शब्दमध्यमुन ॐकारुनि ॥हरि॥
शब्द रहितमुग परगु परब्रह्ममे
हरिदासुल सरिगजूचु नभवुडु भवहरुडु ॥हरि॥

563)देशि - आदि ताळम्

मूलमुनु अंतटिकी मूलमुनु चूडरो ॥मूल॥
मूल पुरुषुनि कनुगॊन साध्यमे ऎव्यरिकैना
मूर्तीभविंचिन चित्स्वरूपमुनु सन्नुतिंचरो ॥मूल॥
मूलाधारुनि, इट्टिदनि वर्णिंपरानि विश्वनाथुनि विबुधुनि
मूलमरय स्थिरबुद्धितो स्मरिंचरे श्रीहरि दासुलै ॥मूल॥

564)बेगड - रूपक ताळम्

प्रज्ञान प्रकाश नीतो तादात्म्यमु सिद्धिंचु नंदुरे ॥प्रज्ञान॥
रूपभाव साम्याल नॆरिगि चित्तशुद्धितो यत्निंचिन ॥प्रज्ञान॥
ऎन्निमारुलैन प्रस्फुटमुग विनिन विश्रुतमतिनि
ऎन्नैन ऎरिगिन हरिकथलु, नीनाम स्मरण मात्रान ॥प्रज्ञान॥
ऎंडमावुलु अन्नि, हरिदासुल अंडनीवे
मॆंडैन अखंड नायक हरि अच्युत अप्रमेयवरद ॥प्रज्ञान॥

565)सारमति - आदि ताळम्

श्रीहरि दासार्चितुनि अरयरो उल्लमुंचि ॥ श्रीहरि॥
ब्रह्ममॊदुट उन्ननॆरुग साध्यमे सामान्युलकु
ब्रह्ममुनु चित्तसाक्षिग ग्रहिंचिनकलुगु चित्तोपरति ॥ श्रीहरि॥
प्रक्कनुन्न परब्रह्मनु परिपरि परिकिंचरो
प्रमोदमगु प्रभविष्णुनि विष्णुनि चूडरो अन्निट ॥श्रीहरि॥

566)धन्यासि - चापु ताळम्

तलपुनने तनुवुलु धन्यमगु ॥तलपु॥
तत्त्वविदुनि तत्त्वमुनु तॆलियरो ॥तलपु॥
तथ्यमु सत्यमु नित्यमैतोचु
तोयजाक्षि किरवैन तारकब्रह्म ॥तलपु।
लोकेशुनि केशवुनि महेशुनि तॊलुतने
तॆलिसि ध्यानिंचरे श्रीहरि पददासुलै ॥तलपु॥

567)सरसांगि - आदि ताळम्

अष्टाक्षरमुल अमरियुन्न अतींद्रियुडे अतिश्रेष्ठुडु ॥अष्टा॥
स्थूल सूक्ष्म व्यक्ताव्यक्त स्वरूपुडु स्थिरुडु
स्थविरुडु विष्णुडाहरि विश्वंभरुडु विशिष्टुडु ॥अष्टा॥
ऎरुगरु आत्मरूपान्नि ऎन्निविद्यलु नेर्चिननु
ऎंचलेरु निरंजनुडु श्रीहरिदास प्रहृष्टुनि ॥अष्टा॥

568)वराळि - रूपक ताळम्

मनसु निलुपु हरिदासुडु उत्तमुडु ॥मनसु॥

प्रभवुडे भर्तकर्त सर्वत्रयनि ऎंचुचु
हरि अच्युतुडे दैवमनि सर्वदा चिंतिंचुचु ॥मनसु॥
माया मोहालनु दाटिसदा तत्त्वज्ञुनि
तलचुचु तन्मयुडै ध्येयमुने ध्यानिंचुचु ॥मनसु॥

569)देशि - चापु ताळम्

इंद्रियालु तलपुलु कलिगिन तावुनकेगु ॥इं॥
इंद्रियमुल नतकरिंचि नभवुनिपै मनस्सुंचिन
इंद्रियमुलन्नि इंपुग लीनमगु ईश्वरुनंदु ॥इं॥
सरिगकाममु नणचिन जगदेकजेट्टि चित्तरुवु
हत्तुने चक्कचक्कग हरिदासुनि चेतस्सुनंदु ॥इं॥

570)कांभोजि - आदि ताळम्

स्थूलसूक्ष्म कारणमगु शरीरमुल मूडिंटिनि परिकिंचरे ॥स्थूल॥
सुज्ञानुडु गुरुडु ज्योतिस्स्वरूपुडु आहरियगपडुनु ॥स्थूल॥
गुरुवुलेक गुरुतैन विद्यदॊरकदु धरणियंदु,
गुरुविद्यलेक गुरुतमुडु श्रीहरिदास
पॆन्निधि नाथुनि सन्निधि ऎन्नग दॊरकुना ॥स्थूल॥

571)नारायणगौळ - चापु ताळम्

निर्गुण गम्यमरसि अज्ञानमु अणिचेरु हरिदासुलु ॥निर्गुण॥
निर्मलमु निष्कळंकमु चिद्रूप्यमगु चिदानंदुनि
चिंतये चिवरकुमिगुलु मृत्युवु आसन्नमैन समयान ॥निर्गुण॥
हृदयस्थानान सहस्रार कमलमुग सुप्रकाशमैन
सद्गुरुडु वरदुडे आत्मारामुडु अतींद्रियुडनि ऎंचरो ॥निर्गुण॥

572)गौळिपंतु - चापु ताळम्

चॆप्पुटकु चूचुटकु साध्यमुकानि परतत्त्वमट ॥चॆप्पु॥
मनसु पट्टिपट्टि अंतर्दृष्टितो अंतरंगमु चूडरे
जगमॆल्लनिंडि जगमेलु चक्कनय्यनु चक्कगकनरे ॥चॆप्पु॥
चदुवुलंदु लेडु तर्क शास्त्रमुलंदु लेडु, ऎन्नंग
वेर्वेरु देवतललेडु, हरिदास स्वांतमंदु नुंडॆने ॥चॆप्पु॥

573)सौराष्ट्र - आदि ताळम्

मायनुमापि तत्त्वमॆरुगु दारिसरिग अरयरो ॥मायनु॥
चल्लनैन चंदुरुनि वॆन्नॆलबागुगा परिकिंपरो
वॆन्नॆललोनि वॆलुगुचूड परमात्म अगपडु ॥मायनु॥
ज्योतियंदु ज्योतिस्स्वरूपुनि सर्वेशुनि चूचिन
भ्रमलुविरुगु, यॆरुगरो हरिदासात्मुनि तत्त्वमु ॥मायनु॥

574)कानड - चापु ताळम्

ईचूपेल ईरूपेल ऎंचग ॥ईचूपु॥
चिद्रूपुनि चिदानंदुनि चूडनि ॥ईचूपु॥
चूपुरूपुलु नुंडॆननि चिंदुलु त्रॊक्कनेल
चूपुकिंपगु स्फुरदॄपि सर्वचक्षुवुनि वीक्षिंपनि ॥ईचूपु॥
चित्तमु चिक्कबट्टि सदानंदुनि चूडनि
श्रीहरिदास विनतुनि विशिदमुग वीक्षिंपनि ॥ईचूपु॥

575)मोहन - चापु ताळम्
वॆदिकिनने वेदांत मर्ममु ब्रह्ममु तॆलियुनु ॥वॆदिकिन॥
लक्क करिगि चुट्टुयुन्न चूरुलॆल्ल चूर्णपरचु पगिदि
नादबिंदु कळात्मकुनि तॆलिसिन मायमगु मोहमु ॥वॆदिकिन॥
जातियंदुरु कुलमंदुरु जनुलु जगमंत विकृतबुद्धितो
जातुलन्निटा चॆलुवॊंदु जगदीशुडु श्रीहरि दासेशुडु ॥वॆदिकिन॥
576)रंजनि - आदि ताळम्
सकलमुनकु संधानकर्त कमलेशुडनि कनुगॊनरो ॥सकल॥
लेदु तन चेतिलो लेदु चच्चुट पुट्टुटलु
रानेरादु वॆनुवॆंट कूडपॆट्टिन पॆन्निधि ॥सकल॥
जातेमि कुलमेमि यनिनॆंचनेल बुद्धिजाड्ज्य जनितोन्मादुलु,
श्रीतत्त्व प्रकाशुडु श्रीहरिदासुनि नंतरंगुडे अंदरिलोनुंडॆ ॥सकल॥
577)शहन - आदि ताळम्
दंति रक्षकुडे दशरथात्मजुडनि दंडमु पॆट्टरो ॥दंति॥
मर्ममु मरवकुरो जीवमर्ममु मरवकुरो
सर्वत्रनॆंच तत्त्वज्ञुनितेजस्सु ओजस्सुलेग सर्वदा ॥दंति॥
जवसत्त्यमुल चॆलगिनपुडे स्ववशमैन चिन्मात्रनु
आवरिंचिन हरिदासविभुनि भाविंचि भजिंपरो ॥दंति॥
578)चक्रवाकमु - चापु ताळम्
नीवेनिलचि युंटिवे निब्बरमुग निखिलमंदु ॥नीवे॥
नीवुविना निलुवलेवु निखिलांडालु ओनिखिलेश
नीवुविना ऍंडमावुलु ऎन्नगनु ऎल्लॆडल ॥नीवे॥
नीवुविना नीविभूति योगमरयु वारॆवरु
नीवेगदा निन्नॆरुगुदुवु ओ हरिदासपति ॥नीवे॥
579)बृंदावनसारंग - चापु ताळम्
नीवुपलुक पुनीतुडगु ई श्रीहरिदासुडु ॥नी॥
नीवे नाहृदिनि वॆलयुचु पलुकवो ओराम
नीवे पलुकवेनि जीवन्मृतुडनु जीवमुन्ना ॥नी॥
नीवु प्रेरेपिंप पलुविधाल पलुकुदुने
नीवेनट निर्मलनिश्चल नित्यनियम प्रकाशुडवु ॥नी॥
580)यदुकुलकांभोजि - आदि ताळम्
अन्नियॆडल अन्निटनुंडुने हरियनुवाडे ॥अन्नि॥
अंदुनिंदु यॆंदुजूचिन नुंडुने निखिलेशुंडु
अंतटा व्यापिंचियुन्न वाडॆयॆरुगु नुन्नवन्नि ॥अन्नि॥
अलिमियन्नि युन्ननेमि येमिलेकुन्न नेमि,
अल्पुडुकानि अधिकुडुकानि अंदरिकी आलंबनमु
अलकलुलेनि अलिवेलपति हरिदास पॆन्निधेग ॥अन्नि॥
581)सावेरि - आदि ताळम्
वनजाक्षुडु वरदुडु वासुदेवुडे वत्सलुडॆन्न ॥वन॥
नवद्वाराल अलरु इंटिंट उंडेटि नेत नेय
नैकात्म ब्रह्ममे, उन्नदि विन्नदि कन्नदि ॥वन॥

विंतलॆन्नॆन्नो तोचुने चित्तमंदु चिंतलेलनो
चिद्रूपुडु श्रीहरिदासुल आधारुडु सनाथुडुंड ॥वन॥

582)बिलहरि - आदि ताळम्

नीलनीरद श्यामहरे नित्यशुभनाम नारायण अनरे ॥नील॥
तिट्टेवारु पॊगडेवारु पलुरीतुल परगेरु परिकिंप
दूषणभूषण तिरस्कारालकु अतीतमुग अलररे अवनिलो ॥नील॥
कीडॊकडिकि मेलॊकडिकीयडु ई जगान ईशुडु जगदीशुडु
कर्मलनुपट्टि जीवितालु, श्रीहरिकि निजदासुलै कॊलुवगरारे ॥नील॥

583)केदारगौळ - चापु ताळम्

चिंतिंपरो निधिरव्ययुनि ऎंतटिकी तरगनि श्रीनिधिनि ॥चिं॥
ऎंततिन्ना ऎंतयुन्ना चालदुचालदु यनेरुनरुलु
चॆडुचित्तमुन्न चेटुकालमु यॆनलेनि चेटुलगुने
जगदेकजॆट्टि श्रीहरिदास वरदुनि बिरान भजिंपरो ॥चिं॥

584)नादनामक्रिय - आदि ताळम्

पराकुसेय पाडिया पावनराम परंधाम ॥परा॥
ऎरुगलेरु ऎव्वारैना, कालचक्रमु कालगति ऎन्नग
कीलकमेमो तॆलुपरा स्थिरमुगा निन्नेसदा सेविंतुरा ॥परा॥
कानिपनुलु कानेकावु कागलपनुलु काकमानवु
कर्तवुभोक्तवु नीवेगदा श्रीहरिदासनुत श्रुतकीर्ति ॥परा॥

585)सिंधुधन्यासि - चापु ताळम्

मुक्कंटिकि इंपुगा कनिपिंचु चक्कनय्या ॥मुक्कंटि॥
मायिंटिकि रावय्या ममु कडतेर्चवय्या ॥मुक्कंटि॥
रम्मंटिने वेमार्लु नीवंटि दैवमु लेडंटिनि
इम्मंटिने वेवेमारु इंपैन नीक्रीगंटि चूपु ॥मुक्कंटि॥
बंटुरीति कॊलुविय्यमंटि इंपुगनेनु श्रीहरि दासुडनंटि
इंटिकुल दैवमंटिने इहपरमुल रायडवु नीवंटिने ॥मुक्कंटि॥

586)नाट - आदि ताळम्

नादशरीर परात्पर भवहर यनरे हरिदासुलै ॥नाद॥
सादरमुग सद्गुणनिधि श्रीरामुनि जगदभिरामुनि ॥नाद॥
साकेतपतिकि दंडालु दंडालु कोटिकोटि दंडालनुचु
काकुथ्सकुलजुनि कंदर्पुनि कन्नवानि कमनीयशोभ कांचरे
अकलंकमौ सांद्रानंद रसान्वितमौ श्रीरामगुणमे कीर्तिंचरे ॥नाद॥

587)शुद्धसावेरि - चापु ताळम्

मुक्कंटि कंटिकि कनरानि वेलुपुवंट नीवॆंतटि वाडवो ॥मु॥
यशोदयिंटि पंटवै करुणतो कुरुवंशमु नंटिन
कॊम्मकुरुसति काटुककंटि नीरॊककंट कंटिवेमो ॥मु॥
जननमुलेनि नीकवतारम एमिटोभुवि विंतविंतग,
प्रियमारग हरिदासुल ऒककंट काचुटकेमॊ ॥मु॥

588)खरहरप्रिय - आदि ताळम्

मनसु निलुपु मर्ममैन मारजनकुनि स्मरिंचरे ॥मन॥
स रि ग म प द नि सप्तस्वराल गुर्तिंचि रागताळमुल

सप्तमूर्तुल भजिंपरे भवतारक योगमु मरिकनरे ॥मन॥
परमानंद प्रणवनादान्नि स्वरराग रंजितमुगा
हरिदास वरदुनि गुणगानमु चेयरे चेतमुललर ॥मन॥

589)अठाण - आदि ताळम्

भाव रसान्वित सप्तस्वर विन्यासमुल विराजिल्लु ॥भाव॥
प्रणवनादमे अनाहत नादमेग ब्रह्मानंदमु ॥भाव॥
सनातन ब्रह्ममुने उपनिषत्तुल प्रतिपादितमैन
ॐकार नादमुनु सरिगगानमु चेयरे रागांगाल ॥भाव॥
निर्विकारि निरंजनुनि पदनीरजमुल शरणुजॊच्चि
श्राव्यमुग कीर्तिंचरे सदानंदुनिकि श्रीहरिकि दासुलै,
अव्ययनादमे सुमधुरमु सुमनोज्ञमु श्रुत्यर्णवमु ॥भाव॥

590)देशि - चापु ताळम्

जीवब्रह्मैक रूपमैन मुक्तिकिसाधन सत्संगीतमु ॥जीय॥
दिव्यसाधननि शिवुडु पलिकॆने परिपरि परमवेदमु ॥जीव॥
सप्तस्वरनाद रंजितरागमु पॊंगिपॊरलिन मधुर गानमु
अतिमधुरमु अल्लदे अलरु रागलहरि हरिगानमे ॥जीव॥
मनोज्ञमगु मृदंग ताळमुलचे रंजिल्लु वेणुनाद
गानमदे हरिदासुलु प्रणवनाद संशोभित सुनादमु ॥जीव॥

591)यमुनाकल्याणि - चापु ताळम्

रम्मनिपिलुव वलॆना नीवाडनु गदराराम ॥र॥
नॆम्मनॆम्मदिगा वैकुंठ धाममुवदलि विच्चेयरा
कॊम्मसीतम्म तोडचक्कचक्कन ननुसाक रावेमिरा ॥र॥
वम्मुगानीकु नायासलु, नामनसु नीपैने तगिलॆरा
पॊम्मनेवु गदरा भवबंधमुल, ओहरिदास निजात्म ॥र॥

592)तोडि - आदि ताळम्

ननुदयजूचे तीरुनीके तॆलियुनुरा ओराम ॥ननु॥
पुरुषुललोकॆल्ल परमपुरुष श्रीहरिदासपोषक
नवद्वारालचे परगु पुरमुन मायामोह
बंधमुलचे सॊक्कु विमूढुडनु नीवेरादिक्कु ॥ननु॥

593)नारायणि - चापु ताळम्

निरतमु नीपदभजन सेयु नीचरण दासुडने ॥निरत॥
हेत्रिकालज्ञ त्रिगुणातीत त्रिविक्रम त्राहिमां त्राहि ॥निरत॥
कर्मफलमु ऎटुलुन्नदो, योनुलंदु कर्मगतिपुट्टु
नराधमुडनु हरिदासुडनु गदरा करुणिंचरा ॥निरत॥

594)मोहन - आदि ताळम्

कनदैवमु वेरॊंडुलेडु करुणिंचरा श्रीहरिदासाश्रय ॥कन॥
कनिपॆंचिन तल्लितंड्रिवि नीवनिनीतो मॊरलिडुदुरा ॥कन॥
क्षणमॊक युगमुग तोचुने निन्नॆरुगलेनि अल्पुडने
घनमंदुरे नीगुणगणालु, ओकरुणाकर करिवरद ॥कन॥

595)नादनामक्रिय - आदि ताळम्

रक्षकुलॆवरुरा श्रीहरि ईजगतिनि नीवुविना ॥रक्ष॥

दॊरिकॆनीवंटि दैवमु इंतिशबरिकि, ऎंतटि भाग्यमो
सुलभमायॆ वानरुनिकि नीदंडयुंड, मरिनाकु ॥रक्ष॥
अब्बॊरा नीपदमुलंटु वैभवमु अबलनहल्यकु, अदेमो
नादुर्भाग्यमु, नीमनुगड दॊरकदायॆ, हरिदासुडने ॥रक्ष॥

596)साम - चापु ताळम्

नीदासुडनु गदरा रम्यगुणधाम दशरथराम ॥नी॥
नाकिहमु परमुलॊसगु वरदुडवु नीवंटिने ॥नी॥
निनुतॆलुपु ज्ञानमे तॆलियदगिनदि अनेरंदरु,
ओचिदानंद चिद्रूपमौ प्रज्ञानिधि श्रीहरि ॥नी॥
नीप्रापुगॊनि नीयंदे मनोभावमु सुस्थिरपरचि
ध्यानयोगमु अभ्यसिंचु हरिदासुडनु गदरा ॥नी॥

597)देवगांधारि - चापु ताळम्

मोमु चूपिंचरा मोहनांग ॥मोमु॥
मोमुलॆन्नो ऎन्नग, वन्नॆलवॆलुगु ॥मोमु॥
मोमुलु नालुगुन्न उन्नतुनिकन्न कन्नय्या
मोमु चिन्नबोयिन नीदासुनिकि हरिदासुनिकि ॥मोमु॥

598)द्विजावंति - चापु ताळम्

हरिये दैवमु हरिनाम संकीर्तनमे संगीतमु ॥हरि॥
हरिदासुल आह्लादकर अनाहतध्वनि विनरे यिंपुगा ॥हरि॥
ज्ञानमंद्रु नादात्मक सदानंद रसधुनिनि
सद्भक्तियुत संगीतज्ञानमे परब्रह्ममैन ॥हरि॥
तुंबुरु नारदादुलु सततमु गानमुचेयु सप्तस्वरान्वित
संशोभित प्रणवनादमु सुनादमु सच्चिदानंद रसांबुधे ॥हरि॥

599)नीलांबरि - चापु ताळम्

पवळिंच परुवमायॆ राजीवनयन ॥पव॥
तिरिगितिरिगि धरनॆंदु जूचिन अधर्ममे,
आलनचेसि पालनचेसि विसिगितिवे, हेसुकुमार ॥पव॥
प्रॊद्दुजारॆरा मदनगोपाल वेळायॆरा
ऎदुरुजूचुनु मदनमुनकु मुद्दुलसति ॥पव॥
निद्रामुद्रांकित वदनमु कांचु वेळायॆरा
हरिदासुडु नीपादमुल चक्कनॊत्तु समयमिदे ॥पव॥

600)सुरटि - आदि ताळम्

सुरटिलो सुंदरांगुनकु शुभ मंगळमनरे ॥सुरटि॥
सुर नर वानर वंदितुनकु नित्य मंगळमनरे ॥सुरटि॥
पुरंदरुनकु पुरुषोत्तमुनकु जयमु जयमनरे
पुरुसत्तमुनकु पूतात्मुनकु नित्य नीराजनमीयरे ॥सुरटि॥
जगद्पतिकि श्रीपतिकि पतिकि हारतीयरे हरिदासुलै
जगमेले चंचलपतिकि चॆलुवुग कर्पूर हारतीयरे ॥सुरटि॥

श्लोकं॥ अहिंसा प्रथमं पुष्पं। पुष्पमिंद्रिय निग्रः।
सर्वभूतदया पुष्पं। क्षमा पुष्पं विशेषतः।

शान्ति पुष्पं तपः पुष्पं। ध्यान पुष्पं तथैवचः।
सत्यं अष्टमिदं पुष्पं। विष्णोर् प्रीतिकरं भवेत्॥

श्लोकं॥ पापोऽहम् पापकर्माऽहम् पापात्मा पापसंभवः
त्राहिमां कृपयादेव शरणागतवत्सल
अन्यथा शरणंनास्ति त्वमेव शरणंमम
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्षो जनार्दन॥

श्लोकं॥ अपचारनिमान् सर्वान् क्षमस्व पुरुषोत्तम
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुते॥

श्लोकं॥ यदक्षर पदभ्रष्ठम् मात्राहीनं तु यद्भवेत्
तत्सर्वं क्षम्यताम् देव नारायण नमोस्तुते॥
अपराध सहस्राणि क्रियान्तेऽहर्निशं मया
तानि सर्वाणि मे देव क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

अच्युताय नमः
अनन्ताय नमः
गोविंदाय नमः

सर्वेजनाः सुखिनोभवंतु। सर्वलोकाः सुखिनोभवंतु॥

ॐतत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु
हरिः ॐ